

महारानी

बायजाबाई सेंधिया.

मनोरञ्जक हिन्दी-ग्रन्थप्रसारक मण्डली

लश्कर, ग्वालियर।

मूल्य आठ आना.

मनोरञ्जक हिन्दी-ग्रन्थमाला-पुस्तक पांचवीं।

महारानी
बायजाबाई सेंधिया।

लेखक,
ठाकुर सूर्यकुमार वर्मा।

(प्रथम संस्करण)

ग्वालियर,

मनोरञ्जक हिन्दी-ग्रन्थप्रसारक मण्डली।

अक्तूबर सन् १९१०.

मैनेजर रामदास वैश्यके प्रबन्धसे श्रीराघवेन्द्र प्रेस, प्रयागमें मुद्रित

समर्पण

इस

पुस्तक को

महारानी बायजाबाई साहब के प्रपौत्र

श्रीमन्त आलीजाह बहादुर

"महाराज माधोराव सेंधिया"

जी. सी. एस. आई.

ग्वालियर नरेश

की सेवा में

प्रेम पूर्वक

समर्पण

करता

हूं.

—ग्रन्थकर्ता।

" * * * a woman of sense."—*Doulat Rao Scindia.*

" * * The most remarkable woman of the day."
—*Dr. Hope.*

"She was a woman of high spirit and respectable conduct."
—*Mill.*

" * * * * A woman of great activity and enterprise. * A woman of very great Indian celebrity."—*Mrs. Duberly.*

" * * * * a clever and spirited woman."
—*Major Sutherland.*

" * This lady was not less famous, in her way, than the Begum Sumroo, the Nagpore Ranee, the late Ranee of Jhansi, the Ranee Chanda of Lahore, and the Begum of Bhopal, and she has on more than one occasion been known to lead, in person, a charge of Mahratta horse against the enemies of her courtsey." —*The Bombay Gazette.*

अनुक्रमणिका।

१	सेन्धिया घराने का परिचय।	१–१३
२	बायजाबाई का कुल वृत्तान्त।	१४–२३
३	दौलतराव सेन्धिया का राज्यकाल।	२४–४०
४	दौलतराव सेन्धिया की मृत्यु।	४१–६०
५	बायजाबाई का राज्यकाल।	६१–८४
६	खटपट।	८५–१०९
७	बनवास।	११०–१२२
८	फुटकर बातें।	१२३–१४५
९	परीक्षा।	१४६–१५५
१०	अन्त।	१५६–१६२

भूमिका

A perfect woman, nobly plann'd

To warn, to comfort, and command;

And yet a spirit, still and bright

With something of an angel light.

भारत के इतिहास में सद्गुणी, विदुषी, चतुर, साहसी, शूर, स्वाभिमानी, तेजस्वी, उदार, धार्मिक, राजकाज धुरन्धर स्त्रियों की कमी नहीं है। परन्तु उनके चरित के अभावके कारण, उनके गुण प्रायः लुप्त से होरहे हैं। भारतवर्ष में स्त्रियों का आदर नहीं होता, वे केवल घर का कामकाज करने और सन्तान पैदा करने की एक मात्र कल हैं; विदेशी लोगों की अधिकांश यही राय है। परन्तु जिस देशके धर्मशास्त्रों में स्त्रियों के लिये ये वाक्य लिखे गये हैं कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" वहां की स्त्रियों के सम्बन्ध में उपरोक्त प्रकार की मिथ्या बातें कहकर, इस देश के सम्बन्ध में अपनी अनभिज्ञता प्रगट करके लोगोंमें अपनी हँसी आप कराना है। इस देशमें

स्त्रियां सदा सन्मान की दृष्टि से देखी जाती रही हैं। परन्तु उनके उज्ज्वल चरित के अभाव में, उनकी गुण महिमा हमारे नेत्रों के सन्मुख न होने से, उनके सद्गुण, बुद्धिमत्ता और उनकी कर्तव्य शक्ति का कुछ भी प्रकाश हमारे ऊपर नहीं पड़ता। और इसीकारण लोगोंके "न स्त्री स्वातंत्र्य मर्हति" ऐसे अनुदार विचार मन में घर कर गये हैं और स्त्रियों को दासी की पदवी ही दे दी गई है। इन्हीं कारणों से हमारे हज़ार प्रयत्न करने पर भी शिक्षा आदि उन्नति के हज़ार उपाय आयोजना करने पर भी हमारी उन्नति दशा अभी तक सुधरती हुई नहीं दिखाई पड़ती। एक पहिये का रथ कहीं चल सकता है? एक पहिया चाहे स्वर्ण का ही क्यों न लगा दिया जाय, रथ को कैसा ही क्यों न सजाया जाय परन्तु वह कभी चल नहीं सकता। इसी कारण हमारे समाज और राष्ट्र की बहुत कुछ हानि हुई है और हो रही है।

पौराणिक काल से अगर हमारे देश की प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्त्रियों के चरितो की खोज की जाय तो उनके चरित किसी राष्ट्र के तत्कालीन स्त्रियों के चरितों की अपेक्षा कम मनोरम अथवा कम सुरस नहीं निकलेंगे। ग्रीस देश की सफ़ो, अस्पाशिया, लेस, ह्वीन, टिमाक्सेना आदि स्त्रियोंके चरित को ले लीजिए अथवा रोमन राष्ट्र की लुशिया, वर्जिनिया, कार्निलिया, पोर्शिया, हेलीना, इन स्त्रियों

के चरित लीजिये अथवा इटेलियन राष्ट्र की कोरिना का चरित देखिये परन्तु हमारे देशकी अहिल्या, सीता, तारा, मन्दोदरी, कुन्ती अथवा द्रौपदी आदि किसी के चरित से उनकी तुलना नहीं हो सकती। हमारे यहांकी इन स्त्रियों के सम्बन्ध में कहा गया हैः—

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥

जिस देश की स्त्रियों के लिये प्रातः काल स्मरण करने का विधान है उनकी तुलना भला अन्य देश की स्त्रियां कैसे कर सकती हैं ? हमारे देश में इतनी ही स्त्रियां प्रातः स्मरणीय नहीं हैं अगर उनके नाम गिनाये जायँ तो एक अलग दफ़्तर चाहिए। ऋषिपत्नी मैत्रेयी, गार्गी, शकुन्तला, गांधारी, उत्तरा, यशोदा, रुक्मिणी, दमयन्ती आदि पुराण-प्रसिद्ध स्त्रियों के चरित पर अगर दृष्टि डाली जावे तो यह बात स्पष्ट हो जाती है। भारतवर्षके पौराणिक कालमें भी कितनी ही बड़ी बड़ी तेजस्वी स्त्रियां उत्पन्न होगई हैं।

अब आप पौराणिक काल से ऐतिहासिक काल में उतर आइये वहां भी आप को प्रेमदेवी, कालिदास की स्त्री विद्योत्तमा, भास्कराचार्य की कन्या लीलावती, वराह मिहिर की पत्नी, और महाराज लक्ष्मण सेन की रानी आदि शास्त्र पारंगत विदुषी स्त्रियां दृष्टि गोचर पड़ेंगी। फिर आप वीर काल (Age of chivalry) में प्रवेश कीजिये।

वहां पर आप के नेत्र राजपूत स्त्रियों के अलौकिक गुण और पराक्रम को देखकर चौंधिया जांयगे। उनके अपार शौर्य्य, निश्चय पातिव्रत, अप्रतिम तेजस्विता लोकोत्तर स्वामिभक्ति, असाधारण स्वार्थ त्याग और अपूर्व रणोत्साह देखकर अन्तःकरण आनन्द और आश्चर्य से परिपूरित हो जायगा।

जिन लोगों ने राणी संयोगिता, राजकन्या कूर्मदेवी, राणी पद्मिनी, गुजरात की रानी कमलादेवी, देवलदेवी, साध्वी मीराबाई, ग्वालियर की मृगनयना, ताराबाई, रूपमती, गढ़मण्डल की रानी दुर्गावती, जोधपुर की राजकन्या जोधाबाई के सम्बध में कुछ भी पढ़ा अथवा सुना है वे इस बात को भली भांति जान सकते हैं कि इन विदुषी स्त्रियों के चरित इतने वीररस परिप्लुत और रमणीय हैं कि उनको सुनकर अन्तःकरण वीररस में लय हो जाता है।

राजपूत स्त्रियोंके पश्चात मराठा रमणियोंकी बारी आती है उनके भी चरित वैसे ही मनोहर और मनन करने योग्य हैं। परन्तु इन स्त्रियोंके जीवनचरित, लिखे हुए न होनेके कारण, उनके अलौकिक गुणोंका प्रभाव हमारे ऊपर कुछ नहीं पड़ता और उलटा यह उलाहना विदेशियों द्वारा सुनना पड़ता है कि भारतवर्ष की स्त्रियां निकम्मी, निष्प्रयोजन किसी काम की नहीं हैं।

इन सब बातों का विचार करके हमने इस देशकी वीर नारियों के चरित लिख कर प्रकाशित करने का संकल्प किया है। जहांसे, जिस भाषासे, हमें इस प्रकारके चरित उपलब्ध होते जायगे, हम उनका अनुवाद अथवा उनका आधार लेकर जिस प्रकार बन पड़ेगा उनकी सम्पूर्ण जीवनी ब्योरे वार प्रकाशित करनेका उद्योग करेंगे।

दो वर्ष हुए जब हमने महाराणी लक्ष्मीबाई का बृहत् जीवन चरित लिखकर प्रकाशित किया था और उसे क़रीब क़रीब हिन्दी भाषा के सारे विद्वान, मर्मज्ञ सम्पादक, लेखकों और पाठकों ने पसन्द करके हमारे उत्साह को बढ़ाया और इसी प्रकार अन्य चरित लिखकर प्रकाशित करनेका परामर्श दिया था। उसीके अनुसार आज यह महाराणी "बायजाबाईका जीवन चरित" लिखकर आप लोगोंके भेंट किया जाता है। यह चरित मराठी भाषा के सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक श्रीयुत दत्तात्रय बलवन्त पारसनीस की मराठी पुस्तक के आधार से लिखा गया है। इस पुस्तक में जिन ऐतिहासिक घटनाओंका वर्णन आया है उनके उत्तरदाता पारसनीस महोदय ही हैं। हमने स्वतः ऐतिहासिक घटनाओं की खोज अथवा अनुसन्धान दो कारणों से नहीं किया। एक तो मुझे अव-काश नहीं मिला और न मेरे पास उपयुक्त साधन मौजूद थे कि मैं इस कार्य को सरलता पूर्वक कर सकता। दूसरे

एक विद्वान के खोज और अनुसंधान के विषय में व्यर्थ शङ्का करके पिसे को पीसने के समान निरर्थक कार्य जान, करना उचित नहीं समझा। अतएव ऐतिहासिक घटना सम्बन्धी सब बातें ज्यों की त्यों हमने रहने दी हैं। अगर कहीं ऐतिहासिक घटनाओं के सम्बन्ध में भ्रम अथवा भूल से कोई बात ठीक न हो तो उसकी सूचना मिलने पर हम उसे दूसरे संस्करण में ठीक कर देंगे।

इस पुस्तक में जो कुछ भूल चूक रह गई हो उसे प्रेमी पाठकगण सुधार लें।

नया बाज़ार,
लश्कर-ग्वालियर.
१-७-१०.

सूर्यकुमार वर्मा।

महारानी बायजाबाई सेंधिया

का

जीवन चरित

पहला अध्याय ।

सेंधिया घराने का परिचय

सेंधियाका घराना महाराष्ट्र देशके इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है। यह घराना बहुत पुराना है। पेशवाओंके ज़मानेमें इस घराने के लोगों ने राजकाज में बड़ी सहायता पहुंचाई। उस समय इस घराने के बहुत से लोग फ़ौज में ऊंचे ऊंचे दर्जों पर काम करते थे। मुसलमानों के राजत्वकाल में इन्होंने बड़ेबड़े पराक्रम के काम किए। परन्तु मुसलमानी ज़माने का इतिहास बिलकुल अन्धकार में होने से मराठा सरदारों के इतिहास का ठीक

ठीक पता नहीं चलता। परन्तु तौ भी महाराष्ट्र राज्य संस्थापक छत्रपति महाराजा शिवाजीराव के समय से सेंधिया घराने तकके पुरुषोंका नाम निर्देश पुराने काग़ज़ पत्रों से ज्योंका त्यों पाया जाता है। उसपर से इस घराने का अस्तित्व महाराष्ट्र राज्यकालके आरम्भसे स्पष्टरूप से प्रगट होता है। शिवाजीके समयमें नेमाजी सेंधिया नामी एक प्रवल और पराक्रमी सूबेदार थे। महाराष्ट्र राज्य स्थापन करने के काम में इन्होंने बहुत बड़ी सहायता शिवाजीको पहुंचाई थी। नेमाजी सेंधियाका नाम महाराजा साहू के राजत्वकाल में, राजकाज के कामों में, सब से पहले आया, पाया जाता है। उस पर से यह बात स्पष्ट रूपसे प्रगट होती है कि इस महाराष्ट्र वीरने अपने वल और पराक्रम द्वारा उस समय समरभूमि में अपना नाम स्थिर रक्खा। महाराजा राजाराम के राजत्व कालमें जो स्वदेशभक्त लोग थे और जिन्होंने बड़े परिश्रम और साहस द्वारा, स्वराज्य की रक्षा की उस परम वन्दनीय वीरमण्डल में, नरसोजी और जिवाजी पाटील सेंधिया तोरगलकर पागनीस इन दोनोंका नाम भी अन्तर्भूत है। इन सब बातों परसे जाना जाता है कि सेंधिया का घराना पहले ही से प्रख्यात है। सेंधिया घराने के बड़प्पन की बाबत एक और ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। औरङ्गजेब ने अपने दरबार के सरदार कण्हेरखेड़कर

सेंधिया की कन्या का विवाह महाराजा शाहूजी से सन् १७०६ ईस्वी में करा दिया। यह बात इतिहास में प्रसिद्ध है। इस लड़की का नाम सावित्रीबाई था। इस का देहान्त सन् १७१० ईस्वी में हुआ। महाराज शाहूजी सरीखे सर्वश्रेष्ठ महाराष्ट्र कुल में जिसका सम्बन्ध हुआ उस घराने के बड़प्पन में सन्देह क्या है? कप्तान क्ल्यूनस साहब का भी यही मत है।

महारानी बायज़ाबाई का जिस सेंधिया घराने से सम्बन्ध है उसके मूल पुरुष का नाम राणोजी सेंधिया था। मध्यभारत का इतिहास लिखनेवाले सरजान माल-कम साहब ने इस वंश का हाल इस प्रकार दिया है:— "सेंधिया घराने के मूल पुरुष शूद्र जाति के थे। इनका नाम राणोजी था। ये कण्हेरखेड़ (गांव) के ज़मीनदार थे। पहले पहल बालाजी विश्वनाथ पेंशवा के यहां यह नौकर थे। उस समय ये उनकी ख़िद्मतगारी का काम करते थे। पश्चात् बाजीराव बल्लाल पेशवा के राजत्वकाल में ये सिलेदार हुए। इस सम्बन्ध में एक यह आख्यायिका प्रसिद्ध है, कि बाजीराव साहब एकदिन महाराज शाहूजी से मिलने गए; महलों के दरवाज़ेपर पहुंचकर उन्होंने अपने चर्मपादुका नियमानुसार बाहरही उतार दिए। राणोजी उनके साथ थे; वे उन चर्मपादुकाओं को लेकर दर्वाजे के बाहर एक किनारे जा बैठे। थोड़ी देर बाद राणोजी को

निद्रा आगई, वे निद्रा वशीभूत होकर वहीं सोगए। परन्तु पादुकाओं को पकड़े हुए अपने दोनों हाथ छाती पर रख लिए। बाजीराव, महाराज से मिलकर बाहर आए; उन्होंने अपने नौकर को सोते हुए और अपनी पादुकाओं को उनकी छाती पर मज़बूत दोनों हाथों से पकड़े हुए देखा। अपने ख़िद्मतगार की स्वामिभक्ति को देखकर, उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे बड़े प्रसन्न हुए। इसी प्रसन्नता के कारण उन्होंने राणोजी को अपनी पायगा में सिलेदारी की जगह दी। इस प्रकार राणोजी का भाग्योदय हुआ। राणोजी ने इन चर्मपादुकों को अपने भाग्योदय का कारण समझ बड़े जतन से उन्हें सुरक्षित रक्खा। और इन पर इनकी बड़ी पूज्य बुद्धि थी।"

मालकम साहबके इस अनुसन्धानसे यह ज़रूर पाया जाता है कि राणोजी सेंधिया एक छोटे दर्जे के नौकर थे परन्तु वे नीच जाति के थे यह बात इससे ज़ाहिर नहीं होती।

राणोजी का जीवन वृत्तान्त बहुत मनोरञ्जक और वीररस से परिपूर्ण है परन्तु इस छोटी सी पुस्तकमें इसके उल्लेख को जगह नहीं है। परन्तु तौभी, उनका थोड़ा सा वृत्तान्त दिए बिना जी नहीं मानता।

अठारहवीं शताब्दीके आरम्भ में, महाराष्ट्र राज्य के अभ्युदयार्थ जो पराक्रमी और वीरपुरुष उत्पन्न हुए; उनमें

राणोजी सेन्धिया और मल्हारराव हुलकर ये दोनों मुख्य थे। सन् १७२५ ईस्वी से इन उभय वीरों की बहादुरी का आरम्भ हुआ। छत्रपति महाराज शाहू और पेशवा की ओर से इनकी रण कुशलता और धैर्य को देखकर जागीरें और इनाम दिए गए।

राणोजी सेन्धिया को ५ मोहर्रम सात अशरीन के दिन सरदारी और पालकी का सरंजाम मिला। उस दिन से उनकी बराबर तरक्की ही होती गई। उन्होंने बाजीराव पेशवाके साथ लड़ाई में अलौकिक पराक्रम के काम करके, महाराष्ट्र राज्य को, बहुत ही बड़ी मदद दी। उन्हीं की कृपा और बल से मराठों का झण्डा दिल्लीमें जाकर खड़ा हुआ। बहुतसे प्रान्त और चौथ प्राप्त करके उन्होंने मराठों को दी। सन् १७३६ ईस्वी में दिल्ली की ओर चढ़ाई करके राणोजी ने ८००० मुसलमान सवारों से मुक़ाबला किया। इस युद्ध में राणोजी को जो विजय प्राप्त हुई वह बहुतही प्रशंसनीय थी। उन्होंने निज़ाम के ऊपर चढ़ाई के समय और बसई की लड़ाईमें अपने बाहुबल और अपनी बुद्धि का पूर्ण परिचय दिया। इस वीरपुरुषकी मृत्यु शुजालपुर में सन् १७४७ ईस्वी में हुई। मरते समय इनके पास कुल ६५ लाख का प्रान्त था। जो पुरुष आरम्भमें एक ख़िदमदगीरी का काम करता था वह अपने पराक्रम, साहस, बुद्धि और बलसे इतना ऐश्वर्यशाली हुआ, यह बात ध्यानमें रखने

योग्य है। राणोजी का स्मारक मालवा प्रान्तके शुजालपूर में है। वहां राणोगञ्ज नामक बाज़ार और एक मुहल्ला है। शुजालपूर गांवको पेशवा ने १ रजब समान अर्बैन अर्थात् २१ जून सन् १७४७ ईस्वी सोमवार के दिन राणोजी के स्मारक निमित्त इनाम स्वरूप दे दिया। इस गांव की आमदनी अबतक स्मारक के उत्सव के काम में ख़र्च होती है। राणोजी के मैनाबाई नामक पत्नी से जयाजी उर्फ़ जयप्पाजी, दत्ताजी और जोत्याजी तीन पुत्र और चिमाबाई से महादजी और तुकोजी, इस प्रकार पांच पुत्र थे। ये सब पराक्रम और युद्ध विद्या में, एक से एक बढ़ चढ़ कर, कुशल और पण्डित निकले। इन सबोंने देशकी बड़ी सेवा की। मातृभूमि की सेवा में चार ने अपने प्राणयुद्ध क्षेत्रमें ही गंवाये। मातृभूमि की सेवाके ही कारण उनकी कीर्ति और उनका नाम भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अङ्कित, सदैव अजर अमर बना रहेगा।

राणोजी के मरने बाद उनकी जागीर और सरदारी जयाजी को मिली। जयाजी महाराष्ट्र इतिहास में जयप्पा के नामसे प्रसिद्ध हैं। इन्होंने भी अपने पिता के तुल्य ही बड़े बड़े महत्व और वीरता के काम किए। मराठों के राज्य की उत्तर की ओर इन्हीं के समय में वृद्धि हुई। जयाजी के पराक्रम की कथा बहुत ही आल्हाद-दायक है। उनमें मराठों के शौर्य, मराठों के अभि-

मान, मराठों की कर्तृत्व शक्ति और मराठों के ओज इत्यादि प्रशंसनीय गुण ओत प्रोत थे। उन्होंने जिस समय रुहेलों को परास्त करके अवध के नवाब सफ़दर-जंग को वज़ारत दिलवा दी उस समय बालाजी बाजी राव पेशवा ने उनका जो मान किया था वह बहुत ही अपूर्व था। "शाबास, तुम्हारी हिम्मत, दिलेरी और बहादुरी की; और शाबास तुम्हारे लोगों को! हमारी दक्षिण की फ़ौज ने गङ्गा यमुना पार जाकर, रुहेलों से युद्ध करके विजय पाई। यह काम कुछ छोटा मोटा नहीं था। तुम कर्मनिष्ठ सेवक, इस दौलत के स्तम्भ हो!! जो मन पर धरते हो उसे पूरा कर दिखाते हो!!!" अपने मालिक के मुख से इस प्रकार अपनी मान मर्यादा के शब्द सुन कर किस को आनन्द नहीं प्राप्त होगा!

जयप्पाजी सेंधिया नागोर के क़िले में जोधपूर के राजा विजय सिंह द्वारा मारे गये। मरने के समय उनके बन्धु दत्ताजी सेंधिया मौजूद थे। अपने प्रिय बन्धु की मृत्यु देख कर वे शोक करने लगे। उस समय उस वीर पुरुष ने हिम्मत बांध कर कहा कि, भाई, वैरी युद्ध में आया और तुम राड़ों की तरह यहां बैठे रोते हो! यह क्षात्र धर्म के उचित नहीं है। अभी मुझे कुछ नहीं होता, तुम शत्रु को जाकर विजय करो!, सच है, वीर पुरुष

मरते समय पर भी अपना साहस नहीं छोड़ते, मरना वे अपना कर्तव्य समझते हैं।

जयाजी सेंधिया के मरने बाद उनके भाई दत्ताजी सेंधिया और पुत्र जनकोजी राव ने भी अनेक युद्धों में अपना पराक्रम दिखलाया। दुर्रानियों और मराठों के बीच में जो घनघोर संग्राम हुआ था उसमें उन वीर पुरुषों ने भारतीय योद्धाओं के तुल्यही अपना रणकौशल्य प्रगट किया। पानीपत की लड़ाई के समय दत्ताजी सेंधिया और जनकोजी सेंधिया की शौर्य कथा अपूर्व है। उस समय प्रत्यक्ष वीररस ने मानो उनके अंग में प्रवेश किया हो ऐसा अनुमान होता था। जिस समय रुहेला सरदार कुतुबशाह ने उनसे पूछा कि "पटेल, हमारे साथ तुम और लड़ोगे"? उन्हों ने बड़ी बहादुरी के साथ उत्तर दिया कि 'ज़रूर' "बचेंगे तो और भी लड़ेंगे"।

कुतुबशाहने दत्ताजी सेंधिया का शिरोच्छेद कर उनका शिर अहमदशाह अब्दालीके पास भेंट के तौर भेज दिया! इस शिर को वापस मिलने के लिए मराठों ने अवध के नव्वाब शुजाउद्दौला को मध्यस्थ बनाया! तीन लाख रुपया देकर मराठों ने उस शिर को वापस पाया। जब उस वीर के शिर के दाम तीन लाख रुपये लिए गए तब उस वीर का क्या दाम होगा? पाठक इस हिसाब को आप स्वयं सोचलें।

दत्ताजी सेंधियाके मरनेके बाद जनकोजी ने अन्त में पराक्रम से युद्ध किया। उनकी उपमा अभिमन्यु धृष्टद्युम्न से दी जासकती है। युद्ध में चारों ओर से ये घेर लिए गए थे। गोला गोली और भालाओं की मार उनपर ख़ूब पड़ी थी। अन्त में ये घायल होकर पृथ्वी पर गिर गए। शत्रुओं ने इनके घायल शरीर को विजय किया और रणक्षेत्र से उठाले गए। उनको ज़िन्दा छोड़ देने के लिए शुजाउद्दौला के वकील पण्डित काशी राज ने बहुत कुछ उद्योग किया परन्तु सब निष्फल हुआ। अन्त में पाषाण हृदयी और कपटी नजीबखां रुहेला ने बड़ी निर्दयता के साथ उनका वध किया। इस प्रकार राणोजी सेंधिया के वीर पुत्रों का एकके बाद एकका पतन हुआ। जयाजी और दत्ताजी के अलावा जोतिबा उनका एक तीसरा पुत्र था वह भी बुन्देलखंड, ओरछा प्रान्त, बरआसागर गांव में स्वामीके कार्य हित मारे गए! इसी कारण इस गांव को पेशवा ने जोतिबाके वीरता के बदले में ३ दिसंबर सन् १७५२ ईस्वी में सेंधिया को इनाम दिया। राणोंजी के पुत्र तुकोजी और महादजी भी पानीपत की लड़ाई में हाज़िर थे। तुकोजी भी इसी लड़ाई में मारे गए। केवल महादजी सेंधिया बाक़ी रह गए। वे बड़ी हिकमत के साथ वहां से जी बचा कर चले आए। उन्हों ने अपनी तलवार के ज़ोर से पानीपत की लड़ाई में जो

मराठों की इज़्ज़त और आबरू ख़ाकमें मिलगई थी उसे फिर पैदा किया और अपने पराक्रम द्वारा मराठों की कीर्तिध्वजा सारे भारत वर्ष में फ़हरा दी !

पानीपत की लड़ाई के बाद मराठों की जितनी कीर्ति अठारहवीं शताब्दीके उत्तरार्ध में फैली उस कीर्ति का यश महादजी सेंधिया को हो दिया जा सकता है। उससमय पूना दरबार का काम काज जिस प्रकार नाना फड़नवीस ने उत्तमता से चलाया उसी प्रकार महादजी सेंधिया ने अपनी युक्ति युक्त से उत्तर भारत को विजय किया। उनकी फ़ौज का शिक्षण शिवाजी के ढङ्ग का था। पाश्चिमात्य राष्ट्रों की सुधारी हुई सैन्य रचना और युद्ध पद्धति का महत्व उनके ध्यान में आगया था। इस कारण उन्हों ने युद्ध कला विशारद डी बायन, बेरन इत्यादि फ्रेञ्च लोगों को अपनी सेना में नौकर रक्खा और उनके द्वारा अपनी सेना का सुधार बहुत ही उत्तम रीति से किया। इन्हीं कारणों से उनकी फ़ौज और तोपख़ाना पाश्चिमात्य ढङ्ग का होने से, पर-राष्ट्रीय लोगोंको उनका सामना करने में कठिनता दिखाई पड़ती थी। उन्होंने इसी कारण रुहेलों को परास्त किया, दिल्ली के बादशाह शाहआलम को अपनी मुट्ठीमें कर लिया। हैदर और टीपू को भी अपने आधीनकर लिया। अङ्गरेज़ों को भी अपनी बहादुरी के कर्तव्य दिखलाए; अन्तमें सब के ऊपर अपना

अधिकार जमा कर, दिल्ली के भारतेश्वर से अपने स्वामी के लिए बकील मुतलक़ व अमीरुल्लउमरा, की बहुमान पद्वी प्राप्त की।

माधोराव पेशवा ने जयाजीके पुत्र जनकोजी सेन्धिया के पास सरदारी और सरञ्जाम जो कुछ था वह सब ५ पांच दिसम्बर सन् १७६३ ईस्वी को महादजी सेन्धिया को दिया। उस समय से ३ मार्च सन् १७९४ तक महादजी के भाग्यचक्र की वृद्धि ही होती गई। * उनके प्रकाश से

---

* महादजी सेंधिया ने उत्तर भारत पर चढ़ाई करके जो धन सम्पत्ति प्राप्त की उसका लेखा नीचे लिखे प्रमाणसे पाया जाता है जिस परसे महादजी का वैभव केवल पराक्रम के सहारे से कितना बढ़ा इसकी कल्पना सहज ही में हो सकती है।

स्थान जहां से धन प्राप्त हुआ।	नगद मय जवाहरात वगैरहः।	तोपें.
राना गोहद	३२०००००	०
मिर्जा शर्फी ख़ां	३३०००००	०
अफरा सिया ख़ा	४००००००	५१०
शुजाउद्दौला ख़ां और वज़ीर अफरासिया ख़ां की ससुराल से और जहांगीर ख़ां के भाई से।	४०००००	०
राजा नारायणदास अफरा सियाब ख़ां के दीवान	३०००००	०
मुहम्मद बेदार ख़ां हमदानी	६०००००	८०
रणजीत सिंह जाट	१२०००००	५
राजा जय नगर (दोबेर में)	८५०००००	०

मराठों की शौर्यमहिमा अखण्ड प्रज्वलित हुई। यदि इनके काल का पूरा पूरा वृत्तान्त लिखा जावे तो एक स्वतन्त्र पुस्तक होजाय। अतएव यहांपर उसका दिग्दर्शन मात्र करानाही ज़रूरी समझा गया *। पूरा वृतान्त इस पुस्तकमें देना अप्रसंगिक होता इसी कारण इनका विस्तार पूर्वक हाल हम यहां पर नहीं लिख सके।

पटियाला	६०००००	०
दतिया, भदावर वगैरह	८०००००	०
रामरतन मोदी शाही लालजी मल	३०००००	०
राव राजे प्रताप सिंह माचोडी वाडे	४०००००	
गुलाम क़ादर ख़ां	६००००००	
पाटन की लड़ाई इस्माईल ख़ां वगैरह	०	८०
	२६६०००००	८१५

पादशाह, नजफ़ ख़ां, गोहदवाले वगैरह का मुल्क बतफ़सील ज़ैल:-

मुल्क पादशाही, नजफ़ ख़ां और ग़ुलाम क़ादिर वगैरह	२२५०००००
गोहद के राना का राज्य	४२०००००
मुल्कभदावरकछवाहा और भाडेर	१८०००००
	२८५०००००

कुल दो करोड़ पचासी लाख का।

* महादजी सेंधिया का जीवन चरित भी तय्यार है जो माला के किसी आगामी अङ्क में प्रकाशित किया जायगा। —लेखक

महादाजी सेन्धिया के औरस पुत्र कोई नहीं था। बालाबाई नामकी एक कन्या थी। महादजी के सगे भाई तुकोजी पानीपत की लड़ाई में मारे गये उनके तीन पुत्र—केदारजी, रवलोजी और आनन्दराव—थे। इन तीनों लड़कों में से आनन्दराव के ऊपर महादजी की अधिक प्रीति थी। नानाफड़नवीस और तुकोजीराव होलकर की सलाह से महादजी की पत्नी ने आनन्दराव को गोद लिया। पेशवा ने भी इस लड़के का दत्तक होना स्वीकार करके उसे सरदारी के वस्त्र दिए और दौलतराव उनका नाम रक्खा गया। ये महादजी सेन्धिया की सारी सम्पति और जागीरके मालिक बने। माधवराव पेशवा ने १० मई सन् १७९४ ईस्वी को वकील मुतलक़ अमीरुल्लउमरा के नायब कहकर उनके नाम का सिक्का जारी करवा दिया। इस सिक्के में यह अक्षर अङ्कित थेः—

"ज्योतिस्वरूप चरणीं तत्पर।
महादजी सुत दौलतरावशिंदे निरन्तर" ॥

ये ही महाराज दौलतराव हमारी चरित्रनायका बायजाबाई के पति थे। जिस समय महाराज दौलतराव गोद आए उस समय उनकी उमर केवल १४ वर्ष की थी। उनके राजत्वकाल और विवाह का वृत्तान्त अगले अध्यायों में हम वर्णन करेंगे।

दूसरा अध्याय।

बायजाबाई का कुल वृत्तान्त

बायजाबाई के पिताका नाम सखाराम घाटगे सर्जेराव था। महाराष्ट्र के इतिहास में इनका नाम बहुत मशहूर है। सखाराम घाटगे यह कोल्हापूर प्रान्त में कागल गांव के देशमुख (तहसीलदार) थे। यह गांव घाटगे घराने को बीजापूरके पहले बादशाह यूसफ़ आदलशाहके ज़माने में इनाम मिला था। जब औरङ्गज़ेब ने बीजापूर विजय किया तब इस गांव को उन्होंने घाटगे घराने को वंश परम्परा के लिए इनाम दे दिया। इस पर घाटगे का घराना पुराना प्रतीत होता है। इस घराने के मूल पुरुष का नाम कामराज घाटगे था; ब्राह्मणीराज्य (बहमनीराज्य) के समय में इनका भाग्य चमका। सखाराम घाटगे को बीजापूर के बादशाह से सर्जेराव का ख़िताब मिला तबसे यह इतिहास में सर्जेरावके नामसे प्रसिद्ध हैं। * परन्तु ग्राहम

* Representative men of the Bombay Presidency नामक पुस्तक में कागल के शाखा के जागीरदार श्रीमन्त पिराजीराव बापू साहब के घराने का थोड़ा सा हाल दिया है उस पर से प्रगट होता है कि

साहब ने घाटगे के मूल पुरुष और कागल के देशमुख का नाम अपनी Statistical Report on the Principality of Kolhapur में भानजी घाटगे लिखा है और शिवाजी के पिता शहाजी भोसले ने सर्जेराव का ख़िताब दिया था ऐसा उल्लेख किया है। * भानजी घाटगे बड़े पराक्रमी और शूरवीर थे। जब यह शहाजी भोसले के यहां नौकर थे तब निज़ाम के सरदार दुधाजी सर्जेराव से युद्ध करके उन्हें परास्त किया। और उसका घोड़ा व सर्जा (घोड़े

'सर्जेराव' को यह पद बिजापूर के बादशाह की ओर से मिला था। उसमें स्पष्ट लिखा है कि:--

"The tittle of Sargerao was conferred by an Emperor of Bijapur on one of the chief's ancestors who in fair fight defeated and slew Dudha Sarjerao, a Rajput leader sent by Aurangzeb to overthrow the Bijapur dynasty. Bhanji, the Chief of Kagal's ancestor as before stated, slew this adversary and wrested the Sarja, head-ornament or crest, from his turbun and carried it to the king, who was so pleased with the exploit that he presented the crest to Bhanji, and gave him the title of Sarjerao." —page 52.

* "Bhanjee Ghatgay, Deshmuk of Kagal who was in the service of Shahajee, the father of Shivaje, the founder of the Marattha Empire, having encountered the foreces of the Nizam Shahee Government, defeated Daodha Sarjerao Rajput, and seized his horse and Surja (the crest of the horse), Sahajee accordingly conferred on him the tittle of Surjerao."

—page 302.

की कलङ्गी) विजय करके अपने साथ लाए । इस पर शहाजी इन पर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें 'सर्जेराव' का खिताब दिया । इस प्रकार दोनों बातें इतिहासमें मिलती हैं और घाटगे घराने की प्राचीनता का प्रमाण देती हैं। 'सर्जेराव' की पदवी घाटगे घराने को चाहे बीजापूर के बादशाहसे मिलीहो चाहे शाहजीसे, परन्तु यह स्पष्टहै कि इस घराने के लोग पराक्रमी और वीर थे, और अपनी वीरता द्वारा ही बढ़े और यश के भागी हुए ।

भानजी घाटगे की बाबत इससे ज़्यादा और हाल मालूम नहीं होता । भानजी के वंशज पिराजीराव घाटगे से इस घराने की सिलसिलेवार वंशावली मिलती है। पिराजी राव को बिजापूर के बादशाह इब्राहीम आदिल शाह दूसरे (सन् १५८०-१६२६), के वज़ीर सुलतान मुहम्मद द्वारा कागल परगना और ६७॥ गांव इनाम में मिले; इसका उल्लेख इतिहास में पाया जाता है । इस परसे यह भी जाना जाता है कि बीजापूर के बादशाही ज़माने में पिराजीराव बहुतही मशहूर थे । इनके पश्चात् आबाजी राव, विठोजीराव, महादजी राव, विठोजीराव और पिराजीराव दूसरे ने कागलकी जागीरका उपभोग किया । दूसरे पिराजीरावके राणोजीराव, विठोजीराव, आबाजी राव,तुलजाजीराव और यशवन्तराव पांच पुत्र थे । तुलजाजी रावके जयसिंहराव और रामचन्द्रराव दो पुत्र थे । जयसिंह

राव के सखाराम पुत्र हुए। पेशवाई के ज़माने में सखाराम के भाग्य का उदय हुआ। सन् १७९२ ईस्वी में इस घराने के यशवन्त राव को कोल्हापूर के छत्रपति शिवाजी की कन्या आऊबाई व्याही थीं। उस समय कागल की जागीर का सुख इस घराने के लोग नहीं भोगते थे। यह जागीर उस समय कोल्हापूर महाराज छत्रपतिकी ओर थी। विवाह होने पश्चात् यशवन्तरावको केवल छः गांव बतौर दहेज़के दिए गए। परन्तु इतने गांवों की आमदनी से घाटगे घराने का ख़र्च अच्छी तरह नहीं चलता था, अतएव आपस में लड़ाई झगड़ा हुआ करता था; इस कारण यशवन्त राव के चचेरे भाई सखाराम कागल से निकल कर, परशुरामभाऊ पटवर्धन के यहां जाकर, नौकर होगए।

परशुरामभाऊ उस समय दक्षिण में पेशवा के यहां एक बड़े सरदार समझे जाते थे। उनके पास सेना भी उस समय बहुत थी। इस कारण सखाराम को उनकी फ़ौज में भर्ती होकर अपनी बहादुरी दिखाने का अच्छा मौक़ा हाथ लगा। परशुरामभाऊ स्वयं युद्ध कला में पण्डित और पराक्रमी थे। अतएव 'गुणी गुणं वेत्ति' के न्यायानुसासार सखाराम की बहादुरी की इन्होंने परिक्षा ली। गुणी परीक्षक ने परिक्षा देने वाले अपने शिष्य को साहस पराक्रम, शूरवीरता इत्यादि सब बातों में

निपुण पाया । अतएव वे ऐसे गुणी पुरुष के ऊपर कृपा दृष्टि रखने लगे । परशुरामभाऊ सरीखे प्रवल सरदार का सहारा मिलने से सखाराम घाटगे के भाग्योदय का अनायासही योग प्राप्त हुआ । सखाराम, परशुरामभाऊ के साथ पूना में आने जाने लगे । पूना में आने जाने से सखाराम का मेल पूना दरबार के राजनीति विशारद नाना फडनवीस से होगया । नाना फडनवीस ने भी इनके उत्तम गुणों को परखकर परशुरामभाऊ पटवर्धन से इन्हें मांग लिया । तब से ये पेशवा की ख़ास फ़ौज में सिलेदार नियत हुए । इस प्रकार सखाराम का पूना दरबार में प्रवेश हुआ ।

सखाराम के पूना में आने के थोड़े ही दिनोंके बाद सवाई माधवराव पेशवा का देहान्त हुआ । पेशवा के मरने पर पेशवा की गद्दीकी बाबत पूनामें झगड़ा बखेड़ा आरम्भ होगया । इस समय महादजी सेन्धिया के दत्तक पुत्र दौलतराव सेन्धिया, नाना फडनवीस और परशुराम-भाऊ पटवर्धन ने आपस में सलाह करके बाजीराव को गद्दी पर बैठाला । इस काम में सखाराम घाटगे भी सूत्राधार थे ।

सवाई माधवराव पेशवा के मरने पश्चात, पेशवा की गद्दीपर किसको बिठाया जाय इस बाबत आपस में वाद विवाद चलने लगा । दौलतराव सेन्धिया के दीवान

बालोबा तातिया और परशुरामभाऊ पटवर्धन इन दोनों का और नाना फड़नवीस का आपसमें वैमनस्य होगया। नाना फड़नवीस उस समय पूना से बाहर चले गए; यह देख कर सखाराम, दौलतराव सेन्धिया के यहां जाकर नौकर होगए। सखाराम ने अपनी प्रियवादिता और मोहनशक्ति से दौलतराव सेन्धिया को बहुत ही प्रसन्न किया। दौलतराव के दरबारमें इनकी चाह होने लगी। इनकी सहायता से दौलतराव सेन्धिया को पूना दरबारमें अपना दबाव जमाने में बहुत विलम्ब नहीं लगा। सखाराम इतिहास में सर्जेराव घाटगे के नाम से प्रसिद्ध हैं। यही सर्जेराव घाटगे हमारी चरित्र नायका बायजाबाई के पिता थे।

अब हम यहां पर बायजाबाईके मातुल घरानेका कुछ थोड़ा सा हाल लिखकर इस अध्यायको समाप्त करते हैं। जिस प्रकार बायजाबाई के पिता प्राचीन घराने के पराक्रमी असली मराठे थे उसी प्रकार उनकी माता भी प्राचीन इतिहास प्रसिद्ध घरानेकी थीं। जिस समय औरङ्गज़ेब ने दक्षिण में आकर महाराष्ट्र देश को अपने अधिकार में किया; शिवाजी द्वारा स्थापित मराठी राज्य और महाराष्ट्र धर्मके विध्वंस का समय निकट आया; उस समय, कर्नाटक प्रान्तवासी, हनुमन्तराव पाटनकरने, महाराज राजाराम को बहुत कुछ सहायता पहुंचाई। उन्होंने अपने अलौकिक

शौर्य, धैर्य, देशभक्ति स्वार्थत्यागका पूर्णरूपसे परिचय दिया। हनुमन्तराव पाटनकर ने यवनों को विजय करके, महाराष्ट्र राज्य और महाराष्ट्र धर्म की रक्षा की। इस स्वामि सेवा के कारण राजाराम ने उन्हें 'शमशेर बहादुर' का ख़िताब और पाटण के ४० गांव इनाममें बतौर जागीर के दिए। इनके पूर्वज पाटनके देशमुख थे, अतएव ये पाटनकर नाम से प्रसिद्ध हुए। यह स्थान सितारा से नैऋर्त्य की ओर १५ कोस पर कोयना नदी के किनारे बसा है। यहां पर इनके वंशजों का पुराना महल अब तक विद्यमान है। इनके वंशके लोग दक्षिण में अबतक मौजूद हैं और वहां पर ये ऊंचे सरदारों में गिने जाते हैं।

हनुमन्तराव के दारकोजीराव, हिरोजी और धारराव तीन पुत्र थे। ये सब अपने पिता के तुल्य ही पराक्रमी और वीर थे। इन में से पहले दारकोजीराव के सात पुत्र हुए। उन में से दो–रामराव, लक्षमणराव–का वंश नष्ट होगया। बाकी पांच–बाबूराव, बालोजीराव, राघोजीराव, बाजीराव और जयराम जी राव–पुत्र भी अपने पिता के अनुरूप ही निकले। इन पांच में से चौथे–बाजीराव यह बायजाबाई के नाना थे। ये बड़े बहादुर थे। जब पेशवाओं ने अपने पुराने वीर मराठा सरदारों से परामर्श लेना छोड़ दिया तब अनेक तेजस्वी, वीर मराठा सरदार लोग निराश होकर इधर उधर जहां सींग समाये, अपनी बहादुरी और

सिपाहगीरी दिखलाने को बाहर निकल गए। इस कारण मराठों की एकता और तेजस्वता का लोप होगया। जिसका परिणाम महाराष्ट्र राज्य का नाश हुआ। ऐसे वीर पुरुषों में से बाजीराव पाटनकर भी एक थे। पूना दरबार में जब उनकी वीरता और बहादुरी की कोई पूंछ न रही तब वे मुधोजी भोसले नागपूरकर के यहां जाकर नौकर होगए। वहां उन्हों ने कई एक बहादुरी के काम किए और भोसला दरबार में अपना ख़ूब दबाव जमाया। बाजीराव ने इनकी बहादुरी को देख कर बावलें नाम का एक गांव इनाम में दिया जो इनके भाई जयराम राव के पास सन् १८१८ ईस्वी तक बना रहा। परन्तु पश्चात जब पेशवाई नष्ट हुई तब ब्रिटिश सरकार महाराष्ट्र देश के सार्वभौम प्रभु बने। उस समय मि. एलफ़िस्टन साहब ने बाजीराव पाटनकर की योग्यता और ख़ानदान की ओर ध्यान देकर तीन हज़ार रुपया साल की पेंनशन करदी। परन्तु बाजीराव पाटनकर शीघ्र ही मर गए। उनके मरने बाद उनकी पत्नी को १२०० की पेंनशन दी गई जो सितरा के महाराज प्रतापसिंह के समय तक मिलती रही।

बाजीराव पाटनकर के सुन्दराबाई नाम की एक कन्या थी। यह कन्या कागल के जागीरदार सखाराम घाटगे को ब्याही गई। यह स्त्री बड़ी सती साध्वी

और सुशीला थी। इनके पेटसे जयसिंहराव और बायजाबाई इस प्रकार दो सन्तानें हुईं। जयसिंहराव का जन्म सन् १७७९ ईस्वी में हुआ * और बायजाबाई का सन् १७८४ ईस्वी में। बायजाबाईके लड़कपन का हाल विस्तार पूर्वक कहीं से नहीं मिलता इसी कारण दिया नहीं जासका। परन्तु तौ भी इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि वे बालकपन में बड़ी ख़ूब सूरत थीं। इनकी मां सुन्दराबाई इनका बहुत लाड़ प्यार करती थीं। उस समय सखाराम घाटगे को एक स्थान में स्थिरता पूर्वक रहने का सौभाग्य नहीं प्राप्त था। उस समय की देशस्थिति के चित्र का ध्यान करने से, बायजाबाई ने अपने लड़कपनके समय में, महलोंमें बैठकर राजलक्ष्मी का सुख भोग किया होगा; यह नहीं कहा जा सकता। बार बार राजकीय संकट पड़ने से, सदैव प्रवास में रहने के कारण घोड़े पर चढ़ने और फ़ौजी नौकरी करने के कारण, सदैव युद्ध के लिये तय्यार रहने से, जो संकट बालकों के माता पिता पर पड़ते हैं उनका संस्कार बालकों के हृदय पर होना एक सहज बात है। उन्हीं संस्कारोंका प्रभाव बायजाबाई और

---

* कोल्हापूर के एक्टिङ्ग पोलिटिकल सुपरिंटेण्टडेण्ट मेजर जी. मालकम साहब ने ३ जोलाई सन् १८५४ ई० को कोल्हापूर प्रान्त के जागिरदारों की जो रिपोर्ट सरकार में भेजी थी, उसमें जयसिंहराव की उमर ७५ वर्ष की दी हुई है। उस पर से यह सन् ठीक मालूम होता है।

उनके भाई के ऊपर पड़ा यह कहने में कुछ हानि नहीं है। घोड़े पर बैठने और पिता के साथ युद्ध क्रियाओं को देखनेकेकारण बायजाबाई ने साहस और वीरता का सबक़ भी बहुत कुछ बालकपन में ही सीख लिया था। रूप गुण सम्पन्न होने से उस समय इनकी चर्चा मराठा सरदारों में ख़ूब होने लगी। उस समय महाराज दौलतराव सेन्धिया भी तरुण थे। वे बायजाबाई की सुन्दरता और गुणों को सुन कर उनपर मोहित होगए और बायजाबाई के साथ विवाह करने की उत्सुकता प्रगट की। बायजाबाई को कई एक इतिहासकारों ने दक्षिण की सौन्दर्यलतिका (Beauty of the Deccon) कह कर सम्बोधन किया है। यह बहुत ही ठीक है।

तीसरा अध्याय ।

दौलतराव सेन्धिया का राज्यकाल

सवाई माधवराव पेशवाके मरने पर सन् १७९५ ईस्वीमें पेशवा की गद्दीके लिए पूनामें झगड़ा बखेड़ा उत्पन्न हुआ । नाना फड़नवीस, तुकोजीराव होलकर, बालोबा तातिया, परशुरामभाऊ पटवर्धन वग़ैरह लोगों ने राघोबा दादा के पुत्र बाजीरावको गद्दी न देनेका निश्चय करके सितारा के छत्रपति महाराज की ओर से यह आज्ञा लाए कि माधवराव की पत्नी यशोदाबाई को एक लड़का गोद दिलाकर उसे पेशवाई का अधिकार दिया जावे । इसीके अनुसार चिमाजी आप्पा को इन्होंने यशोदाबाईके गोद नशीन कराया और पश्चात इसी लड़के को पेशवा की गद्दी पर बिठलाया । परन्तु बाजीराव ने दौलतराव सेंधिया को पराक्रमी और प्रवल जान कर उन्हें चार लाख रुपये का मुल्क और सेना का ख़र्च देना स्वीकार किया । और उनके द्वारा अपने पेशवाई मिलने का उन्हें

ने उद्योग किया। यह चरित्र देख कर, नाना फड़नवीस ने सेंधिया के सैन्य बल को विचार कर, बाजीराव से मेल कर लेने का विचार किया। परन्तु सेंधिया के दीवान बालोबा तातिया ने नाना फड़नवीस को इस स्वार्थ कार्य को करने से मना किया; और बाजीराव गद्दी पर न बैठ सकें ऐसा उद्योग तातिया जी करते रहे। बाजीराव चञ्चल स्वभाव के पुरुष थे। वे जिस ओर अपने कार्य की सिद्धि का अनुमान लगा पाते उसी ओर तुरन्त दौड़ते। इस प्रकार उन्होंने पेशवाई मिलने के लिए बहुतों से सहायता चाही। नानाफड़नवीस भी राज्य के दोनों पलड़ों पर सवार थे। जिधर को अधिक बल देखते उसी ओर झुक पड़ते। इसी लिए दोनों अपनी अपनी कार्य सिद्धि के लिए चालें सोचा करते। दोनों को दौलतराव सेन्धिया से सहायता लेने की आवश्यकता जान पड़ी। अतएव दोनों ने दौलतराव सेन्धिया को अपने पक्ष में लाने का उद्योग किया। इस काम करने में जिस सज्जन पुरुष से सहायता मिली उनका नाम सर्जेराव घाटगे था। नाना फड़नवीस और बाजीराव, दोनों ने सर्जेराव से सहायता पाकर अपने अपने कार्य की सिद्धि की।

नानाफड़नवीस ने सर्जेराव घाटगे द्वारा दौलतराव सेन्धिया के प्रिय राज्य-कार्य-धुरन्धर रायाजी पाटील के पास गुप्त रीति से यह सन्देसा भेजा कि बालोबा तातिया

को क़ैद करके, बाजीराव को पेशवा की गद्दी दी जावे। इसके बदले में तुमको अहमदनगर का क़िला, परशुराम भाऊ पटवर्धन की जागीर कुल १० लाख का मुल्क इनाम दिया जायगा। परन्तु इस गुप्त मंत्रणा का फल कुछ न हुआ। बाजीराव और नाना फड़नवीस के इस गुप्त भेद को बालोबा तातिया ने जान लिया। उन्होंने बाजीराव को क़ैद करके उत्तर हिन्दोस्थान में भेज देने का विचार किया। इस कामको करने के लिए उन्होंने सर्जेराव घाटगे से कहा। सर्जेराव बाजीराव को क़ैद करके अपनी सेना सहित उत्तर हिन्दोस्थान की ओर रवाना हुए। रास्ते में बाजीराव को एक युक्ति सूझ पड़ी; जो अन्त में फलदायक सिद्ध हुई।

बाजीराव को यह मालूम था कि सर्जेराव घाटगे के एक रूपवती कन्या है और उस पर दौलतराव सेन्धिया आसक्त हैं। बाजीराव ने सर्जेराव को सलाह दी कि तुम अपनी कन्या का विवाह दौलतराव सेन्धिया से कर दो। ऐसा करने से उनके अनुकूल हो जाने पर हम पेशवा की गद्दी पा सकेंगे और हमारे पेशवा होने पर तुम्हारे भी बहुत से मनोरथ पूर्ण होंगे। सर्जेराव घाटगे को पहले पहल तो यह सुनकर बुरा मालूम हुआ। परन्तु सोच विचार कर, लोभ में फँस, अपने भावी मनोरथों के पूर्ण होने की आकांक्षा से राज़ी हुए। इन्होंने बाजीराव से तीन शर्तें

लिखवा लीं । (१) बाजीराव को पेशवाई का अधिकार मिलने पर दो करोड़ रुपया दौलतराव सेन्धिया को दिया जावे (२) घाटगे घराने की पुरानी जागीर कागल सर्जेराव को वापस मिले (३) आपके राज्यारूढ़ होने पर दौलतराव सेन्धिया की दीवानगिरी सर्जेराव को दिलाई जावे ।

बाजीराव का उस समय स्वार्थ अटका था । उन्होंने सर्जेराव की इन तीनों शर्तोंको मंज़ूर करके अपने दस्तख़त करदिए । पश्चात सर्जेराव घाटगे ने बाजीराव की तबीयत अच्छी नहीं, वे बीमार हैं; ऐसा बहाना करके, उत्तर भारत की ओर जाने का विचार परित्याग कर दिया । वे प्रवरा नदी के किनारे, केशव गोविन्द के पिपटगांव में ठहर गये और वहां से दौलतराव सेन्धिया को सब हाल लिखा । दौलतराव सेन्धिया तुरन्त ही सर्जेराव के अनुकूल होगए । दौलतराव सेन्धिया ने सौन्दर्यरत्न प्राप्त होनेका समय समीप आया जान बड़ा आनन्द मनाया । स्त्री सौन्दर्य ने राज लक्ष्मी के ऊपर अपना अधिकार जमाया, यह कोई बड़े आश्चर्यकी बात नहीं है; इतिहास में तलाश करनेसे इसके बहुत उदाहरण प्राप्त हो सकते हैं ।

दौलतराव सेन्धिया ने अपने दीवान बालोबा तातिया को क़ैद कर लिया और बाजीराव को वापस बुला लिया । इस कार्य में नाना फड़नवीस का भी हाथ था इस कारण

उन्होंने बाजीराव को गद्दी पर बिठाकर, उनके दीवान होने का यत्न किया। बाजीराव ने नाना को अपना दीवान बना लेना स्वीकार किया। नाना ने बाजीराव से दीवानगीरी का इक़रार कराकर और सितारे के छत्रपति महाराज के पास जाकर, बाजीराव के लिए पेशवाई का आज्ञा पत्र ४ दिसम्बर सन् १७९६ ईस्वी को ले आए। इस प्रकार पेशवा की गद्दी पर बाजीराव विराजमान हुए।

बाजीराव को गद्दी मिलजाने पर वे नाना फड़नवीस और दौलतराव सेन्धिया की आज्ञानुसार चलने लगे। परन्तु थोड़े दिनोंमें ही नाना फड़नवीस, और दौलतराव सेन्धिया में अनबन हो गई। बाजीराव ने इन दोनों से अपना पीछा छुड़ानेका उद्योग किया। इस समय भी इन्हें सर्जेराव घाटगे द्वारा सहायता मिली। बाजीराव ने सर्जे-राव को सलाह दी कि नाना को बिना क़ैद किए तुम्हें दौलतराव की दीवानगीरी नहीं प्राप्त हो सकेगी। नाना ही तुम्हारे इस काम में बाधक हैं। नाना को क़ैद करने पर फिर तुम्हें दीवानगीरी मिलनेमें विलम्ब न लगेगा। सर्जेरावने दीवानगीरी और द्रव्यलोभसे बाजीरावके कहनेपर ३१ दिसम्बर सन् १७९७को नाना फड़नवीसको क़ैद करलिया।

नाना फड़नवीसके क़ैद होने पर बाजीराव पेशवा ने अमृत रावको अपना दीवान बनाया और सर्जेरावको दीवान बनानेके लिए दौलतराव सेन्धिया को सिफ़ारश की। इस

प्रकार सर्जेराव सेन्धिया के दीवान नियत हुए। सर्जेराव के दीवान नियत होने के बाद दौलतराव की इच्छानुसार बायजाबाईसे इनका विवाह हुआ। यह विवाह उत्सव पूना में, सन् १७९८ ई० के मार्च महीने में, बड़े राजसी ठाठ बाठके साथ हुआ। उस समय उत्सव-प्रिय-तरुण सेन्धियाने जो समारम्भ किया वह बहुतही अपूर्व था। उन्होंने ब्राह्मण भोजन, नाचरङ्ग, आतशबाज़ी, इत्यादि में ख़ूब ही दिल खोलकर धन ख़र्च किया। इस प्रकार "दक्षिण की सौन्दर्य-लतिका" दौलतराव को प्राप्त हुई और घाटगे घराने की कन्या बायजाबाई सेन्धिया घराने की कुल वधू बनी।

बायजाबाईका विवाह होने पश्चात जो पूना दरबार में गड़बड़ हुई उसका सम्बन्ध इस चरित्र से नहीं है और न उसका यहांपर कुछ लिखना उपयोगी होगा। परन्तु तौ भी हम इतना ज़रूर लिखेंगे कि इस विवाहमें दौलतराव का बहुत धन ख़र्च होगया था। अतएव दौलतरावने बाजी-राव से दो करोड़ रुपया जो उन्होंने गद्दीपर बैठने पश्चात देने का वादा किया था मांगे और उनके न मिलने पर सर्जेराव ने पूनाको ख़ूबही लूटा। इस लूटमें लोगोंको बड़ी तकलीफ़ पहुंची। बस, इस लूटके विषयका हाल लिखकर ही, पूना दरबार में जो राजविप्लव हुआ उसका विस्तार पूर्वक वर्णन हम इस चरितमें नहीं दे सकेंगे।

अमृतराव पेशवाने दौलतराव सेन्धियाको क़ैद करने का यत्न किया। बार्जाराव ने दौलतराव से मिलने पर यह पूंछा कि "तुम हमारे मालिक हो या नौकर ? यदि तुम हमारी इज्ज़त रखना चाहते हो तो उत्तर हिन्दोस्थान की ओर चले जाओ। सर्जेराव ने जो कपट किया है, वह मुझसे अब देखा नहीं जाता" !

पूना में बिना राजा का राज्य होजाने से और उसी समय उत्तर भारत में महादजी सेन्धिया की पत्नी दौलत राव के विरुद्ध होनेसे, सेन्धियाके राज्यमें दङ्गा फ़साद होने लगा। यह जानकर दौलतराव अपने राज्य का प्रबन्ध करने के लिए उत्तर हिन्दोस्थान में चले आए।

जिससमय दौलतराव सेन्धिया उत्तर हिन्दोस्थान की ओर रवाना हुए उस समय उनकी सेना बहुत ही अस्त व्यस्त थी। फ़ौजी सरदारों के बीच मत्सर और द्वेष ने प्रवेश कर रक्खा था। जिस समय डी. वायन फ्रेंच अफ़सर ने सेन्धिया के तरफ़ से इस्तीफ़ा दिया उस समय इनके पास २४००० पैदल, ३००० सवार, १२० तोपैं थीं:—डी. वायन के बाद सेन्धिया की फ़ौज के अधिकारी मि. पेरन नियत हुए। उनके अधिकार में चम्बल नदी से पटियाला तक, सेन्धिया का राज्य था। परन्तु उनका और लखोबा दादा का आपस में वैर भाव हो गया। सेन्धिया की फ़ौज में, फूट फैल गई। जिससे अन्त में, उत्तर भारत में,

सेन्धिया की स्वातन्त्रता स्वयं धीरे धीरे लोप होगई।

दौलतराव सेन्धियाको बालकपनसे ही फ़ौजी शिक्षा नहीं मिली थी और न उन्होंने कभी स्वतः सेनापति का काम किया था। सेना की व्यवस्था कैसी करनी चाहिए यह उनको बिलकुल ज्ञात नहीं था। अतएव उन्हें सेना के अधिकारी लोगों के कहने पर चलनेके सिवाय और कोई अवलम्ब न था। परन्तु जवानी के कारण आशा और साहस होने से उन्हें कभी कभी पुराने अनुभवी लोगों की बात भी अप्रिय लगती थी। उनकी प्रवृत्ति ऊपरी दिखाव लखाव की ओर अधिक थी। यही प्रवृत्ति उनके बिगाड़का कारण हुई। इस सम्बन्धमें एक कहावत प्रसिद्ध है कि जब दौलतराव सेन्धिया पहले पहल उत्तरभारत में गए तब उनकी इच्छा उज्जैन में एक छावनी डालने की हुई। उस समय गोपालरावभाऊ नामक एक पुराने सरदार ने दरबार के बीच सबोंके सामने कहाः—"कि जिन हमारे बड़े बूढ़ोंने मराठी राज्य स्थापित किया, उन्होंने घोड़ेकी पीठ कोही अपना घर बनाया था। तात्पर्य यहकि वे रातदिन घोड़े की पीठ पर बैठे हुए ही अपना कालक्षेप करते थे। परन्तु अब धीरे धीरे घोड़ोंके पीठके घरके बजाय कपड़ों के घर अर्थात तम्बू डेरोंका प्रचार हुआ। अब तुम माटी के घर बनाकर छावनी डालना चाहतेहो; परन्तु यह बात ध्यान में रक्खो कि यह छावनी थोड़े दिनों में ही माटी मोल

हो जायगी"। दौलतराव ने यह सुनकर उत्तर दियाः- "मेरे पास इतनी प्रचण्ड पैदल फ़ौज और तोपख़ाना है उसका कौन मुक़ाबला करेगा?" यह सुनकर उस वयोवृद्ध सरदार ने फिर कहाः-"यही पैदल फ़ौज और तोपख़ाना तुम्हारे विनाश का कारण होगा *।" यह बात आगे चल कर अक्षरशः सत्य निकली।

दौलतराव सेन्धिया ने मालवेमें आकर उज्जैन प्रान्त होलकर से वापस लिया। उज्जैन में अपनी राजधानी स्थापित की। उज्जैन को यशवन्तराव होलकर ने लूटकर सेन्धिया की प्रजा को दुःख पहुंचाया था, इसका बदला

---

* मराठों ने अपनी प्राचीन युद्ध पद्धतिको त्याग कर पाश्चिमात्य पद्धतिको स्वीकार किया इसी कारण इनका नाश हुआ। ऐसा विचार बड़े बड़े यूरोपिन लोगों ने भी ज़ाहिर किया है। सर फिलिफ फ्रांसिस साहब ने एक बार पार्लमेंट में अपना मत यों ज़ाहिर किया थाः-

"Sir, the danger you allude to, in the progress the Marathas are making in the art of casting cannon, in the use and practice of artillery, and in the discipline of their armies is imaginary. The Marathas can never be formidable to us in the field on the principles of an European army. They are pursuing a scheme in which they can never succeed, and by doing so they detach themselves from their own plan of war fare, on which alone, if they acted wisely, they would place dependence.„

सेनापति डयूक आफ़ वेलिंगृन का भी यही मत था।

लेने के लिए दौलतराव सेन्धिया ने सर्जेराव घाटगे को इन्दौर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। सर्जेराव ने भी इन्दौर को लूटकर सेन्धियाका बदला चुकाया । इस प्रकार उस समय देश में आपस का वैरभाव खूब बढ़ रहा था । बाजीराव ने यशवन्तराव होलकर के भाई विठोजी को हाथी के पैर के नीचे कुचलकर मरवा डाला । अतएव वे क्रोधित होकर पूना से चले आए । इस कारण बाजीराव पेशवा बहुत ही भयभीत हुए और अङ्गरेज़ों से जाकर मिलगए । ३१ दिसम्बर सन् १८०२ ईस्वी को वसईके मुक़ाम पर अङ्गरेज़ों और बाजीराव पेशवा की सखत्व बनाए रखनेकी शर्तें हुईं । वसईका सुलहनामा इतिहासमें प्रसिद्ध है । यही सुलहनामा पर-राष्ट्र को मराठों के दरबार में प्रवेश कराने का मुख्य कारण हुआ ।

वसईका सुलहनामा मराठोंकी स्वतन्त्रता नष्ट करने वाला है; यह जानकर उसे दौलतराव सेन्धिया रघुजी भोंसले और यशवन्तराव होलकर ने पसन्द नहीं किया । इस कारण अङ्गरेजों और मराठों में युद्ध हुआ । इस युद्ध में मराठों की ओर से ५०,००० सवार, ३०,००० पैदल और गोलन्दाज़ वग़ैरह मिलाकर कुल एक लाख फ़ौज थी । अङ्गरेज़ों के पास ५०,००० सेना थी । अङ्गरेज़ी सेनाके सेनापति जनरल वेलस्ली और लार्ड लेक थे । मराठों और अङ्गरेज़ों के बीच ख़ूब घनघोर युद्ध हुआ। लसवाड़ी, दिल्ली,

आसई, अलीगढ़ इत्यादि लड़ाईकी ख़ास ख़ास जगहें थीं। लसवाड़ीमें जो लड़ाई दिसम्बर सन् १८०३ ई०को हुई उसकी बाबत लार्ड लेक ने अपनी पुस्तक में सेन्धिया की फ़ौज और तोपख़ाने की बड़ी तारीफ़ की है। उन्होंने लिखा है कि 'शत्रुओंके सैनिकों को राक्षसके तुल्य समझो चाहे योद्धाओं के तुल्य समझो; परन्तु वे बड़ी बहादुरी के साथ लड़े। हमने उनको प्रबल और अजीत शत्रु समझकर ही लड़ाई आरम्भकी और उसमें हमें यश प्राप्त हुआ। यदि हम उनसे समझ बूझकर न लड़ते तो हमारा पराजय अवश्य होता !'

अङ्गरेज़ोंके भाग्यके सामने मराठों को विजय नहीं प्राप्त हुई; परन्तु उनके पराक्रम और शूरवीरता ने अङ्गरेज़ोंको चकित कर दिया। अन्त में ३० दिसम्बर सन् १८०३ ईस्वी को विट्ठल महादेव, मुन्शी कवलनयन, यशवन्तराव घोरपड़े और नारोहरी ने मध्यस्थ होकर जनरल आर्थर वेलस्ली से सुलहनामा किया। इस सुलहनामा की शर्तों के अनुसार सेन्धिया का बहुतसा मुल्क अङ्गरेज़ी सरकार की ओर गया। सेन्धिया की स्वतन्त्रता भी नष्ट हुई। सेन्धिया के दरबार में ब्रिटिश रेज़ीडेण्ट का प्रवेश हुआ। अङ्गरेज़ों की कुछ फ़ौज सेन्धिया की मदद के लिए उनकी सरहद्द पर आ दाखिल हुई।

इस सुलहनामा के पश्चात् सेन्धिया और अङ्गरेज़ों के बीच कुछ दिनों तक अनबन रही। दौलतराव ने

यशवन्तराव होलकर और रघुजी भोसले को शामिल करके फिर अङ्गरेजों के विरुद्ध लड़नेका प्रयत्न किया परन्तु सब निष्फल हुआ। अन्तमें २२ नवम्बर सन् १८०५ ई० को फिर मेजर मालकम के साथ दौलतराव ने सुलहनामा किया। यह सुलहनामा भी ज्यादा तर पहले सुलहनामा के अनुरूप था, कुछ थोड़ासा ही उसमें फेरफार होकर यह नया सुलहनामा तय्यार हुआ। पहले सुलहनामा में यह शर्त थी कि ग्वालियर और गोहद प्रान्त दौलतराव सेन्धिया को न देकर उसके बदले में १५ लाख रुपया दिया जावे परन्तु इस नए शर्तनामे से, यह दोनों प्रान्त सेन्धिया के आग्रह से वापस दिए गए। इन प्रान्तों की बाबत अङ्गरेज नीति विशारदोंमें बड़ा वादानुवाद हुआ। अन्तमें अङ्गरेजों के नाम और यश की रक्षा के निमित्त वापस देनेका निश्चय हुआ। *

---

* इस समय सरजान मालकम, जनरल वेलस्ली वगैरह अङ्गरेज नीति विशारदों को नाम की बाबत कैसा ख्याल था। यह बात नीचे लिखे वाक्यों से स्पष्ट प्रगट होती है:–

" I would sacrifice Gwalior or every frontier of India ten times over, in order to preserve our credit far scrupulous good faith, and the advantages and honour we gained by the late war and the peace; and we must not fritter them away in arguments drawn from overstrained principles of the laws of nations, which are not understood in this country· What

इस सुलहनामा में मालकम साहबने एक बड़े महत्त्व की शर्त डाली थी। उसका सम्बन्ध महारानी बायजाबाई से था। दौलतरावके साथ बायजाबाईका विवाह होने पश्चात् से वे सदैव दौलतराव के पास फ़ौज के साथ रहीं। उनका राजकाम में भी हाथ था। वे दौलतराव के साथ शिकार खेलने जाती थीं। घोड़े पर बैठना, बन्दूक चलाना, भाला फेंकना इत्यादि सिपाहगिरी के सब काम वे स्वयं जानती थीं। इस कारण उनका परिचय अङ्गरेज़ सेनापति जनरल वेलस्ली और मेजर मालकम साहबको पूर्णरूपसे था। अङ्गरेज़ों और दौलतराव सेन्धियाके बीच जो महा संग्राम हुआ, उसमें बायजाबाई ने क्या क्या वीरता के काम किये इसका ठीक ठीक पता कहीं से नहीं चलता। उनकी बहादुरी का ठीक ठीक पता न लगने पर भी, दूरदर्शी अङ्गरेजों ने जो दौलतरावसे सुलहकी उसमें एक यह भी शर्त रक्खी कि:—

नवीं शर्तः—दोनों सरकारोंकी हद्द चम्बल नदी स्थिर हुई। इस कारण कम्पनी सरकार को फ़ायदा पहुंचा; महाराज आलीजाह बहादुर दौलतराव सेन्धिया और कम्पनी सरकारमें मित्रभाव उत्पन्न हुआ। इन सब बातों को विचार कर, कम्पनी सरकार ४ लाख रुपया सालाना आलीजाह बहादुर दौलतराव को पेनशन देना स्वीकार

---

brought me through many difficulties in the war, and the negotiotians of peace? The British good faith, and nothing else"

Malcolm's Life by Kaye Vol 1 Page 269.

करती है। यह रक़म रेजिडेण्ट द्वारा तिमाही महाराज को अदा होती रहेगी। इसके सिवाय महाराज आलीजाह बहादुर दौलतराव की रानी बायजाबाई साहबा को बाला-बाईकी तरह कम्पनी सरकार ने, अपने हिन्दुस्तानी राज्य में से दो लाख रुपये की जागीर और महाराज की कन्या चिमनाबाई को इसी तरह एक लाख की जागीर कुल तीन लाख की जागीर देना मंजूर किया।"

इस शर्त के अनुसार बायजाबाई साहबा और उनकी कन्या चिमनाबाई साहबा को कम्पनी सरकार से स्वतंत्र जागीर मिली। इसपरसे ऐसा जान पड़ता है कि अङ्गरेज़ राजनीति विशारदों पर बायजाबाई का महत्व पूर्णरूपसे प्रगट था। इस सुलहनामा के बाद दौलतराव सेन्धिया ने फिर कभी अङ्गरेज़ी सरकार के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाए। ग्वालियर में उन्होंने सन् १८०५ ईस्वी में अपनी छावनी डाली और सन् १८१० ईस्वी में ग्वालियर के पास ही लश्कर, नाम का एक शहर बसाया। यही शहर अब सेन्धिया दरबार की राजधानी है। दौलतराव सेन्धिया के पास बहुतसी सेना थी। उसमें जानबतीस, सवाईसिकन्दर, पेरन इत्यादि फ्रेंच लोग सेनापति थे। और इसी प्रकार बापू सेन्धिया, देवबाकाले, जगूबापू, अम्बाजी इङ्गले इत्यादि बड़े बड़े मराठा सरदार थे। सर्जेराव घाटगे यह अङ्गरेज़ों के विरुद्ध थे। इस कारण सन् १८०५ ई० के सुलहनामा के अनुसार

दरबार से अलग कर दिए गए। परन्तु थोड़े दिनोंमें ही उन्होंने दौलतराव को प्रसन्न करके दरबार में फिर जगह पाई। उनमें साहस और बहादुरी ये दो गुण बहुत ही अपूर्व थे। परन्तु कई एक दुर्गुणों के कारण ये सबों को अप्रिय थे। अतएव २७ जोलाई सन् १८०९ ईस्वी को आनन्दराव नामक एक सरदार और मानाजी फाकड़े के पुत्र ने मिलकर इनका वध किया।

सेन्धिया के पास फ़ौज बहुत थी, ऐसा हम ऊपर भी कह आए हैं; और मुल्क भी बहुत बड़ा था। राज्य की व्यवस्था ठीकठीक न होनेके कारण आमदनी वसूल नहीं होती थी और इसीलिए फ़ौज का ख़र्च नहीं चलता था। इसी कारण दौलतराव को फ़ौज का ख़र्च चलाने के लिए अपने मुल्क का कुछ भाग रहन रखना पड़ा; इतनाही नहीं वरन् जो पेनशन और जागीर की आमदनी अङ्गरेज़ी सरकार के पास से आती थी, वह भी फ़ौजके ख़र्च निमित्त साहूकार के घर जाती थी। ऐसा होने से फ़ौजी सरदार लोगों ने अपना सर उठाया और मनमानी करने लगे। अतएव राज्य के प्रबन्ध और प्रभाव में बहुत कुछ अन्तर पड़ गया। पश्चात जब सन् १८१७ ईस्वी में अङ्गरेज़ों और पंढारी लोगों से लड़ाई हुई तब मेजर मालकम साहब ने दौलतराव के साथ फिर कुछ नई शर्तें ५ नवम्बर सन् १८१७ ईस्वीको कीं। इन नई शर्तोंके अनुसार सेन्धिया की सेना

अङ्गरेज़ अधिकारियों के देखभाल में रहने लगी और राजपूत राज्यों का स्वामित्व सेन्धिया की ओर से निकाल लिया गया। इस शर्तनामा के बाद होलकर और बाजीराव पेशवा के यहां कुछ गड़बड़ हुआ; इस समय सेन्धिया के दरबारियों ने भी कुछ गड़बड़ मचाना चाही परन्तु स्वयं दौलतराव सेन्धिया ने अङ्गरेज़ों से किसी तरह की बिगाड़ नहीं की। दौलतराव का अङ्गरेज़ों के साथ बिगाड़ न करनेके कारण बाजीराव पेशवा इन पर बहुत ही क्रोधित हुए। उन्होंने नीचे लिखा हुआ पत्र दौलतराव के पास भेजा:—

"तुम्हारे पिता ने स्वामिसेवा, भक्ति भाव से की और दिल्ली की विज़ारत प्राप्त की; वे जगत विख्यात हो गए हैं। उन्हींके पुत्र होकर 'तुम' कम्पनी सरकार से स्नेह रखते हो; और हमारे कृतघ्न बनते हो। यह करना तुमको उचित नहीं है। हमारे ऊपर इस समय वक़्त पड़ा है। अब तुम्हारा ऐश्वर्य स्थिर रहना कठिन है!"

बाजीरावके इस पत्रको पढ़कर दौलतराव सेन्धियाको बड़ा असमंजस हुआ परन्तु उन्होंने उस पत्र से प्रोत्साहित होकर अङ्गरेज़ों के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाया। उस समय उन्होंने जिस प्रकार शान्तिता से काम किया, ग्वालियर राज्य का भविष्यत सुरक्षित बना रहना उसी का फल है। पंढारी लोगों की लड़ाई ख़तम होजाने के बाद मध्य-भारतमें शान्तिदेवी ने आकर अपना राज्याधिकार जमाया।

शान्तिदेवीकी कृपा से ही सेन्धिया की २० लाख रुपये की आमदनी बढ़ी । सन् १८१८ ई० में दौलतराव सेन्धिया और अङ्गरेज़ी सरकार के बीच अधिक स्नेह बढ़ा । इसी कारण सन् १८१८ ईश्वीसे लेकर दौलतरावकी मृत्यु पर्यन्त यानी सन् १८२७ ई० तक किसी प्रकारकी अशान्तता मध्य-भारत में नहीं फैली । अङ्गरेज़ी राज्य की इन सालों में खूब ही वृद्धि हुई ।

चौथा अध्याय।

दौलतराव सेन्धिया की मृत्यु

महाराज दौलतराव सेन्धिया की तबीयत अक्तूबर सन् १८२६ ईस्वी से बिगड़ने लगी। उस समय ग्वालियर के उत्तम उत्तम वैद्य लोग उनकी दवा करते थे। महाराज की प्रियपत्नी बायजाबाई, महाराजकी तबीयत को ख़राब जान बहुत चिन्तित हुईं। महाराज के ऊपर उनका बहुतही प्रेम था। वे महाराज की सेवा शुश्रूषा में सदैव लगी रहतीं। महाराजके बीमार पड़नेपर, ग्वालियर के रेज़िडेण्ट मेजर स्टुअर्ट और असिस्टेण्ट कप्तान फ्लेमिङ्ग साहब सदैव महाराज का समाचार जाननेके लिए महलों में आते थे। महाराज और मेजर स्टुअर्ट आपस में बड़े मित्र थे। वे आपस में अपनी मनमानी सब कुछ कहा करते थे। मेजरसाहब ने महाराज की बीमारी का हाल गवर्नर जनरल साहब को भी लिख भेजा। उस समय महाराज दौलतराव एक स्वतन्त्र और बलवान राजा समझे जाते थे। बृटिश सरकार भी उनके साथ दोस्ती का

बर्त्ताव करती थी। उनकी मानमर्यादा बनाए रखने का सरकार को ख़्याल था। महाराज की तबीयत दिनोंदिन ख़राब होती जाती है; यह देखकर, मेजर स्टुअर्ट साहब ने महाराज से गद्दी के वारिस के लिए, दत्तक पुत्र लेने की, बारबार प्रार्थना की। परन्तु महाराज ने दत्तक लेना पसन्द नहीं किया। उन्होंने मेजर साहब को यही उत्तर दिया कि "जब मेरी पत्नी राजकाज चलाने के योग्य है तब मुझे दत्तक लेनेकी क्या ज़रूरत?" महाराजका जवाब सुनकर मेजर साहब को भी चुप होजाना पड़ा।

दौलतराव सेन्धिया के रखमाबाई और बायजाबाई दो पत्नी थीं। रखमाबाई बड़ी सीधीसाधी भोली स्त्री थी। राजकाज चलाने की उनमें बिलकुल शक्ति न थी। बायजाबाई, बुद्धिमती, राजकाज चलाने योग्य, साहसिन और दृढ़निश्चयी थीं। उन्होंने बहुत दिनों तक राजकाज करनेमें अपने पति को सहायता पहुंचाई थी। इस कारण महाराज को सारे राज्य का भार बायजाबाई को सौंपने में किसी प्रकार का सङ्कोच नहीं हुआ। वे ख़ूब अच्छी तरह जानते थे कि बायजाबाई राज्य को अच्छी प्रकार से चला सकेंगीं। परन्तु बायजाबाई को राज्याधिकार देने की उन्होंने कोई स्पष्ट आज्ञा नहीं दी; क्योंकि वे जानते थे कि दरबार के कुछ कुटिल और कपटी लोग रखमाबाई का पक्ष लेकर दङ्गा बखेड़ा उठावेंगे और जिसका फल

राज्य को निष्कारण भोगना पड़ेगा। इसी कारण उन्होंने स्पष्ट कोई आज्ञा या कोई निश्चय विचार इस पर नहीं प्रगट किया *। बायजाबाई के ऊपर उनकी बहुत प्रीति थी। राज्य चलाने के सारे गुण वे उनमें देखते थे। इस बात का महाराज को कई बार परिचय भी मिल चुका था। बायजाबाई के सहवास से महाराज को यह निश्चय हो गया था कि स्त्रियां केवल महलों में बैठने और आनन्द पूर्वक आहार विहार करने के ही योग्य नहीं वरन् वे राज्य को भी भले प्रकार चला सकती हैं। सेंधिया दरबार में होप नामक एक ठाकुर रहते थे उनका कथन है कि:—
"दौलतराव सेंधिया को यह अभिमान था कि मैंने अपनी पत्नी की सलाह लिए बिना कोई भी बड़ा काम नहीं किया। पूर्वीय देशों के लोग अपनी स्त्रियों को कितने कम दर्जे का समझते हैं यह बात ध्यान में रख कर, यह

---

* मिल्ल साहब ने अपने इतिहास में इसका उल्लेख किया है:—

"The real cause of his reluctance, however, was his attachment to Baiza Bai, who had long exercised an imperious influence over his mind, and to whom he wished to bequeath the substantial authority of the state, although the opposition of the principal persons of his court, and probably some misgivings of the result, deterred him from declaring her his successor." Mill's History of India, Vol IX. page 146.

अभिमान अलौकिक था ऐसा कहना चाहिये।" *

डाक्टर होप साहब को दौलतराव सेंधिया के जिस अभिमान पर इतना आश्चर्य हुआ उसकी सैकड़ों मिसालें इस देश के प्राचीन इतिहास में मौजूद हैं परन्तु उस पर ध्यान देने वाला अब कोई नहीं है।

रेजिडेंट मेजर स्टुअर्ट साहब ने राज्य की भावी व्यवस्था की बाबत दौलतराव से कई बार फिर प्रश्न किया। जिस पर महाराज ने उन्हें यह उत्तर दिया कि, "यदि राजा की पत्नी बुद्धिमती और समझदार हो, तो उसके पीछे राज्य का काम चलाने के वही योग्य है"। इस पर रेजिडेंट ने फिर पूछा कि "आप के दो पत्नी हैं, इस पर आपकी क्या राय है" ? इस पर महाराज ने उत्तर दिया:—"हां, न्यायानुसार बड़ी पत्नी ही हमारे बाद राज्य चलाने की अधिकारणी है; परन्तु राज्य चलाने के लिये बुद्धि, संसारका ज्ञान और व्यवहारिक अनुभव होना चाहिए। ये सब गुण उसमें नहीं हैं। अतएव वह राज्य चलाने के अयोग्य है। महलों में आनन्द से रहना और भोजन करना ; बस यही उसमें गुण है। इसके अलावा और उसमें कुछ नहीं है। इस प्रकार दौलतराव ने अपनी

* "His boast was (and a most singular one it is, when we remember the low esteem in which women are held in all Eastern countries), that he never undertook an affair of importance without consulting her."

दोनों पत्नियों की बाबत रेज़िडेंट साहब पर अपनी राय ज़ाहिर कर दी। इस परसे रेज़िडेंट साहब को भी बायजाबाई की योग्यताकी बाबत निश्चय होगया और उन्हें यह भी मालूम हो गया कि महाराज की इच्छा है कि हमारे बाद बायजाबाई को राज्याधिकार मिले। मेजर स्टुअर्ट साहब ने इस बाबत महाराज से कई बार फिर भी प्रश्न किया परन्तु महाराज ने सिवाय इसके, कि "बायजाबाई होशियार और चतुर है; परन्तु इस प्रश्न का निर्णय बृटिश सरकार जिस तरह चाहे उस तरह करे, उसपर मुझे पूर्ण विश्वास है" और कुछ नहीं कहा।

दौलतराव सेंधिया की तबीयत दिनों दिन बिगड़ती ही गई। पौष महीने में, महाराज ने, मेजर स्टुअर्ट और अपने कई एक यूरोपियन मित्रोंको आगरे में, संक्रान्ति की अन्तिम भेट तिल इत्यादि भेजे *। बायजाबाई ने संक्रान्ति के दिन अपने पति की स्वास्थ्य रक्षा के लिए बहुत कुछ दान धर्म किया। बायजाबाई ने १३ जनवरी को अपने भाई हिन्दूराव द्वारा २००० काशीके गङ्गा पुत्र और मथुरा के चौबों को बुलवाकर, हरएक को एक सेर मिठाई, एक रुपया दक्षिणा और एक सेर चांवल देकर प्रसन्न किया

---

* दक्षिण में यह रिवाज है कि संक्रान्त के दिन तिलों को रङ्ग बिरङ्गे रङ्ग कर और मिठाई में पागकर मित्रों को बांटते हैं और आनन्दोत्सव मनाते हैं। यह तिवहार दक्षिण के बड़े तिवहारों में गिना जाता है। —लेखक

और उनका आशीर्वाद लिया । इसीप्रकार ब्राह्मण भोजन हिन्दूधर्म के अनुसार दान धर्म, प्रायश्चित्त और गोदान भी उन्होंने किया । इस दानधर्म की महिमा उस समय सारे देश में फैलगई थी * । इस प्रकार बायजाबाई और हिन्दूराव ने महाराज की जैसी इच्छा थी उसीके अनुसार सब पुण्यधर्म उत्तम प्रकारसे किया । महाराज की बीमारी बढ़तीही गई । वे दिनोंदिन असक्त होते गए । उनको आरम्भ में पेट की बीमारी थी । पीछे हाथ पैर सूज गए । यह देख उनका अन्तकाल समीप आया जान, बायजाबाई और हिन्दूराव सदैव उनके पलङ्ग के पास बैठे रहा करते । माह बदी ७ सम्बत १७४८ के दिन महाराज की तबीयत बहुत ज़्यादा ख़राब होगई । इससमय महाराज ने स्टुअर्ट साहब को बुलानेको हिन्दूराव को आज्ञा दी । हिन्दूराव ने तुरन्तही एक सवार को रेजिडेण्ट साहब के पास भेजा और कहला भेजा कि आप कृपा करके शीघ्र आवें; महाराज

---

* इस दान पुण्य का समाचार 'शमसुल अखबार' में छपा था उस पर से 'एशियाटिक जर्नल' में इस प्रकार प्रकाशित हुआ:-

"Here is a chief, once powerful enough to inspire the British Government with apprehension, risking his throne and his Life, by wasting upon idle Brahmans money which is due to his dependents" ! Page 373.

इस लेखक को हिन्दुओं की रीति रवाज का ज्ञान न था ऐसा मालूम होता है । —लेखक ।

की इच्छा आप को देखने की है। मेजर स्टुअर्ट साहब तुरन्त ही महलों में आए और थोड़ी देर तक महाराज साहब के साथ बातचीत करते रहे। पश्चात महाराज को आराम मिले इस निमित्त बाहर जाकर एक दूसरे कमरे में बैठ गए। रेज़ीडेण्ट के जाने बाद महाराज की प्रिय पत्नी बायजाबाई महाराजके पास तुरन्त गईं। महाराज ने उनकी ओर करुणा भरी दृष्टि से देखा और अपनी प्रजा के लिए महारानी द्वारा अपना अन्तिम सन्देसा भेजा। महाराजके मरतेही महलोंमें हाहाकार मचगया। उस समय के चित्र को इस पुस्तक में अंकित करना बहुत ही कठिन है। प्रियपाठक! आप अपने मन द्वाराही इस चित्र की कल्पना का अनुभव कर लीजिए और इसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। पतिके वियोग में पत्नीको जो वेदना पहुंचती है उसका विवरण लेखनी द्वारा समझाया नहीं जासकता या मैं ही इस विषय को समझाने के अयोग्य हूं, यह मैं नहीं कह सकता। इसका विचार आप के आधीन है। आप स्वयं करें।

महाराज के मरने पर मेजर स्टुअर्ट साहब ने जो विवरण अपने आखों देखा सरकार को लिख भेजा था उसपर से पाठकों को बहुत कुछ ज्ञान होगा अतएव हम उसका सारांश, नीचे लिखे देते हैः—"कल सबेरे ९ बजे के क़रीब महाराज के महलों से एक सवार रेज़िडेन्सी को

ओर घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। उसने हिन्दूराव का यह सन्देशा आकर कहा कि "आप से मिलने की महाराज साहब को बहुत ही इच्छा है। इस कारण आप देर न करके अभी महलों में चलिए।" यह सन्देशा सुनकर, मैंने महाराज का अन्तकाल समीप आया जान, तुरन्त घोड़ेपर सवार हो महलों की ओर रवाना हुआ। मैं केवल कप्तान डाईक को अपने साथ ले गया था। महलोंमें पहुंचने पर मुझे दरवाज़े के ऊपर हज़ारों आदमी चिन्तित दिखलाई पड़े। महलों के भीतर जाने पर मुझे अलग अलग कमरों में सरदार और शहर के बड़े बड़े लोग दिखलाई पड़े। हिन्दूराव के मिलने पर, मैंने उनसे पूँछा कि महाराज की तबीयत अब कैसी है! हिन्दूराव ने उत्तर दिया कि "महाराज साहब की तबीयत बहुत ही ख़राब है आप शीघ्र चल कर उनसे मिल लें।" मेरे आने का समाचार महाराज को अन्तःपुर में पहुंचाया गया। मुझे तुरन्त भीतर महलों में महाराज के पास जाने की आज्ञा हुई। जिस कमरे में महाराज साहब लेटे थे मैं वहां पहुंचा। मेरे साथ हिन्दूराव, रावजी ख़ासगीवाले, आत्माराम पण्डित और एक दो सज्जन पुरुष थे। कप्तान डाईक भी मेरे साथही भीतर गए। महाराज पलङ्ग के ऊपर तकिया से टिके हुए बैठे थे। उनके पास बहुत से दासी और नौकर खड़े थे। परदे के भीतर एक कमरे में बायजाबाई,

रखमाबाई और बालाबाई आदि स्त्रियां बैठी थीं। महाराज के चेहरे में बहुत फ़रक़ देखकर मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। उनके हाथ और शरीर का बहुत भाग बिलकुल कृश हो गया था। पेट और पांव बहुत सूज गए थे। मैं उनके पास गया। उनका हाथ मैंने अपने हाथ में पकड़कर शेक हैंड किया। वे क्या कहते हैं यह सुनने के लिए मैंने अपना शिर उनके मुख के पास कर दिया। पहले तो वे कुछ बोले नहीं, चुपचाप बैठे रहे; अन्त में, कुछ देर बाद, सब लोगों और परदे की ओर देखकर, स्पष्ट और ज़ोर से जो सब को सुनाई पड़े यह कहा किः—"जो तुम मुनासिब समझो सो करो।" यह सुनकर मैंने कहा किः—"सब काम महाराज की इच्छानुसार किया जायगा।" पीछे मैंने उन का धीरे धीरे बहुत कुछ समाधान किया, और यह भी कहा कि ईश्वरकी कृपासे महाराज अच्छे हो जांयगे। इस समय महाराज को मोह उत्पन्न हुआ, उनका गला भर आया; और उन्होंने "आपके देखनेसे, और आपकी मुह-ब्बत से" यह हृदयद्रावक शब्द मुख से निकाले। परन्तु वे इस वाक्य को पूरा नहीं कर सके। बहुत देर तक वे चुप चाप बैठे रहे। अन्तमें मैंने पूँछा किः—"क्या महाराज साहब को और कुछ मुझ से कहने की इच्छा है"? इस पर महाराज ने कहा किः—"बहुत कुछ कहना है।" परन्तु वे बहुत देर तक कुछ भी नहीं बोल सके। तब मैंने यह

विचार किया कि दूसरे कमरे में जाकर कुछ देर बैठें और फिर महाराज को जब कुछ चैतन्यता आ जावे तब फिर उनके पास आकर कुछ बातचीत करें। यह बात सब लोगों के पसन्द आई। मैं वहां से उठा ही चाहता था कि बायजाबाई ने परदे से ही "डाकृर प्यांटन साहब बुलाये जावें" यह सूचना की। तब मैंने पूँछा कि:—"क्या ऐसी महाराज की इच्छा है?" महाराजने कहा कि 'हां'।

"इस समय महाराज ने जो कुछ कहा वह मैं अक्षरशः यहां देता हूं। इसका कारण यह है कि, ये महाराज के अन्तिम शब्द थे। मुझे दूसरे कमरे में जाकर बैठे हुए अभी एक घण्टा भी नहीं हुआ था कि इतने में महलों के भीतर से रोने धोने की आवाज़ आने लगी। रोना सुन कर मैंने निश्चय किया कि महाराज का अन्त होगया।

"इसके बाद जो शोकदायक दृश्य दिखाई पड़ा उस का वर्णन करना मुझसे बन नहीं पड़ेगा। स्त्रियों का रुदन करना और पुरुषों का शोकातुर होकर इधर उधर घूमना और राजमहलों के कोलाहल का वर्णन करना ना मुमकिन है।"

"२० तारीख़ के ख़लीता की अन्तिम शर्त के अनुसार मैंने महाराज के शव की अन्तिम तय्यारी होने पर्यन्त, महलों में ही रहना निश्चय किया। और इसीके

अनुसार वहां हिन्दूराव और अन्य सरदारों ने मुझ से विनय भी की। महलों में इधर उधर दुःख का ही दृश्य दिखाई पड़ता था । परन्तु सन्तोष इतना ही था कि सती होने की तय्यारी कहीं भी नहीं थी । जिस समय कोई स्त्री अपने पति के साथ सती होने का निश्चय करती है उस समय उसका दुःख, गम्भीरता और उदारता के स्वरूप में बदल जाता है। फिर वह उस समय नेत्रों से दुःख के आंसू नहीं बहाती और न वह ज़ोर ज़ोर से रोकर कोलाहल मचाती है। वह अपने मुँह पर का परदा हटाकर सब लोगों के सामने आती और अपना निश्चय प्रगट करती। इस प्रकार के चिह्न मुझे बिलकुल दिखाई नहीं पड़ते थे। परन्तु जब मैंने सुना कि बायजाबाई महाराज के साथ जाने को तय्यार हैं तब इस काम से उन्हें रोकने के लिए मैं उनके पास गया। मैं उन्हें इस काम से रोक सकूंगा यह मुझे विश्वास था। उस समय मेरी और उनकी भेंट एक पतले कपड़े के परदा के बीच में से हुई।

"जिस समय मुझ से और उनसे क्या बातचीत हुई, उसे विस्तार पूर्वक देने की यहां आवश्यकता नहीं है। इस बातचीत के अन्त में, महाराज ने मरते समय जो मुझ से कहा है, उसीके अनुसार मैंने राज्य को अपने अधिकार में लिया है अब तुम भी अपने निवास स्थान को जाओ यह मेरी इच्छा है। ऐसा मैंने कहा। परन्तु

इस प्रकार हुआ नहीं । अन्त में, बायजाबाई का, सब स्त्रियां हांथ पकड़कर महल के भीतर अन्तःपुरमें ले गई ।"

"पश्चात कुछ समय बाद रेज़िडेण्ट के नाते से मेरे पास एक ख़लीता आया । यह ख़लीता महाराज की मृत्यु का अन्तिम पत्र था । परन्तु उसपर महाराज के दस्तख़त नहीं थे । इस ख़लीते का आशय इस प्रकार था;—"महाराज के लिए दत्तक पुत्र लिया जावे । हिन्दूराव को राज्य का व्यवस्थापक (Superintendent) नियत किया जाय । औरस पुत्र हो, तो वह राज्याधिकारी हो और न हो तो दत्तक पुत्र महाराज बनकर, जबतक बायजाबाई जिन्दा हैं तब तक उनकी आज्ञानुसार चले । अन्त में, इन सब बातों के पूरा होने के लिए वृटिश सरकार सहायता करे ।" यह प्रार्थना की गई थी ।

"महाराज के मृतक संस्कार का दृश्य हृदयद्रावक और शोकजनक था । महाराज की शवको पालकी में रखकर, उस पर उत्तम वस्त्र रत्नों और मोतियों से अलंकृत करके डाला गया था, उनका मुख खुला हुआ था, जिससे वे जीवित मनुष्यके तुल्य बैठे दिखाई पड़ते थे । उनकी सवारी का यह अन्तिम दृश्य बड़े दरबारी ठाठबाठ का था । उनकी पालकीके पीछे पीछे हाथी, घोड़े, डङ्का, निशान सब साथ साथ था । फ़ौजी लोग भी उनकी शव के साथ साथ थे । तात्पर्य यह है कि उनके अन्तिम दर्शन करने को बहुत ही भीड़भाड़ इकट्ठा

थी। सारी प्रजा महाराज की मृत्युसे शोकातुर होगई थी और उनके आंखों से अश्रुधारा बराबर जारी थी। इस पर से प्रगट होता है कि महाराज के ऊपर लोगों की कितनी प्रीति थी। दौलतराव सेन्धिया में, उत्तम राजा कहलाने योग्य सर्वगुण पूरे तौर पर न भी हों तो भी वे दुष्ट अथवा क्रूर कर्म करने वाले राजाओं में भी नहीं गिने जा सकते। उनमें बुद्धि और विचार की भी कमी नहीं थी। महाराष्ट्र साम्राज्यरूपी नौका का अङ्ग भङ्ग होकर उनका राज्य सुरक्षित रहा यह उनकी बुद्धि और विचार काही फल है। वे बहुत बड़े शूरवीर और रसिक थे। बातचीत होने पर जो वे उपमा और दृष्टान्त देते थे; वे बहुत ही मार्मिक और आनन्ददायक होते थे। उनका स्वभाव सौम्य और शान्त था। युवा अवस्थामें, उनमें दुर्गुण और प्रमाद कुछ भी हो (इस बाबत सब दोष महाराज की अपेक्षा उनके कुटिल मंत्रियोंकी ओर अधिक था ऐसा मेरा विचार है) तथापि आगे को उनके राज्य चलानेकी पद्धति, और उनके द्वारा नीति मार्ग भङ्ग होने की कोई भी बात नहीं हुई। दुर्लक्ष्य और आलस्य येही उनमें दो बड़े दुर्गुण थे। येही दुर्गुण उन्हें राजपद के कर्तव्य कर्म से, च्युत करनेमें, बाधक होते थे। हिन्दोस्थान का इतना विस्तृत राज्य १४ वर्ष की उमर में उन्हें प्राप्त हुआ और उनका बालकपन मराठी फ़ौजों के "विश्वासघात" और "लटलाट"

में गुज़रा। अतएव इन दो बातोंको ध्यानमें रखकर उनके राज्यकाल की भूलें और दोष क्षमा करने योग्य हैं। इस पत्र का कुछ भाग बिलकुल सरकारी पत्र व्यवहार की मर्यादा की अपेक्षा अधिक लिखा गया है। इस बाबत मुझे क्षमा मिलेगी ऐसी मुझे आशा है। इस राज्यसे मेरा बहुत दिनों का परिचय है और महाराज का बर्त्ताव मेरे साथ स्नेह पूर्ण रहा है। उनकी मृत्युका वृत्तान्त लिखते समय मेरे हृदय का द्रवीभूत होना एक सहज बात है। यदि ऐसा न हो तो मुझे सचमुच पाषाणहृदयी समझना चाहिए। उसीके अनुसार उन्होंने मृत्यु के समय ब्रिटिश सरकार के न्यायी और उदार होने की बाबत अपना विश्वास प्रगट किया। यह उनकी मृत्यु के साथ होने वाली एक बड़े महत्त्व की हृदयद्रावक बात समझना चाहिए।"

इस ख़लीता पर से यह साफ़ प्रगट होता है कि स्टुअर्ट साहब कैसे अच्छे स्वभाव के सज्जन पुरुष थे। भारतीय राज्यों की बाबत उनके मन में कैसी आदरबुद्धि थी।

महाराज दौलतराव सेन्धिया के मरने पर उनका अन्तिम दाह-संस्कार बड़े राजसी ठाठ बाठ से हुआ। बायजाबाई ने अपने प्रियपति के वियोग से अपने दुःखी मनको बड़ी धीरता और शान्तता के साथ संभाला। अपने पति की आज्ञानुसार उन्होंने राज्य की बाग शीघ्र ही अपने हाथ में ली।

महाराज दौलतराव का जहां पर दाह संस्कार किया गया था वहां पर बायजाबाई ने ग्वालियर में, एक उत्तम स्मारक (छत्री) बनवाया जो अबतक मौजूद है। इस छत्री के ख़र्च के लिए, दस हज़ार रुपये सालाना का अलग प्रबन्ध कर दिया गया है; जो अब तक बराबर जारी है। हरसाल छत्री का वार्षिकोत्सव बड़े ठाठबाठ के साथ मनाया जाता है।

दौलततराव सेन्धिया का शरीर खूब बलवान था। वे ऊंचे पूरे जवान थे। उनकी उंचाई ५, ५॥ फुट के क़रीब थी। उनका रङ्ग काला, मुंह गोल और नाक कुछ कुछ चपटी थी। परन्तु देखनेमें वे भव्य और परोपकारशील दिखाई पड़ते थे। उनके पहनावे को देखकर अङ्गरेज़ लोग उनकी तुलना इङ्गलेण्ड के बादशाह आठवे हेनरी से करते हैं। उनकी पोशाक बहुत ही सादी थी। वे सर पर पगड़ी बांधते थे। लम्बा अँगरखा पहनते थे। गले में सफ़ेद मोतियों की माला डालते थे। मोतियों का उन्हें बड़ा शौक़ था। उत्तम मोती देखने पर वे अवश्य मोल लेते। उनके यहां मोतियों का बहुत ही अधिक संग्रह था, इसीलिए लोग उन्हें बहुधा "मोती वाले महाराज" के नाम से सम्बोधन करते थे।

शिकार खेलना उन्हें बहुत प्रिय था। उनका बहुत सा समय शेर की शिकार करने में कटता था। वे नदी के किनारे घण्टों बैठे मछलियों का शिकार किया करते।

घोड़े पर बैठने और भाला चलाने में भी वे बड़े कुशल थे । यह दोनों गुण बायजाबाई में भी उनके सहवास से आ गए थे । वे श्रीकृष्णजी के बड़े भक्त थे। सांझ सवेरे नित्य श्रीकृष्णजी की पूजा वे बड़े भक्ति भावके साथ किया करते थे।

दौलतराव सेन्धिया के ज़माने में ज्ञानप्राप्ति और मनोरञ्जन के लिए पुस्तकों का अभाव था । वर्तमानकाल के अनुसार पुस्तकें और समाचार पत्र दिल बहलाव के लिए नहीं प्राप्त हो सकते थे । अतएव उस समय नाचरङ्ग और गाना बजाना ही लोगों के दिल बहलाव का द्वार था । दौलतराव सेन्धिया भी नाच रङ्ग के बड़े शौक़ीन थे। गाना बजाना उन्हें बहुत अच्छा लगता था । गान-कला-सम्पन्न गुणीजन उनके पास हरवक्त हाज़िर रहते । कोई रोज़ ख़ाली नहीं जाता कि उनके दरबार में गाना बजाना न होता हो । दूर दूर से कलावत गवइये लोग आते और अपनी गानविद्या द्वारा महाराज को प्रसन्न करके इनाम पाते । महाराज दौलतराव भी गानविद्या के पूर्ण रसज्ञ थे, ध्रुपद के भक्त थे, ऐसा लोग कहते हैं । उन्हें वन-विहार का भी बड़ा शौक़ था । ग्वालियर के चारों ओर उन्होंने अनेक बाग़ बगीचे लगवाए । वे वहां जाकर आहार विहार किया करते थे ।

दौलतराव के दो पत्नी थीं । पर उनमें से बायजा-बाई के ऊपर उनकी अधिक प्रीति थी । इस कारण वे

सदैव उनके साथ रहतीं। बायजाबाई चतुर और कुशाग्र बुद्धि की स्त्री थीं अतएव महाराज दौलतराव के ऊपर उनका अधिक प्रभाव था। दौलतराव सेन्धिया सदैव राजकीय अथवा घरु काम, सब में उनसे सलाह लिया करते थे। चतुर और बुद्धिमान स्त्री से पति को सलाह लेकरही काम करने से ग्रहस्थाश्रमी का कल्याण होता है।

दौलतराव सेन्धिया का स्वभाव सौम्य होनेके कारण वे सदैव अपने दरबारी लोगों और दूसरे राजाओं के वकीलों से प्रतिष्ठा और सभ्यता का बर्ताव करते थे। जब कभी दरबारमें बड़े बड़े राज्योंकी बाबत कुछ वादविवाद या बातचीत होती तो वह बड़ी सावधानी और सभ्यता पूर्वक होती थी। किसी दूसरे राज्य का सन्देसा महाराज तक दीवान की मार्फ़त पहुंचाया जाता था। अङ्गरेज़ी रेज़िडेण्ट का वे बहुत कुछ आदर सत्कार करते थे। कभी कभी रेज़िडेण्ट साहब की दावत भी किया करते थे। महाराज दौलतराव सेन्धिया हिन्दूधर्म के अलावा दूसरे धर्म वालों को भी इज्ज़त की निगाह से देखते थे। मुसलमान साधुओं का वे बहुत ही आदर और सत्कार करते थे। मुसलमान देवतायों पर भी उन्हें बड़ी भक्ति थी। ग्वालियर में शाह मंसूर का एक पुराना स्थान है। इस देवालय के साथ वे पूर्ण सहानुभूति रखते थे। इसका कारण लोग यह बतलाते हैं कि इस फ़क़ीर ने महादजी

सेन्धिया को यह वरदान दिया कि "तेरा राज्य दिल्ली पर्यन्त होगा"। समय पाकर यह वर सच्चा निकला । तब से सेन्धिया के घरानेमें इस औलिया फ़कीर की बाबत भक्ति भाव उत्पन्न हुआ । वह अबतक कुछ न कुछ चला जाता है ।

सन् १८०३–४ ई० में जब जनरल वेलस्ली और लार्ड लेक ने महाराज दौलतरावको परास्त करके सुलहनामा द्वारा उनकी स्वतन्त्रता नष्ट करदी तब से वे दिनोंदिन उदास रहने लगे । सन् १८०७ ईस्वी में जब उन्होंने एक धूम केतु देखा तब ब्राह्मण और ज्योतिषियों ने कहा कि "राजा लोगोंको इससे देखने से कुछ अनिष्टकी सूचना मालूम होती है ।" यह सुनकर महाराज ने जवाब दिया कि:—"अब हमारे पास अनिष्ट होने के लिए क्या बाक़ी है ? हां, हमारी स्थिति में कुछ ही हो ।" दौलतराव के ज़माने में आज कल की तरह शास्त्रीय संशोधन और ज्ञान प्रचार न होने से, पाश्चिमात्य देशों के कलाकौशल्य और शास्त्रीय सुधार को देख, इस देशवासियों को बड़ा अचरज मालूम होता था । पाश्चिमात्य वस्तुओं को देखकर लोगों की मति गति बिगड़ जाती थी । वे उसे देख चकित रह जाते थे । इस के कई एक प्रमाण इतिहास में मिलते हैं । सन् १८१० ई० में सेन्धिया दरबार के रेज़िडेण्ट मेजर मालकम साहब ने, दौलतराव के लिए एक चार घोड़े की बग्घी विलायत से मँगवाई । इस बग्घी में चार कुम्मेत घोड़े जुते हुए

थे और उनपर बहुत ही उम्दा साज़ सामान था। यह गाड़ी मेजर साहब ने महाराज के नज़र की। महाराज दौलतराव और उनके दरबारी लोगों ने इससे पहले कभी ऐसा अपूर्व अश्वरथ नहीं देखा था। इसे देख उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। दरबारी लोगोंने अनुमान लगाया कि शायद इसमें गोला बारूद भरा होगा। अतएव पहले पहल उस गाड़ीमें फ़क़ीर लोगोंको बिठलाकर बाज़ारसे निकाला जावे। अर्थात् प्रेमपूर्वक नज़र दिएहुए बहुमूल्य अश्वरथ पर फ़क़ीरों को बैठा देख ब्रिटिश रेज़िडेण्ट के मनमें क्या भाव उत्पन्न हुआ होगा उसे पाठक स्वयं विचार लें! इसी तरह की एक और किम्वदन्ती हम पाठकों को सुनाकर दौलतराव सेन्धियाके राज्यकाल के इस संक्षेप वर्णन को ख़तम करके इस अध्याय को समाप्त करते हैं।

एक दफ़ा रेज़िडेण्ट साहब ने एक बहुतही ख़ूबसूरत तम्बू बनवाकर महाराज दौलतराव सेन्धियाके भेटकिया। इसमें रङ्ग विरङ्गी कांच की हाँड़ियाँ लटकाई गई थीं। तम्बूके बीच का भाग ख़ूब अच्छी तरह सजाया गया था। इस तम्बू में दौलतराव ने एक बहुत बड़ी दावत की। दैवयोग से, मशालचीकी ग़लती से, तम्बू में आग लगगई। तम्बू जलकर ख़ाक होगया। परन्तु यह बात किसीके ध्यान में न आई। इधर उधर यह गप्प फैलगई कि तम्बू की क़नात में गोला बारूद भरा था उसीसे आग लगी और तम्बू

जलकर ख़ाक होगया ! उस समय इस प्रकार की बहुत बातें हुआ करती थीं, जिस परसे इतना ज़रूर पता लगाया जा सकता है कि उस समय भारतवासियोंका ध्यान कला कौशल की ओर बिलकुल नहीं था ।

पांचवां अध्याय ।

बायजाबाई का राज्यकाल

जिस समय दौलतराव मरे, उस समय भारतवर्षमें लार्ड अमहर्स्ट गवर्नर जनरल थे । उनका उद्देश्य उस समय भारतीय राज्योंके खालसा करनेका नहीं था । इसी कारण उन्होंने उस समय ग्वालियर राज्य के साथ बड़ी उदारता का काम किया । लार्ड अमहर्स्ट ने महाराज दौलतराव सेन्धिया की अन्तिम इच्छा के अनुसार और बायजाबाई की योग्यता, कर्तव्य शक्ति को अच्छी तरह जानकर, उन्हें राज्य का पूर्ण अधिकार सौंप दिया । और इच्छानुसार दत्तक लेने की उन्होंने बाई को आज्ञा देदी । यह बात बायजाबाई और ग्वालियर दरबार के सब लोगोंको अच्छी लगी । इस कृपा के लिए ग्वालियर दरबार ने गवर्नर जनरल साहब और रेज़िडेण्ट मेजर स्टुअर्ट साहब को अनेक धन्यवाद दिए ।

महारानी बायजाबाई ने मेजर स्टुअर्ट साहब के कथनानुसार राज्यका सब कामकाज अपने हाथमें लिया ।

ग्वालियर के राजनीति विशारद सरदार लोगों से मिलकर, सबको आश्वासन दिया। महाराज के बाद बायजाबाई और उनके भाई हिन्दूराव ने राज्यकी व्यवस्था अच्छी प्रकार चलाई। इससे, ग्वालियर में किसी प्रकारका उपद्रव नहीं उठा।

बायजाबाई राज्य की गद्दी के वारिस निमित्त किसी लड़केको गोद लें, यह राज्यके सब लोगों की इच्छा थी। ब्रिटिश रेज़िडेण्ट ने भी अपना यही मत प्रगट किया था। अतएव बायजाबाई ने दक्षिण में, सेन्धिया वंश के चार, पांच लड़के लानेको आदमी भेजे और वहांसे पांच लड़के लाए गए। उनमें से, बायजाबाईने मुकटराव नामका लड़का पसन्द किया। जिसकी उमर उस समय ११–१२ वर्षकी थी। देखनेमें यह लड़का होशियार दिखाई पड़ता था। कुछ थोड़ा लिखना पढ़ना भी जानता था। घोड़े पर सवार हो लेता था। इसी कारण ग्वालियर दरबारके लोगोंने इसे पसन्द किया। ज्योतिषियों ने भी जन्मपत्र देखकर उसके ग्रह उच्च के बताए। सामुद्रिक शास्त्र जानने वालों ने भी कहा कि इस बालक के शरीर पर राज्य चिन्ह दिखाई पड़ते हैं; इस प्रकार, 'राजपद पाने योग्य यह लड़का है' सबोंने यह निश्चय किया। बायजाबाई ने एक दरबार १६ जून सन् १८२७ ई० को किया, जिसमें उनके भाई हिन्दूराव, ग्वालियरके दीवान बापूजी रघुनाथ, तथा राज्य के मुख्य मुख्य सरदार लोग सब

इकट्ठे थे। इस दरबार में बायजाबाई ने इस लड़के को गोद लेने और राज्याधिकारी बनाने के लिए लोगों से रायली। सबोंने इसका अनुमोदन किया। पश्चात १८ जून सन् १८२७ ई० को दत्तविधान और राज्याभिषेक करने का निश्चय हुआ। * बायजाबाईके मनमें इस लड़के को अपनी लड़की की कन्या (नातिन) के साथ ब्याह कर देने की इच्छा हुई। इसकी बाबत पण्डितों को दोनों के जन्म पत्र देकर राय ली गई। पण्डितों ने गणागण मिलाकर 'विवाह हो सकता है', यह राय दी। अतएव बायजाबाई ने इस आनन्ददायक राज्याभिषेक के शुभ अवसर पर ही विवाह कर देने का भी निश्चय कर लिया।

---

* राज्यके सारे सरदार और नीतिज्ञ पुरुषों को इकट्ठा करके बायजाबाई ने एक दरबार किया उसमें सब की रायसे गोद नशीनी और राज्याभिषेक का निश्चय हुआ। ९ जोलाई के 'कलकत्ता गवर्नमेण्ट गजट' मे भी इसका हाल इस प्रकार छपा था:–

* On the Saturday previous. the Chiefs and the Ministers were assembled at the Durdar, when the intentions of the Baizabai to adopt and place Mookut rao on the musnud were publicly announced, and the opinions of the assembly were asked, not a dissentient voice was heard and all expressed their warm concurrence in the measure."

इस पर से प्रगट होता है कि बायजाबाई दरबार के लोगों की सम्मति की कैसी कदर करती थीं।

१७ जून इतवार के दिन, ग्वालियर के महलों में, मुकटराव का दत्तविधान और विवाह संस्कार बड़े धूमधाम के साथ हुआ। दूसरे दिन १८ तारीख को राज्याभिषेक का उत्सव हुआ। नगरमें आनन्द प्रदर्शनार्थ घरघर बन्दनवार लटगाई गई थीं। ग्वालियर में जिस ओर देखो उधर मङ्गल उत्सव ही दिखाई पड़ता था। जिस दिन बरात बड़े गाजे बाजे के साथ नगर में से होकर निकली उसी दिन वरवधू का गृह प्रवेश हुआ। बायजाबाई ने वरवधू को अपनी गोदमें बिठालकर, कुल रीति के अनुसार उनके मुखमें शक्कर डाली। विवाह होजाने बाद राज्याभिषेक का दरबार हुआ। ब्रिटिश रेजिडेण्ट मेजर स्टुअर्ट उनके असिस्टेण्ट और अन्य यूरोपियन फ़ौजी लोग, सब अपनी दरबारी पोशाक पहनकर, और सुवर्णांकित म्यान की तलवार कमर में लटकाकर, दरबार में आ दाख़िल हुए। उसी प्रकार ग्वालियर राज्य के सब सरदार, दरकदार, धनाढ्य, और राज विशारद लोग अपनी अपनी हैसियत की पोशाक पहनकर दरबारमें हाज़िर हुए। महलों के सामने सवार और पैदल लोगोंकी पलटनें कमर कसे ताज़ीम और सलामी के लिए मुस्तैद खड़ी थीं। राज्याभिषेक का शुभ मुहूर्त आने पर हिन्दूराव, मुकटराव को अन्तःपुर से दरबार में लाए। ब्रिटिश रेजिडेण्ट और सब सरदारों ने खड़े होकर महाराजको खड़ी ताज़ीम दी। महाराज आकर सिंहासन

पर बैठ गए । और बाहर तोपों की सलामी हुई । मेजर स्टुअर्ट साहब ने गवर्नर जनरल के यहां का आया हुआ ख़लीता और वर वधू के लिए बहुमूल्य ख़िलअत भेट में दी । इसके बाद सब सरदारों ने नज़र नेवछावर और बहुमूल्य वस्त्र महाराज और बायजाबाई के नज़र किए । मुकुटराव का नाम सेन्धिया घरानेके वीरपुरुष जनकोराव के नाम पर रक्खा गया । और 'महाराज जनकोजीराव' सेन्धिया के नामसे वे प्रसिद्ध हुए । इस प्रकार, राज्याभिषेक होकर, दरबारी लोगोंका इतर पान सुपारी से आदर सत्कार किया गया और दरबार बरख़ास्त हुआ ।

राज्याभिषेक का उत्सव होजाने बाद बायजाबाई ने ग्वालियर दरबारके सरदार और नीति विशारद लोगों को उनकी योग्यतानुसार पोशाक और वस्त्र देकर सबों को प्रसन्न किया । दौलतरावके ज़मानेमें जो लोग अपनी बहादुरी और वीरता द्वारा बढ़े थे उनको और उनके वंशजों को अभय वचन दिया । उनकी जागीर नक़दी या माफ़ी जो कुछ उन्हें मिलती थी उसमें किसी तरह का फ़र्क़ नहीं आने दिया । इस कारण वे सब की प्यारी हो गईं; सब लोग उनकी आज्ञानुसार चलते थे । उनके ज़माने में ग्वालियर की प्रजा को राज्यक्रान्ति के दुःख भोगने का कोई समय नहीं आया यह बड़े महत्व और गौरव की बात है ।

बायजाबाई के ज़माने में कौन कौन बड़े बड़े सरदार और नीतज्ञ पुरुष थे इसका जो कुछ पता लगा है वह हम नीचे देते हैं।

जयसिंहराव घाटगे हिन्दूराव:—ये सखाराम घाटगे सर्जेराव के पुत्र और बायजाबाई के भाई थे। सर्जेराव घाटगे दौलतराव के समय में सन् १८१० ई० में मारे गए। उसके बाद जयसिंहराव सन् १८१५ ई० में ग्वालियर आए। उस समय तक वे दक्षिण में अपनी पुरानी जागीर कागल का उपभोग करते थे। कोल्हापूर के महाराज ने इन्हें "हिन्दूराव" और "वज़ारतमआब" का ख़िताब दिया था। इस पर से ये हिन्दूराव कर के प्रसिद्ध हुए। ग्वालियर दरबारमें इनका अच्छा अधिकार था। ये बहादुर, तेजस्वी और स्वतंत्रता प्रिय पुरुष थे। जब से ये दक्षिण से आए तब से अन्त तक बराबर दौलतराव की इन पर कृपा दृष्टि बनी रही। दौलतराव ने उन्हें १,५०,००० हज़ार की जागीर देकर, ग्वालियर दरबार में, उन्हें पहले दरजे का सरदार बनाया। इतना ही नहीं, वरन् महाराज उनके हित की बातों की ओर सदैव ध्यान रखते। ग्वालियर में हिन्दूराव के रहने के बाद सन् १८२५ ई० में कागल की जागीर कोल्हापूर के महाराज ने ज़प्त करली। कागल के क़िलेपर अपनी सेना नियत कर दी और वहां से हिन्दूराव की माता और उनके कुटुम्बियों को निकाल दिया।

उस समय दौलतराव ने अङ्गरेजी सरकार को बीचमें डाल कर, कोल्हापूर के महाराज से जागीर वापस दिलाने का उद्योग किया। इस बाबत कोल्हापुर महाराज को यह हठ था कि हिन्दूराव स्वयं जागीर वापस पानेके लिए दरबार में आकर अर्ज करें परन्तु यह बात हिन्दूराव को स्वीकार न थी। अन्तमें अङ्गरेजी सरकार ने कोल्हापूर के महाराज के ऊपर चढ़ाई की। तब ३० दिसम्बर सन् १८२५ ई० को कोल्हापूर के महाराज ने अङ्गरेजों से सलाह करके कागल की जागीर हिन्दूराव को वापस कर दी। और अब किसी प्रकार का बखेड़ा या उपद्रव न खड़ा करेंगे, यह महाराज ने स्वीकार किया। इस बात पर से यह बात सहज ही ध्यान में आ सकती है कि दौलतराव सेन्धियाके दरबार में हिन्दूराव की कितनी अधिक प्रतिष्ठा थी। सन् १८२६ ई० में गवर्नर जनरल लार्ड अमहर्स्ट साहब से आगरा में भेंट करने के लिए, महाराज दौलतराव ने हिन्दूराव को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा था; इस पर से यह कल्पना की जा सकती है कि उस समय हिन्दूराव ग्वालियर दरबार के मुख्य सूत्राधार थे। दौलतराव के मरने बाद ये बायजाबाई के ज़माने में ग्वालियर दरबार के प्रधान मंत्री हुए। मानो, ये उस समय, ग्वालियर राज्य के आधार, स्तम्भ स्वरूप थे। बायजाबाई के समय, राज-काज के कामों में, हिन्दूराव का बहुत कुछ हाथ था;

अतएव उनके यश और अपयश में इनका बहुत कुछ भाग है।

बापूजी रघुनाथ :– ये जाति के कायस्थ थे। बड़ोदा के प्रख्यात नीतज्ञ विट्ठलराव देवाजी की सिफ़ारश से गायकवाड़ सरकार के पायगा में यह अफ़सर नियत हुए। धार के पवांर और गायकवाड़ सरकार में आपस का रिश्ता है। गोविन्दराव गायकवाड़ की कन्या धार के शूरवीर और पराक्रमी राजा यशवन्तराव पवांर, जो पानीपत के युद्ध में, सन् १७६१ ई० में मारे गए–के पुत्र खंडेराव पवांर को ब्याही थीं। इनके पुत्र आनन्दराव पवांर को गोविन्दराव गायकवाड़ की पत्नी गहिनाबाई की सगी भतीजी मैनाबाई ब्याही थीं। आनन्दराव की मृत्यु सन् १८०७ ई० में हुई। उनके कोई सन्तति नहीं थी। मैनाबाई को अबला जान, मुराराव एक दासी पुत्र ने राज्य अपने हाथ में लिया और उन्हें बहुत दुःख पहुंचाने लगा। राज्य में दङ्गा फ़िसाद शुरू हो गया। समीपवर्ती राजा सेन्धिया और होलकर वग़ैरह को अपना फ़ायदा उठानेके लिए अच्छा समय हाथ लगा। उस समय धार राज्य की मदद के वास्ते बड़ोदा की रानी गहिनाबाई ने सखाराम चिमनाजी को कुछ फ़ौज देकर भेजा। सखाराम चिमनाजीने वहां जाकर बहुत अच्छा राज्य का प्रबन्ध किया। परन्तु अकेले उनसे सब काम पूरा न हुआ। अतएव राज्य

के प्रमत्त लोगों को, नीचा दिखानेके लिए, उन्हें एक और शूरवीर सरदार की ज़रूरत पड़ी । उन्होंने बड़ोदा से बापू रघुनाथ को अपनी सहायता के लिए बुला लिया । ये धार में आकर सेनापति नियत हुए । कुछ दिनों बाद सखाराम चिमनाजी की मृत्यु हुई । उनके बाद ये धार के दीवान हुए । उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी और वीरताके साथ शत्रुओं को परास्त किया । राज्य में चारों ओर शान्ति फैल गई । सन् १८१७ ई० में मालवा में कुछ राजकीय गड़बड़ पैदा हुआ उसका प्रबन्ध करने के लिए सरजॉन मालकम साहब मालवे में आए । उनके साथ उन्होंने १० जनवरी सन् १८१९ ई० में मित्रता की, कुछ शर्तें करके धार राज्य की रक्षा की । उनके ज़माने में धार राज्य में अनेक प्रकार के सुधार हुए । प्रजा बहुत सुखी रही । उन्होंने मैनाबाई के पुत्र रामचन्द्रराव पवांर का व्याह दौलतराव सेन्धियाकी नातिन अन्नपूर्णाबाई से करवा कर दोनों राज्यों का प्रेमबंधन दृढ़कर दिया । उनकी बुद्धि और राजकाज की कुशलता को देखकर दौलतराव सेन्धिया उन पर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें अपने यहां बुलाकर सन् १८२६ ई० में अपना दीवान बनाया । परन्तु दौलतराव शीघ्रही मर गये । तथापि उनकी पत्नी बायजाबाई ने उनके गुणों पर विचार करके अपने ज़माने में भी इन्हें दीवान के पद से अलग नहीं किया । बायजाबाई के ज़माने में वे बराबर

दीवानका काम करते रहे। उत्तम मंत्रीका नियत करना यह एक बड़े महत्व का काम है। बापूजी रघुनाथ को दीवान नियत करनेसे प्रगट होता है कि मनुष्य की परख का उत्तम गुण बायजाबाई में मौजूद था। *

यशवन्तराव दाभाडे:—ये तलेगांव के शूरवीर दाभाड़े घराने के पुरुष थे। दौलतराव सेन्धिया ने उन्हें आश्रय देकर अपने दरबारमें सरदारी की जगह दी थी। सेन्धिया दरबार से उन्हें १०,००० की जागीर थी। इसके अलावा दक्षिण में तलेगांव और इन्दुरी ये दो इनाम के गांव थे। इनके पुत्र मन्याबा उर्फ बाबूराव को दौलतराव

* सरजान मालकम साहब ने मध्यभारत के इतिहास में बापू रघुनाथकी बाबत यह लिखा है:—

"The adminsitration of Dhar is conducted by Bapu Raghunath, who acting in complete confidence of meriting and recieving the support of the British Government is incessant in his labours to restore this principality to prosperity."

"That principality being under a minor prince, the adopted son of Maina Bai, the widow of the late Raja, has afforded us the same advantages, in carrying into execution economical reforms of the State of Holkar, nor is the Minister Bapu Raghunath inferior to Tatia Jogh in zeal or in a just appreciation of the generous policy of the British Government, which has restored the ruined fortunes of the Dhar faimily, and given them once more a rank and place among the princes of India."

सेन्धिया ने अपनी बड़ी कन्या चिमनाबाई व्याह दी थी। इनके पेट से तीन कन्या हुईं। उनमें से एक धारके राजा आनन्दराव पवांर को और दूसरी महाराज जनकोजीराव सेन्धिया को व्याही थी। बाबूराव दाभाडे बायजाबाई के दामाद थे। इस कारण उन्हें बायजाबाई ने २५०० मासिक नियत करदिया और अपने दरबारका उन्हें सरदार बनाया।

यशवन्तरावभाऊः—ये जावद प्रान्त और मेवाड़ के कई ज़िलोंमें सूबेदार रहे। इस प्रान्तकी सारी आमदनी वसूल करनेका इन्हें अधिकार दिया गया था। और जो सरकारी सेना इनके पास थी उसका ख़र्च भी ये ही देते थे। ग्वालियर दरबार और इनकी आपसमें यही शर्त थी। यशवन्तराव भाऊ दौलतराव सेन्धियाके प्रसिद्ध सेनापति जिबबादादा बख़्शी के पुत्र थे। इनके भाई नारायणराव को सर्जराव घाटगे ने सन् १८०० ई० में तोपद्वारा बड़ी निर्दयता के साथ उड़ा दिया। यशवन्तराव भाऊ ने सन् १८१७-१८ ई० में अङ्गरेज़ों और पंढारियों से जो लड़ाई हुई थी उसमें पंढारियों की सहायता की। उस समय बङ्गाल की सेना के अधिकारी मेजर जनरल ब्रौन साहब और इनसे ख़ूब लड़ाई हुई। इस लड़ाई में इनकी फ़ौज का तहस नहस हो गया। बाद को अङ्गरेज़ी सरकार और दौलतराव सेन्धियामें जो सुलहनामा हुआ उसके अनुसार मेवाड़ प्रान्त ग्वालियर राज्य से निकल गया। इस सुलहनामा के बाद

यशवन्त राव भाऊ ग्वालियर में आकर रहने लगे। उनके पास ४०,००० की जागीर थी उसमें बायजाबाई ने किसी प्रकार का फेरफार नहीं किया। वह बदस्तूर उन्हीं के पास बनी रही। उनका सेन्धिया दरबारमें बड़ा मान था। उस समय के राजनीति विशारदों में इनका नाम भी लिया जाता था।

"लाला भाऊ :—यह दौलतराव सेन्धिया के प्रसिद्ध सरदार गोपालराव भाऊ के पुत्र थे। सेन्धिया सरकारसे इन्हें एक लाख रूपये की जागीर मिली थी। इनकी उमर उस समय २५ वर्षकी थी। दक्षिणमें भी इन्हें सितारा ज़िलामें बांकडी और अहमदनगर जिला में बेलापूर, दो गांव इनाम में मिले थे। यह बायजाबाई के दरबार में एक सरदार थे।

फ़कीरजी गाढवे-यह सतारा ज़िला के बाईगांव के रहने वाले थे। ये महादजी के ज़माने में १०० सवारों के रिसालदार थे। इन्होंने सन् १७९८ ई० में महादजी की पत्नी और दौलतराव सेन्धिया में जो वैमनस्य होगया था उस समय सर्जेराव घाटगे को सहायता पहुंचाई थी। समय समय पर और भी कई एक साहस के काम करके इन्होंने दौलतरावको मदद दी थी। इसीके कारण दौलतराव ने इनपर प्रसन्न होकर अपनी सेना के एक भाग का अधिकारी बनाया। बायजाबाई ने फ़कीर जी गाढवे को अपने पतिके समयका पुराना सरदार समझ उनको अपने

ख़ास पायगा में २०० सवारों का अधिकारी बनाया।

उदाजी कुटेक :—यह अहमदनगर ज़िला के कोल पिंपल गांव के रहने वाले थे। ये दौलतराव सेन्धिया के ज़माने में एक मशहूर सरदार थे। इनके पास 'सरनौबत' का अधिकार था और २००० कंटिंजंट फ़ौजके मालिक थे। यह फ़ौज सेन्धिया सरकार की थी और उस पर ब्रिटिश अधिकारियों की देखभाल रहती थी। ये हमेशा 'गुना' की छावनी में रहते थे। बायजाबाई ने भी इन्हें सरनौबत का पद देकर पूर्वानुसार कंटिंजंट फ़ौज का काम करते रहने की आज्ञा दी।

माधवराव पन्त ब्रह्माजी :—ये सेन्धिया सरकार के तोपख़ाने के अफ़सर थे। यह काम इनके पास सन् १८०९ ई० से था। यह पुराने विश्वासपात्र नौकर थे। अतएव बायजाबाई ने भी इन्हें इसी काम पर बनाए रक्खा। दौलतराव सेन्धिया ने इनके अधिकार में छः पलटनें और २० तोपें दे रक्खी थीं। इसके ख़र्च के लिए स्वतंत्र मुल्क लगा था। बायजाबाई ने इनका अधिकार और इज़्ज़त बराबर बनाए रक्खी।

लक्ष्मणराव विट्ठल :—ये दक्षिण के चांभारगुण्डी गांव के रहने वाले थे। इनके पिता विट्ठल महादेव उर्फ़ विट्ठल पन्त तातिया दौलतराव के दरबार में एक प्रसिद्ध नीतज्ञ थे। इन्होंने सन् १८०३ ई० में, सर आर्थर वेलस्ली साहब

के साथ सुर्जी अञ्जनगांव में सुलहनामा किया था। इनकी बुद्धिमानी को देख दौलतराव सेन्धिया ने इन्हें दरबार वकील बनाकर सुलहनामा के लिए भेजा था। इनका सर आर्थर वेलस्ली, सरजान मालकम इत्यादि यूरोपियन के ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ा *। इन्हीं के लड़के लक्ष्मणविट्ठल थे। इनको बायजाबाई ने ग्वालियर का किलेदार नियत किया। इनके पास जो फ़ौज रहती थी उसके ख़र्च के लिए ग्वालियर के आस पास के ५०, ६० गांव लगे हुए थे।

रामराव फालके :—यह भी बायजाबाई के दरबार में एक सरदार थे। ये ४०० सवारों के रिसालदार थे।

मनीराम सेठ :—सेन्धिया दरबार के मुख्य ख़ज़ांची गोकुल पारख थे। जब वे सन् १८२१ ईस्वी में मरगए तब उनकी जगहपर बायजाबाई ने जयपुर निवासी मनीराम सेठ को अपना ख़ज़ांची नियत किया। पहले यह बहुत ग़रीब थे। परन्तु आगे वे बड़े धनाढ्य हो गए। सेन्धिया दरबारमें उस समय ये अव्वल दर्जेके मालदार गिने जाते थे। इनका उस समय इतना दबाब था कि इनकी सलाह लिए बिना कोई सरकारको एक पैसा तक कर्ज़ा नहीं देता

* विट्ठल पन्त तातिया यह एक बुद्धिमान और चतुर नीतज्ञ थे। अङ्ग्रेज़ इनको दिल्लगी से Old Brag (बूढ़ा शेख़ीबाज़) नाम से पुकारते थे इस बाबत मालकम साहब के जीवन चरित में एक आख्यायिका दी हुई है। देखो—"*Malcolm's Life by Kaye Vol II Page 241.*"

था । इनकी दूकानका नाम "मनीचन्द और लखमीचन्द" कर के मशहूर था ।

दाजी पोतनीस :—ये दौलतराव सेन्धिया के ज़माने में स्वामिनिष्ठ और विश्वास पात्र सेवक के नाम से प्रसिद्ध थे । बायजाबाई ने भी इन्हें अपने दरबार में बराबर पूर्ववत ही बनाए रक्खा ।

आत्माराम शिवराम बाबा वांकड़े :—इनके पूर्वज लछमणराव वांकड़े पूनाके रहनेवाले थे। महादजी सेंधिया के साथ ये उत्तर भारत में आए । ये दौलतराव सेन्धियके ख़ासगी दीवान (Private Secretary) थे । बायजाबाई ने भी इन्हें अपना निज मंत्री बनाए रक्खा । ये बायजाबाई के दरबार में आत्माराम पण्डित के नामसे प्रसिद्ध थे ।

कर्नल जेकब :—ये आर्मीनिया प्रान्त के रहने वाले थे । ये दौलतराव के ज़माने में फ़ौजी अफ़सर थे । इनके पास १३ पल्टन, ४०० सवार और ५२ तोपें थीं । सेना का प्रबन्ध इन्होंने बड़ा अच्छा किया था । ये अपनी सेनाको वेतन समय पर देते थे । इस काम के लिए इनके पास स्वतन्त्र मुल्क लगा हुआ था । बायजाबाई ने दौलतराव सेन्धिया की व्यवस्थानुसार, कर्नल जेकब साहब के पास पूर्ववत्‌ही जायदाद और अधिकार क़ायम रक्खा ।

कर्नल जान बेप्टिस्ट फ़िलोज़ :—ये सेन्धिया दरबार में 'जान बत्तीस'के नामसे मशहूर थे। यह जातिके फ्रेंच थे ।

दौलतराव सेन्धिया के ज़माने में, इन्होंने अनेक लड़ाइयां लड़कर, बड़ा यश पाया था। इन्होंने करोली, चन्देरी, राघोगढ़, बहादुरगढ़ इत्यादि स्थानों को विजय करके सेन्धिया राज्य की वृद्धि की थी। परन्तु अन्तमें कई कारणों से दौलतराव सेन्धिया ने इन्हें १८१७ ई० में नज़र बन्द क़ैद कर दिया। अन्तमें दौलतराव के ख़ज़ांची गोकुल पारख की सहायता से सन् १८२५ ईस्वी में इनका छुटकार हुआ। तब से यह बेकार रहने लगे। परन्तु बायजाबाई ने इनका बेकार रहना मुनासिब नहीं समझा। अतएव दरबार में इन्हें आने जाने की आज्ञा दी गई। और सेना के एक छोटे भाग का इन्हें अफ़सर कर दिया जिससे कि ये बेकार न रहकर किसी काममें लगे रहें और कोई उपद्रव न उठा सकें। अन्तमें इनका ग्वालियर दरबार के राजकाज में भी प्रवेश होगया।

मेजर जोज़फ़ अलकज़ण्डर :—यह जोशी सिकन्दर अथवा 'सवाई सिकन्दर'के नामसे मशहूर थे। पहले पहल यह जानबप्तीस की फ़ौज में नौकर थे परन्तु जिस समय जानबप्तीस और दौलतराव सेन्धिया की अनबन हुई और उन्होंने सेना का अधिकार जानबप्तीस के हाथ से छीन लिया उस समय यह सेन्धिया की कुल फ़ौज के अफ़सर नियत हुए। इस काम को इन्होंने बहुत वर्षों तक किया। सन् १८२१ ई० के साल में, बुन्देलखंड के एक राजा से

इनसे तकरार हुई उस समय ब्रिटिश सरकार ने बीच में पड़कर बीच बचाव करा दिया । इनके अधिकार में दो जङ्गी कम्पू (छावनी) और दो सौ सवार थे। बायजाबाई ने भी इन्हे इसी उहदे पर बहाल रक्खा ।

बायजाबाई अपने सब सरदारों और राजनीति विशारद लोगोंकी सलाहसे राजकाज करती थीं । राज्य की बाग हाथ में लेतेही बायजाबाईके सामने दो बड़े प्रश्न उपस्थित हुए । "एक तो यह कि दक्षिण में जो गांव दौलतराव सेन्धियाके जीवन तक के लिए थे उनको छोड़ देने के लिए ब्रिटिश सरकार ने बायजाबाई से कहला भेजा"। "दूसरे कंटिंजंटकी फ़ौज के ख़र्च के लिए बन्दोबस्त की बाबत भी सरकार से तक़ाज़ा शुरू हुआ।" इन दोनों प्रश्नोंका निराकरण करना कठिन काम था । सन् १८०३ ईस्वीमें जो सुलहनामा हुआ था उसमें यह निश्चय हुआ था कि सेन्धिया के घराने में जो गांव इनाम के पहलेसे चले आते हैं वह और सरदेश मुखका हक्क बदस्तूर बना रहे । बाक़ी के गांव अङ्गरेज़ों को दिए जावें । परन्तु आगे को इन इनामके गावोंकी बाबत झगड़ा और वादविवाद हुआ । सुलहनामा की शर्तों में 'इनाम' शब्द का उल्लेख न होकर "सेन्धिया की ओर जो गांव चले आते हैं" ऐसा लिखा था । इसपर से सेन्धियाके अधिकार के कौन गांव छोड़ दिए जावें और कौन न छोड़े जावेँ यह झगड़ा हुआ। अन्तमें इस संदिग्ध प्रश्नका सन् १८२२

ईस्वी में इस प्रकार निर्णय हुआ कि दौलतराव जब तक ज़िन्दा हैं तब तक सब गांव उनके आधीन रहैं और बाद को उनके ख़ास इनामके गांव रखकर बाक़ीके गांव सरकार के आधीन कर दिए जावें। इस प्रकार दौलतरावके मरने के बाद दक्षिण के गांवोंकी बाबत २४ मार्च सन् १८२८ ई० को सरकार की ओर से एक ख़लीता आया। उसे मेजर स्टुअर्ट साहब ने बायजाबाई के पास भेज दिया। सन् १८०३ ई० के सुलहनामा में दक्षिणके इनामके गावोंकी कोई फ़ेहरिस्त नहीं थी; इस भूलका फल इस समय भोगना पड़ा। सेन्धिया घराने के पास जो गांव बहुत दिनोंसे चले आते हैं उनके छोड़ देने से अपना सम्बन्ध दक्षिण से छूट जायगा; यह विचार कर, ऐसा करना बायजाबाई को रुचिकर न था। उन्होंने रेज़िडेण्ट के द्वारा बहुत कुछ उद्योग किया परन्तु सब निष्फल गया। अन्त में बायजाबाई ने लाचार होकर, दक्षिण के ८९॥ गांव ब्रिटिश सरकार को देकर अपना इससे पिंड छुटाया। परन्तु अभी एक बड़ा काम करना बाक़ी रह गया। वह काम कंटिंजंट फ़ौज के ख़र्च का विचार था। महाराज दौलतराव सेन्धिया को जो चार लाख पेन्शन सरकार से मिलती थी वह उनके मरने के बाद बन्द होगई। वह धन कंटिंजंटी के ख़र्च में लगा हुआ था उसके बन्द होजाने से बायजाबाईकी पेन्शन् का दो लाख रुपया और अन्य राज्यों से जो रुपया शान्ति

रक्षार्थ आता था वह इस प्रकार बन्द हुआ:—

बायजाबाई की पेन्शन...	...	...		२००००
कोटाराज्य से	...	...	...	१०२४३०
केटारी "	...	...	...	१०६१०
जयपुर "	...	...	...	१०००००
रतलाम व सेलाना		...	...	११२१४०
वसूल प्रान्त गढा कोटा वग़ैरह ...		...	...	१४३५६०

कुल ६,६८,७४० रुपया और मुतफ़र्कात आमदनी ६७५६ रुपया मिलाकर कुल ७०९२२४ के न आने से ३३५२८ रुपये की कमी पड़ी। इसके अलावा यह भी सवाल उठा कि बायजाबाई की पेन्शन् ताहयात है उनके बाद ख़र्च की क्या व्यवस्था रहेगी। परन्तु बायजाबाईने ब्रिटिश सरकार के इस मामले को, ८० लाख रुपया सरकार को क़र्ज देकर, और उसके सूद से फ़ौज का ख़र्च चले यह तै कर दिया। धन पाकर सरकार भी ख़ुश होगई और बायजाबाई का पीछा छूटा।

इस प्रकार ये राजकीय दोनों सवाल हल हो जाने पर, बायजाबाई को अपने राज्यके सुधार करने का मौक़ा मिला। उनका राज्यकाल सन् १८२७ ई० से शुरू होकर सन् १८३३ तक ई० छः वर्ष चला। इन छः वर्षोंमें उन्होंने राज्यको बड़ी उत्तमता से चलाया। भारतवर्ष की स्त्रियों में राज्य

चलाने की कैसी सामर्थ थी यह बात इस पर से स्पष्ट मालूम होती है ।

सन् १८२८ ई० में इनके प्रधान मंत्री धार राज्य का प्रबन्ध करने के लिये चले गए ; तब इन्होंने रावजी त्रिम्बक चांदवडकर को अपना दीवान बनाया । सर जान मालकम साहब ने उनके काम की बड़ी तारीफ़ की है । उनकी सहायता से बायजाबाई ने राज्य में अनेक सुधार किए और प्रजा को सुख पहुँचाया । बैजाबाई के ज़माने में राज्य में बड़ी शान्ति रही । उस समय की देश-स्थित आज कल की दशा से बिलकुल भिन्न थी । उस समय प्रत्यक्ष रणक्षेत्र में जाकर पराक्रम दिखलाने और युद्ध करने का लोगों में उत्साह था । राजा लोग महलोंमें बैठकर चैन से सो नहीं सकते थे । जो राजा युद्धक्रिया नहीं जानता था वह राज्य को किसी प्रकार सम्भाल नहीं सकता था । जिसमें सेनापति के पूरे गुण होते थे वही राज्य पानेका अधिकारी होता था । महाराज दौलतरावके मरने पर, ब्रिटिश कंटिंजंट और क़िलाकी फ़ौज को छोड़ कर, ग्वालियर में १४००० पैदल १०००० सवार और २५० तोपें थीं । इतनी बड़ी फ़ौज का प्रबन्ध करना बड़ा कठिन काम था । बायजाबाई ने इस सेना का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया । अलग अलग छावनी डालकर उन पर स्वतन्त्र अधिकारी नियत किए । कर्नल स्लीमन ने सन् १८३३ ई०

में एक किताब में लिखा था कि बायजाबाई के ज़माने में सेन्धिया फौज़ के २५ कम्पू (छावनी) थे। उनमें से ३ कर्नल अलकज़ण्डर, ६ आपाजी खंडेराव, ११ कर्नल जेकब और ५ कर्नल फ़ीलोज के अधिकार में थे।

बायजाबाई ने अपने राज्य में पंढारी लोगों और डाकुओं को निर्मूल करने का भी बड़ा प्रयत्न किया। सन् १८१८ ई० में सरजान मालकम साहब ने पंढारियोंका विद्रोह शान्त किया। परन्तु तौ भी वे ग्वालियर राज्य के सरहद्द पर छिप छिपकर लूट मार करते और प्रजा को बहुत कष्ट पहुंचाते थे। सरकार ने इनके नाशके लिए कर्नल स्लीमन, कर्नल स्याक्रोड इत्यादि बड़े बड़े अफ़सर नियत किए थे। राज्यों के पोलिटिकल एजण्टों द्वारा सरकार ने राजाओं से भी सहायता ली। इस काम में बायजाबाई ने ख़ूब ही सरकार को मदद दी। सरकार ने स्वयं, और राजाओं की सहायता से इन दुष्ट लोगोंका नाश किया। ग्वालियर राज्य के कुछ नौकर लोग डाकुओं के अनुकूल थे; परन्तु बायजाबाई ने अपने राज्य के सरसूबे नारायणराव को सख़्त ताक़ीद की कि वे कर्नल स्याक्रौड साहब को जहां तक हो सके वहां तक इस काम में पूरी पूरी मदद दें महारानी की आज्ञानुसार ऐसा ही हुआ *।

* डाकुओं के नाश करने के काम में बायजाबाई ने जो मदद दी थी

इसी प्रकार बायजाबाई ने, राज्य से, अमानी की चाल भी बन्द कर दी। ज़मीन की मालगुज़ारी अमानी पद्धति से, वसूल करने में, सरकारी नौकर लोग, अपना पेट भरने के लिए, प्रजा से बड़ी सख़्ती के साथ, धन वसूल करते थे। इससे प्रजा को बड़ा कष्ट पहुंचता और वह सदैव कङ्गाल बनी रहती। इस पद्धति को बायजाबाई ने बिलकुल नापसन्द किया। उन्होंने अपने दीवान रावजी-त्रिम्बक की सहायता से इसे बन्द करवा दिया। रावजी त्रिम्बक ने इसके बन्द करने में दो वर्ष तक बहुत कुछ

उसका हाल कर्नल हर्वे साहब ने अपनी रिपोर्ट सन् १८६६ ई० में प्रगट किया है।

"In 1833, when Mr. F. D. Macleod Assistant General Superintendent, had visited Gwalior, he reported to the Agent to the Governor-General, that during his entire stay in that territory he experienced the greatest attention, and that great willingness to co-operate with the measures of the British Government was displayed by Her Highness Baiza Bai and by her Suba, Narayan Rao, who was the principal orgon of communication with him; also that he had no occasion to apply for assistance which was not promptly afforded .... Gwalior Darbar may be considered to have lent its co-operation in our measures from the period of Mr. Macleod's visit to Gwalior, viz 1833."

The Sovereign princes and chief's of Central India, Vol: 1

प्रयत्न किया *। इस प्रकार ग्वालियर राज्य की प्रजा को बहुत सुख पहुंचा और मालगुजारी वसूल करने के नियमों में बहुत कुछ सुधार किया गया। परन्तु २६ जनवरी सन् १८३३ ई० के दिन रावजी त्रिम्बक का देहान्त हो गया। बायजाबाई को उनके मरने का बहुत दुःख हुआ। मानो उनका दाहिना हाथ टूट गया। रावजी त्रिम्बक एक विश्वासपात्र पुरुष थे। उन्हों ने बायजाबाई को राजकाज में बहुत मदद दी। इनके मरने पर विलायत के 'एशियाटिक जर्नल' में यह छपा था कि रावजी त्रिम्बक के मरने से, ग्वालियर दरबार में, एक कर्तव्यदक्ष और नीतज्ञ की जगह ख़ाली हुई। और उसका भरना सहज नहीं

* रावजी त्रिम्बक की इस सुधारणा की बाबत Mofussil Akhbar में यह छपा था:-

"* * * * Raoji Trimbak, the Minister, has, during the last two years, endeavoured to do away with the system of farming the land revenue; and though the immediate loss from the inefficiency or misconduct of the *aumils* would seem to have been considerable, yet of the systom of amani management, under common superintendence, contains within itself the seeds of certain improvement to the country, we may, if it be preserved in, yet expect to see even the most distant districts assume a more flourishing aspect. It is a fine country, and under proper fiscal management, might be expected to yield a revenue of a million and a half a money."

है *। इस पर से रावजी की योग्यता प्रगट होती है। रावजी त्रिम्बक बड़े धर्मात्मा और दानी पुरुष थे। उन्हों ने काशी वग़ैरह में घाट और देवालय बनवाये हैं।

रावजी के मरने बाद बायजाबाई ने किसी को दीवान नहीं बनाया। स्वयं राज्य का भार चलाती रहीं। परन्तु कुछ दिनों बाद श्यामजी और दादा खासगीवाले इन दोनों को राजकाज देखने की आज्ञा दी। परन्तु थोड़े दिनों में ही जनकोजीराव और बायजाबाई में खट पट हो गई। दरबार के बहुत से लोग जनकोजीराव की ओर हो गए। अतएव ग्वालियर राज्यका काम काज करना बायजाबाई ने छोड़ दिया। इसका हाल हम आगे अध्याय में देंगे।

---

* "Raoji Trimbak, the Karbari of the Gwalior Court, died on 26th January A. D. 1833. His loss as a zealous and able minister will not, it is feared, be easily replaced."

Asiatic Journal 1833.

छठवां अध्याय।

खटपट

राज्यमें कलह बहुधा राजाके दुर्गुण और कुसङ्गति से उत्पन्न होती है। स्वार्थी लोग इस कलहाग्निकी ज्वाला से, राज्य और राजा दोनों को भस्म कर देते हैं। महाराज जनकोजीराव और बायजाबाई के बीच जो वैमनस्य उत्पन्न हुआ उसका कारण महाराज की अल्पबुद्धि और कुसङ्गति ही कहा जा सकता है। महाराज के गोद आने पर वे सन् १८२७ में गद्दी पर बैठे। उस समय उनकी उमर ११ साल की थी। इतनी छोटी उमर में, किसी लड़के को, गद्दीपर बिठाकर, राज्याधिकार देना, कितना अयोग्य और निष्प्रयोजन है; यह बात हर एक विचारवान पुरुष स्वयं समझ सकता है। बायजाबाई ने राज्य का सारा काम महाराज के बालक होने के कारण, स्वतः किया और महाराज के बड़े होने तक यही क्रम चलाने की, बायजाबाई की इच्छा थी। परन्तु महाराज को गद्दी पर

बैठे तीन चार वर्ष नहीं हुए थे कि दरबार के स्वार्थी लोगों ने अपने स्वार्थ से अथवा किसी अन्य कारण से महाराज का मन बायजाबाई की ओर से फेर दिया। महाराज जनकोजीराव का बर्त्ताव बायजाबाई को अपमान सूचक, असह्य प्रतीत हुआ। अतएव उन्होंने महाराज के ऊपर ख़ूब अच्छी तरह निगाह रखने और उन्हें मनमाना काम न करने देने का संकल्प किया। यह मामला बुरे सलाहकारों की सहायता से दिनों दिन बढ़ता गया। अन्तमें गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिंग तक यह मामला पहुंचा और ब्रिटिश सरकारको इस ओर ध्यान देना पड़ा।

बायजाबाई ने, महाराज जनकोजी राव के साथ, बुरा बर्त्ताव किया ऐसा कई एक इतिहासकार कहते हैं। परन्तु यह सच्चा नहीं मालूम होता। उनके कथन में अतिशयोक्ति बहुत है। बाबू सुरेन्दनाथ राय ने ग्वालियर का इतिहास अङ्गरेज़ ग्रंथकारोंके आधारसे लिखा है उसमें बायजाबाई और जनकोजी राव की कलहकी बाबत यह लिखा है :—"बाई ने अपने अज्ञान बालकको किसी की शिक्षा न देकर राज्य के कामकाज में उसे बिलकुल कोरा रक्खा। वह राज्य के भावी कामकाज चलाने के अयोग्य हो महारानी ने ऐसा प्रयत्न किया; और उन्हें अयोग्य रीति से बन्धन में रक्खा। उसके मन की स्फुर्ति न हो, स्वावलम्बन का स्वाभाविक अंकुर जड़ से नष्ट हो जावे।

संसार का कुछ भी ज्ञान न हो, वह सदैव दास्यवृत्ति में रहकर राजकाज अपने हाथ में न लेसके और उसके मनमें अपनी बाबत सदा भय बना रहे ऐसा बाईने उसके साथ बर्त्ताव किया।" * परन्तु असलियत यह नहीं है। महारानी बायजाबाई का स्वभाव बड़ा तीव्र था। उन्हें ग्वालियर राज्य को स्वतः चलाने की मनुष्य स्वभावानुसार इच्छा थी। ये दोनों बातें महाराज जनकोजी राव को बहुत बुरी लगीं। और उन्होंने कलह का बीजारोपण किया। बस इतनाही नहीं कहा जासकता; असली कारण ग्वालियर दरबारके कुटिल और दुष्ट लोगोंकी सलाह और महाराज जनकोजी राव की अल्प बुद्धि और उच्छृङ्खलवृत्ति ही है। ग्वालियर के एक दूसरे इतिहास लेखक ने ऐसा लिखा है:—"दौलतराव की आज्ञानुसार बायजाबाई ने जन्म भर राज्य चलाने का निश्चय किया और जनकोजी राव को गोद लेकर अपने पास शिक्षा देने के निमित्त रक्खा। परन्तु युवा होनेपर जनकोजीरावने कुछ कुमार्गी और स्वार्थी लोगों की सङ्गत से बायजाबाई की शिक्षासे मुक्त होने का विचार निश्चय किया। जनकोजीराव सेन्धिया को इस अनुपकारी काममें नए पुराने होनेको इच्छा वाले लोगों ने सहायता पहुंचाई। अङ्गरेज़ लोग भी नए राजा के गद्दीपर बैठने से उसके नाम का हर एक सरकारी क़ाग़ज़ पर सिक्का मुहर

* Gwalior By Roy page 333.

हुऐ बिना किसी क़ाग़ज़को सच्चा नहीं मानते थे। इस कारण महाराज जनकोजीराव का पक्ष और भी अधिक बलवान होगया। उन सबों ने बायजाबाई से उनको दूर करनेका अधिक प्रयत्न किया।" इस कथन में बहुत कुछ सच्चाई है ऐसा हमें प्रतीत होता है।

जनकोजीराव को बायजाबाई ने गोद लेकर अपनी लड़की की लड़की का ब्याह इनके साथ कर दिया और ग्वालियर राज्य का स्वामी बनाया; इस बात पर ध्यान रखके जनकोजी राव को अपनी तेजस्वी और व्यवहार चतुर माता की आज्ञा पालन करना चाहिए था। ऐसा करना उनका कर्तव्य था। परन्तु उन्होंने इस कर्तव्य कर्म से विमुख होकर, बुरे सलाहकारों की सलाह से, कुमार्ग स्वीकार किया। इस कारण बायजाबाई के मन में दिनों दिन उनके ऊपर से प्रेम कम होता गया। ग्वालियर दरबार के विश्वासपात्र रेज़िडेण्ट मेजर स्टुअर्ट साहब के कानों तक जब यह बात पहुंची तब उन्होंने आपसमें मेल करा देनेका बहुत कुछ उद्योग किया परन्तु सब निष्फल गया!

जनवरी सन् १८२९ ई० में भारत के मुख्य सेनापति लार्ड कोंबरमियर ग्वालियर में सेना देखने को पधारे। उस समय उन्होंने जनकोजी राव से भी मुलाक़ात की। महाराज जनकोजीराव और लाट साहबमें जो बातचीत हुई उसकी बाबत उनके एडीकाङ्ग(परिचारक) मेजर आर्चर

ने अपने प्रवास वर्णन नामक पुस्तक में ऐसा लिखा है:—

"राजा साहब बिलकुल बालक अनुमान १४ वर्ष के हैं। उनका चेहरा हसमुख और सौम्य है। उनका रङ्ग गोरा देखनेमें अच्छा लगता है। परन्तु वे बिलकुल सुस्त जिज्ञासा शून्य और व्यवहार में मन्दोत्साह दिखाई पड़ते थे। तथापि कमांडर-इन-चीफ़ सरीखे बड़े अफ़सर से पहले पहल भेंट होनेपर वे घबड़ाये नहीं। उन्होंने हमारे सामने पान खाया। इस प्रकार से पान खाना उनके दरबारी लोग और पूर्वीय लोग असभ्यता नहीं मानते।" * इस लेख पर से भी ज़ाहिर होता है कि उनकी बाबत उनका भी अच्छा विचार नहीं था।

महाराज जनकोजीराव रोज़बरोज़ नए नए अत्याचार और अनुचित व्यवहार करने लगे। सन् १८३० ई० में बायजाबाई की नातिन जो जनकोजीराव को व्याही

---

* "The Raja is quite a lad, about fourteen years of age, of a very pleasing and mild expresson of countenance; he is fair and good looking ; but appears dul, inapprehensive, and but little interested in what goes on arount him, he was not, however, embarrassed, though it was his first appearance before a stranger of the commonder-in-chif's rank. In common with his court, and all Orientals, who consider it no want of politeness, he chewed betel while we were present."

--*Tours in upper India page 41-42.*

थीं, मर गई। इस पर जनकोजीराव ने अपना दूसरा विवाह किया। इस विवाह में उन्होंने अपने अत्याचार की हद्द कर दी। उन्होंने अपने समीप के लोगों पर बान चलाए जिससे एक आदमी मर गया। इस कारण बायजाबाई को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने जनकोजीराव को ऐसा काम करने से मना किया। परन्तु यह बात उन्हें अच्छी न लगी। उन्होंने रेजिडेण्ट साहब से बार बार इस अनबन की बाबत कहना आरम्भ किया। इस कारण बायजाबाई को बड़ा दुःख पहुंचा। उस समय ग्वालियर दरबार के रेजिडेण्ट मेजर स्टुअर्ट साहब थे। ये बड़े भले मानस और विचारवान पुरुष थे। उन्होंने महाराज को अच्छे प्रकार समझाया बुझाया। परन्तु सब निष्फल गया। सन् १८३० ई० में जब महाराज की उमर १५ वर्ष की थी मेजर स्टुअर्ट और महाराज की भेंट हुई। इस भेंट का हाल मेजर साहब ने इस प्रकार लिखा है:—
"आपका क्या हाल है" ?

"मैं प्रसन्न हूं, परन्तु सारे राज्य का अधिकार बाई साहबा के हाथ में है।"

मैंने उन्हें उत्तर दिया कि:—"ठीक है। तुम अभी बालक हो इस कारण तुम्हें राज्याधिकार अपने हाथ में लेने की इच्छा करना अच्छा नहीं है। तुम किस प्रकार चलते हो इस काम की देख भाल रखने को बाई साहबा

बहुत चतुर हैं। तुम से बाई साहबा जिस प्रकार बर्ताव करें उसमें यदि तुम्हें कुछ उज़् हो तो मुझसे कहना मैं उसकी बाबत अच्छा प्रबन्ध कर दूंगा।"

परन्तु महाराज ने इस प्रश्नका उत्तर "मैं अच्छा हूं, मुझे कुछ नहीं कहना है।" इस प्रकार बेपरवाही से दिया। फिर मैंने उनसे पूँछाः—"जब तुम्हारा सब ठीक ठाक है और तुम को बाई साहबा से खटपट करने की कोई ज़रूरत नहीं है तो नौकरों के ऊपर ब्याह के समय आपने बान क्यों चलाये? आपने ऐसा अद्भुत काम क्यों किया? उस समय एक आदमी तुरन्त ही मर गया; क्या यह बात तुम्हें मालूम नहीं?" इस प्रश्न का उत्तर भी महाराज ने बड़ी बेपरवाही के साथ यह दियाः—"ईश्वर की जैसी इच्छा थी वैसा हुआ!" इस पर मैंने उनसे यह कहाः—"महाराज, ईश्वर ने तुमको तुम्हारी निकृष्ट स्थिति से इतना ऐश्वर्य्य दिया यह तुम्हारे ऊपर बड़ा उपकार किया। यह दूसरों के साथ अपकार करने के लिए नहीं है! यदि तुम इसी प्रकार अपना बर्ताव बनाए रक्खोगे तो तुम्हारी बाबत लोगों का विचार बुरा हो जायगा और तुम्हें कोई अच्छा न कहेगा।" इस पर उन्होंने उत्तर दियाः—"मैंने अब यह सब छोड़ दिया है।" अर्थात इस प्रकार के सब काम काज जैसा कि वे अब तक करते थे करना छोड़ दिया; महाराज के शब्दों का अर्थ यही

मेरी समझ में आया । मैंने कहाः—"यह बड़े आनन्द की बात है।" परन्तु महाराज ने मेरी इस भूल को जल्द सुधार दिया ! उन्होंने स्पष्ट कह दियाः—"जैसा आपने समझा वैसा मेरे शब्दों का अर्थ नहीं है। मेरा मतलब यह है कि मैंने लोगों के कहने सुनने की ओर ध्यान देना बिलकुल छोड़ दिया है। मुझे किसी की ज़रूरत नहीं है।"

उपरोक्त वाक्य मेजर स्टुअर्ट साहब के कहे हुए हैं। इस पर से साफ़ ज़ाहिर होता है कि महाराज जनकोजी-राव का बर्ताव किसी विचारवान पुरुष को अच्छा न प्रतीत होगा।

सन् १८३० ई० में मेजर साहब का ग्वालियर से तबादला हो गया। ग्वालियर छोड़ते समय भी उन्होंने महाराज से भेंट की। और उनसे सब हाल हवाल पूँछा। उस समय भी महाराज ने स्पष्ट कहाः—"मैं पूर्ण सुखी हूं।" इस समय भी मेजर साहब ने महाराज को बहुत अच्छा उपदेश दिया और राजकाज चलाने के लिए बाई साहबा के पास हाज़िर रहना कितना हित कर है; यह सब उन्होंने महाराज साहब को ख़ूब अच्छी तरह से समझाया। उस समय महाराज ने जवाब दियाः—"जब मेरी तबीयत अच्छी रहती है तब मैं बाई साहबा के पास हाज़िर रहता हूं।" इन सब बातों का सारांश मेजर स्टुअर्ट साहब के एक ही वाक्य में इस प्रकार लिखा हैः—

"महाराज ने मेरे ऊपर किञ्चित मात्र विश्वास नहीं प्रगट किया और न अपना दुःख मुझ से कहा। मैंने जो उन्हें मदद देने को कहा था उसकी ओर उन्होंने ध्यान भी न दिया; और अपनी मनमानी और बेपरवाही को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया *।"

मेजर स्टुअर्ट सरीखे, ग्वालियर दरबार के, सच्चे हित-चिन्तक और निःपक्षपाती रेजिडेण्ट ने, अल्पवय महाराज की बाबत जो अपना मत प्रगट किया है उस पर से महाराज के बर्ताव और व्यवहार का सच्चा चित्र साफ़ दिखाई पड़ता है। ऐसे अज्ञान और विचार शून्य बालक राजा के हाथ में राज्य देना यह बात बायजांबाई सरीखी चतुर और राजकाज निपुण स्त्री को ठीक नहीं मालूम हुई। इसी कारण ऐसे बालक राजा को उन्होंने स्वतंत्रता नहीं प्रदान की अथवा राज्याधिकार नहीं दिया। इस बात का कलङ्क बायजाबाई के माथे मढ़ना कि उन्हों ने स्वयं राज्य चलाने के लोभ के कारण महाराज को राज्याधिकार नहीं दिया यह कहना बिलकुल ठीक नहीं। परन्तु सच्चा हाल न मालूम होने से किन्हीं किन्हीं इतिहासकारों ने भूल से उसके विरुद्ध लिखा है ऐसा जान पड़ता है।

मेजर स्टुअर्ट ने इन सब बातों का समाचार ब्रिटिश

* Major Stewart's despatches quoted in Sutherland's Sketches. page 191.

सरकार को पहुंचाया। परन्तु बायजाबाई राजकाज चलाने के योग्य थीं इस कारण उस समय देशी राज्यों की अंतर्व्यवस्था में हाथ डालना सरकार को मंजूर न था अतएव यह कलहाग्नि कुछ दिनों तक प्रज्वलित रही। राज्य के कलह प्रिय स्वार्थी सरदारों और फ़ौजी अधिकारियों से जब तक सहायता रूपी तैल नहीं मिला और सरकारी अनुकूलता की वायु का संचार नहीं हुआ तब तक उस ज्वाला ने अपना प्रभाव पूर्णरूप से नहीं प्रगट किया। परन्तु आगे दोनों बातें प्राप्त हो जाने से वह ज्वाला ख़ूब प्रज्वलित हुई और ऐसा मालूम पड़ने लगा कि भविष्यत में किसी एक की आहुति लिए बिना यह ठण्डी न होगी। कर्नल सदर लेण्ड साहब ने उस समय की ग्वालियर की स्थिति की बाबत जो अपना मत प्रगट किया है उससे यह बात ध्वनित होती है। "बायजाबाई साहबा यह हमारी सहायता के बिना राजकाज चलाती हैं। अब तक बालक राजा ने राज्य के अपने अनुयायी सरदारों के साथ मिलकर बायजाबाई के राजकाज अथवा सामर्थ्य पर कुछ अधिकार पाया हो, ऐसा दिखाई नहीं पड़ता। परन्तु जैसा जैसा वह बड़ा और ज्ञानवान होता जायगा उसीके अनुसार उसे यदि साधारण महत्त्वाकांक्षा और मनुष्यता के उचित मनोविकार होंगे तो भविष्यत में जो राज्याधिकार उसे प्राप्त होने वाले हैं उसमें का

कुछ भाग अपने हाथ में लेने की उसे इच्छा बिना हुए नहीं रहेगी। इसी के अनुसार राज्य के सरदार और नीतज्ञ लोगों में से कुछ सदैव उदय होने वाले सूर्य के तुल्य नवीन राजा की ज़रूरत अधिक है और कुछ स्त्री के राज्य करने की अपेक्षा पुरुष का राज्य अधिक पसन्द करते हैं। ऐसे सब लोग बालक राजा का पक्ष शीघ्र स्वीकार कर लेंगे। और ऐसा होने से उसके संयुक्त बल के आगे रीजण्ट रानी का राज्य बिलकुल नहीं ठहरेगा। ख़ज़ाने का अधिकार और राज्य के अनेक और साधनों की सहायता से बायजाबाई के पक्ष की कुछ दिनों तक जीत रहेगी और उसके प्रतिपक्षी को थोड़े दिनों तक मुक़ाबला करना पड़ेगा। सम्भव है कि इस विवाद से ब्रिटिश सरकार बिलकुल अलग रहेगा। हम किसी के ऊपर कृपा न करके, दोनों ओर को जितनी ज़्यादा स्वतंत्रता देंगे उतना ही उस राज्य का हित साधन होगा। उसकी राज्य व्यवस्था अधिक राष्ट्रीय और अधिक कार्य साधक होगी। और ऐसा करने से हमको उस राज्य के राजकाज में हाथ डालने की आवश्यकता उतनी ही कम मालूम होगी"*। परन्तु

* From the period up to the present there has been little at Gwalior calling for the interference or notice of the British Government in the affairs of that principality. The Baiza Bai continues her administration without requiring our support, and the Young Raja, if he has any adherents in the state, has so for faild to make any impression on her

कर्नेल सदरलैण्ड के विचारानुसार ब्रिटिश सरकार के तटस्थ रहने से ग्वालियर राज्य का भला न होकर उलटा बुरा हुआ। ऐसा मिल प्रभृति इतिहासकारों का मत है।

ग्वालियर के रेजिडेण्ट मेजर स्टुअर्ट साहबने ग्वालियर दरबार की स्थिति और बायजाबाई का राजकाज सम्बन्धी सब ब्योरा सरकार को समय समय पर लिख भेजा था। उस पर से, सरकार को, बायजाबाई की योग्यता, पूर्णरूप से विदित हो चुकी थी। अतएव सरकार ने किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना मुनासिब नहीं समझा। सन्

---

power. It may he supposed that as he advances in years and appoaches his manhood. he must, if he has the ordinary ambition, and the proper feelings of a man, desire to exercise a portion of that power which sooner or later must be his own ; that those of the chiefs of the state who are likely to worship the rising sun, as well as those who would prefer the Government of a man to that of a woman, will at no very distant period, array themselves on his side; and that the Government of Regent will fall before their united force. The command of treasury and the resourses of the state must, for a time give a preponderance to her party, and may enable her to prolong the struggle. In such a contest it will be very possible for the British Government to stand aloof and more we allow the parties to have a fair field and no favour, the more shall we secure a national and efficient Governmant for that country, and the less will it hereafter be necessary for us to interfere in its affairs."

१८३७ ई० में स्टुअर्ट साहब का तबादला हैदराबाद को हो गया और उनकी जगह पर मिस्टर क्यावेंडिश साहब ग्वालियर दरबार के रेजिडेण्ट नियत हुए। पहले पहल तो इनका मन बायजाबाई के अनुकूल रहा और उन्होंने ग्वालियर की राज्य व्यवस्था पसन्द करके बाई साहबा और उनके काम की कई एक बार प्रशंसा की। परन्तु कुछ दिनों बाद, महाराज जनकोजीराव, जैसे जैसे बड़े होते गए, वैसे वैसे ही उनका पक्ष प्रबल होता गया और कलह बढ़ती गई। उस समय ब्रिटिश सरकार ने बायजाबाई के नाम का सिक्का बन्द करने और महाराज के नाम का सिक्का चलाने का आग्रह किया। महाराज के सारे बन्धन कम कर दिए गए। इस कारण महाराज के पक्ष के लोगों को अच्छा मौक़ा हाथ लगा और उन्होंने महाराज और उनकी माता के बीच में अधिक कलह उत्पन्न कराई। जिसने बड़ा प्रचंडरूप धारण किया। इन सब बातों की सूचना नवीन रेज़िडेण्ट क्यावेंडिश साहब ने गवर्नर जनरल को दी। उस समय लार्ड विलियम बेंटिङ्क साहब भारत के गवर्नर जनरल थे। उन्होंने राजनैतिक कारण से अथवा ग्वालियर दरबार की स्थिति का समक्षज्ञान पाने के लिए, स्वयं ग्वालियर आकर, बायजाबाई और जनकोजीराव से भेंट करने का निश्चय किया। इसी निश्चय के अनुसार १८ दिसम्बर सन् १८३२ ई० के दिन लाट साहब मय अपनी

पत्नी के ग्वालियर में आ दाख़िल हुए। लाट साहब के आने पर बायजाबाई को बहुत कुछ संतोष हुआ। उन्हों ने लाट साहब के स्वागत का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। जिस समय बायजाबाई की भेंट लाट साहब से हुई, उस समय का वर्णन एक यूरोपियन ने किया है। उस पर से बायजाबाई के ऐश्वर्य्य और सम्पत्ति की कल्पना सहज में बहुत कुछ की जा सकती है। उसका सारांश यह है:—

"२० दिसम्बर सन् १८३२ ई० में गवर्नर जनरल साहब ग्वालियर के महाराज से वापसी की भेंट करने गए, उस समय महारानी बायजाबाई और महाराज जनकोजीराव सेन्धिया यह दोनों लाट साहब से मिलने के लिए धोलपुर तक आए थे। उस समय उनके साथ कुल ३०,००० आदमी थे। उनका कैम्प ग्वालियर की हद्द चम्बल नदी के किनारे पर पड़ा था। आगरे की हद्द में दो अथवा तीन मील तक पानी के कारण हमारा कैम्प नदी के इसी पार था। मराठों के कैम्प से हमारा कैम्प दूर होने और लाट साहब के दोपहर के बाद तीन बजे कूच करने के कारण, मराठों के कैम्प की सुन्दरता और विशालता देखने का मुझे मौक़ा नहीं मिला। इस समय मराठों की सेना लाट साहब के सन्मानार्थ फ़ौजी ठाठ बाठ से सज धज कर आई थी। इस कैम्प से नदी के किनारे तक जाने का जो रास्ता था वह बहुत ही कम चौड़ा था।

नदी के किनारे टीलों पर पैदल पल्टन के सिपाही हाथ में तलवार और तोड़ेदार बन्दूकें लिए दो मील तक बराबर एक सरीखे खड़े थे । वहां पर १५ हज़ार फ़ौज की दुतर्फ़ा क़तार लगी थी । उनके पीछे सवारों की तलवारें चमकती थीं । ये सब लोग लाट साहब को सलामी देने को तय्यार खड़े थे । यह दृश्य बड़ा ही अपूर्व था । रीति के अनुसार लाट साहब का दरबार हुआ । महाराज जनकोजीराव एक सजे सजाये हाथी पर सोने के हौदे में बैठकर, लाट साहब से मिलने को रास्ते में आकर ही मिले । दोनों की भेंट होने पर बन्दूकों का फैर किया गया । बाद को लाट साहब अपने हाथी पर से महाराज के हाथी पर गए । और दोनों दरबार के एक उत्तम तम्बू में जो पहले से तय्यार था आकर उतरे । यह तम्बू इसी समय के लिए, ख़ूब अच्छी तरह सजाया गया था। महारानी बायजाबाई की भेंट तम्बू में लाट साहब से चिक डालकर परदे के भीतर से हुई । उनको लाट साहब ने बड़े अदब से सलाम किया। पीछे को लाट साहब और बायजाबाई में मिस्टर म्याक्नाटन साहब द्वारा कुछ समय तक बातचीत हुई । नियमानुसार नज़र भेंट, अतर पान सुपारी, होकर दरबार बरख़ास्त हुआ *।

दूसरे दिन सबेरे मराठों की फ़ौज ग्वालियर को वापस हुई और लाट साहब ने एक दिन के बाद—२१

दिसम्बर को वहां से कूंच किया। इसके बाद तोपख़ाना भी वापस हुआ। चम्बल नदी का ग्वालियर के ओर का बीहड़ आगरे के ओर के बीहड़ से अधिक विकट था इस कारण वहां से सुरक्षित तोपों का लाना क़रीब क़रीब असम्भव था। इसी कारण २१ ता० को सारी फ़ौज आगे भेजकर, तोपख़ाने को स्वतंत्रता पूर्वक लाने का विचार किया गया। हमारे आ जाने के बाद दूसरे दिन महारानी बायजाबाई ने लेडी विलियम बेंटिङ्क से भेंट की। इस देश में यूरोपियन स्त्रियों से मिलने की चाल बहुत कम है। परन्तु जब बायजाबाई ने लेडी विलियम बेंटिङ्क से मिलने की इच्छा प्रगट की; तब इस भेंट का अवसर प्राप्त हुआ। पहले बायजाबाई ने नियमानुसार उनकी पेशवाई की। उस समय उनके साथ उनकी कन्या चिमनाबाई (यह आपा साहब पाटनकर को व्याही थीं) और कई एक सरदारों की स्त्रियां थीं। यूरोपियन स्त्रियों को इस भेंट का बड़ा आश्चर्य्य हुआ। वे लेडी विलियम बेंटिङ्क को राज स्त्रियों के स्वागत करने में मदद देने को आई थीं। यूरोपियन स्त्रियों को चिमनाबाई का सौन्दर्य्य देख कर, उनके आगे अपना रूप कुछ भी नहीं है; ऐसा उन्हों ने स्वीकार किया। उन्होंने उनका अप्रतिम लावण्य, उन का गौर वर्ण, उनके नेत्र और सुकुमारता को देखकर उनके रूपकी बहुत कुछ प्रशंसा की। इस समय लेडी विलियम

बेंटिङ्क ने महारानी बायजाबाई को कुछ चीनीकी वस्तुयें और गहना भेंट किया। यह सब चीज़ें उनकी भेंट के बाद तीन चार घंटे तक सबों के सामने दर्शनार्थ रक्खी रहीं। वे चीज़ें बहुत ही सुन्दर थीं ऐसा सुनते हैं। महारानी साहबा पालकी में बैठकर आईं थीं। उस समय उनके साथ छः परिचारिका पैदल चलती थीं। पालकी के ऊपर लाल मखमल की ज़री बूटेदार चादर पड़ी थी। वह बहुत क़ीमती थी। उसके चारों ओर मोतियों की झालर लटकती थी। महारानी साहब की दासियां और अन्य स्त्रियां बहुत ही अमूल्य वस्त्र और गहने पहने थीं। इस कारण उनकी ओर देखने से भी आंखें चौंधिया जातीं थीं।

"दूसरे दिन सबेरे, महाराज जनकोजीराव सेन्धिया लाट साहब से मिलने को आए। उनका भी ठाठ बाठ देखने योग्य था। वे स्वयं एक सजे हुए हाथी पर बैठे थे। हाथी के ऊपर ज़री की झूल और गले में सोने की माला पड़ी थी। वह विचित्र प्राणी अलंकारों से भूषित बहुत ही अच्छा दिखाई पड़ता था। वह मन्द मन्द चलकर मानो अपना ऐश्वर्य संसार पर प्रगट करता था। महारानी बायजाबाई साहबा के भाई हिन्दूराव घाटगे, दामाद आपा साहब पाटनकर और दरबार के मुख्य मुख्य सरदार लोग महाराज के साथ बड़े सज धज के साथ

हाथियों पर बैठकर आए थे। उनके वैभव के सामने शृङ्गाराभि रुचि लज्जित होकर, वह बिचारी वहीं लोप हो गई। महाराज की लाट साहब से मुलाक़ात होकर, कुछ देर तक एकांत में भी भेंट हुई। हिन्दूराव और आपा साहब की महाराज से अनबन है यह जान कर लाट साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ। महाराज और लाट साहब की एकान्त में तीन घंटे तक बातें हुईं। इस एकान्त सम्मेलन में क्या क्या बातें हुईं यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता। परन्तु हां, यह सम्भव है कि महाराज ने राज्याधिकार पाने के लिए लाट साहब से सहायता पाने के लिए बहुत कुछ कहा सुना होगा"।

"इस भेंट के बाद, दोपहर के समय, लेडी विलियम बेंटिङ्क कई एक अङ्गरेज़ स्त्रियों को अपने साथ लेकर, महारानी बायजाबाई की भेंट करने को गईं। महारानी साहब की कन्या चिमनाबाई ने इन सबों का उत्तम प्रकार से आदर सत्कार किया। चिमनाबाई के आदर कौशल्य और रीति भांति को देखकर, अङ्गरेज़ स्त्रियों ने, उनके रूप के अनुसार गुणों की भी बहुत कुछ प्रशंसा की। इस समय पर, महारानी बायजाबाई ने लेडी विलियम और अन्य अङ्गरेज़ स्त्रियों को बहुमूल्य वस्तुयें भेंट कीं। इन सब चीज़ों का परिचय चिमनाबाई ने अङ्गरेज़ रमणियों को कराया। इस कारण वे सब बहुत प्रसन्न हुईं"।

"गवर्नर जनरल साहब ने महाराज जनकोजीराव से बदले की भेंट की और पश्चात बायजाबाई से भी। बायजाबाई ने नियमानुसार चिक् के पीछे बैठकर लाट साहब से भेंट की। उस समय हिन्दूराव घाटगे मराठी पोशाक पहने, लाट साहब की अभ्यर्थना के लिए हाज़िर थे। बायजाबाई साहब और लाट साहब की बहुत देर तक राजकीय विषय पर भी बातें होती रहीं। अन्त में बड़े नम्र भाव से लाट साहब ने बायजाबाई को सलाम की और बिदा हुए"।

जिस समय लाट साहब और महाराज जनकोजीराव की भेंट हुई उस समय चीफ़ सेक्रेटरी मिस्टर म्याक्नाटन, ग्वालियर के रेज़िडेण्ट मिस्टर क्यावेंडिश और लखनऊ के रेज़िडेण्ट मेजर जान लो यह हाज़िर थे। इस भेंट में जो बातचीत हुई उसका सारांश १८ दिसम्बर सन् १८३२ ई० के एक ख़लीता में दिया हुआ है। उसे संक्षिप्त रीति से हम नीचे लिखते हैं:—

"गवर्नर जनरल साहब ने महाराज से यह कहा:— जिस कारण से दोनों सरकारों के बीच में स्नेहभाव है उसी कारण से मुझ पर पूर्ण विश्वास रखकर, और मुझसे क्या सहायता चाहिए यह आप मुझे स्पष्ट रूप से कहें। महाराज ने गवर्नर जनरल साहब की इस कृपा के बाबत उन्हें अनेक धन्यवाद दिए और अपना सारा हाल कहना

शुरू किया" । उस हाल का सारांश यह है कि "मैं इतना बड़ा हुआ हूं, शास्त्र आज्ञा और सेन्धिया घराने की चाल के अनुसार, राज्याधिकार मुझे मिलना चाहिए" । लाट साहब ने महाराज का सारा हाल सुन कर कहा:—"आप बड़ी ग़लती पर हैं । राज्याधिकार देने अथवा लेने का मुझे कुछ भी अधिकार नहीं है । क्योंकि सेन्धिया सरकार का राज्य बिलकुल स्वतंत्र है । बृटिश सरकार ने न तो किसी को गद्दी पर बिठलाया और न किसी को वह उतार सकती है । समय के अनुसार, राज्य के नियम बद-लने का कोई प्रयोजन नहीं दिखाई पड़ता।" लाट साहब के यह वाक्य सुन कर महाराज ने पूंछा:—"फिर मुझे गोद लेने से क्या मतलब ?" लाट साहब ने जवाब दिया:—"आपको गोद लेने का उद्देश्य यह है कि सेन्धिया घराने का नाम चले और वारिस की बाबत झगड़ा खड़ा होने पर कोई अनुचित और बुरा परिणाम न निकले । बृटिश सरकार ने बायजाबाई से, आपको अमुक वर्ष राज्याधिकार दिलवा देंगे ऐसा इक़रार नहीं किया है । बायजाबाईकी कृपा से आपकी गोद नशीनी हुई, सेन्धिया की गद्दी के आप वारिस हुए, यह आपको अपना अहोभाग्य समझना चाहिए। इस उपकार का बदला इस प्रकारसे मत चुकाओ "। महाराज ने लाट साहब के कथन को अपने प्रतिकूल समझ कर यह प्रश्न किया:—"अभी नहीं, तो फिर कब मुझे

राज्याधिकार मिलेगा?" इस पर लाट साहब ने कहाः—"इस प्रश्न का उत्तर हम नहीं दे सकते।" अन्त में लाट साहब ने कहाः—"महाराज, आप इस बात पर अच्छी तरह विचार करें। मेजर स्टुअर्ट जिस समय ग्वालियर के रेजिडेण्ट थे उस समय उन्होंने महाराज दौलतराव सेन्धिया को गोद लेनेकी बाबत बार बार कहा; परन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपने मरने से पहले दरबार में यह इच्छा प्रगट की थी कि मेरे पश्चात बायजाबाई राज्य का कार बार संभालें। उसीके अनुसार, महाराज दौलतराव के मरने पर, बायजाबाई ने राज्याधिकार अपने हाथ में लिया। गद्दी के अधिकारी की बाबत कुछ झगड़ा न उठ खड़ा हो; इस विचार से तुमको गोद लिया। परन्तु अमुक वर्ष आपको राज्याधिकार दिया जायगा ऐसा उन्हों ने बृटिश सरकार से कोई इक़रार नहीं किया। सारांश यह है कि जो आप ऐसे उच्चपद पर आरूढ़ हुए इसका कारण बायजाबाई ही हैं। बृटिश सरकार से इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। आपको राज्याधिकार का सुअवसर शीघ्र ही प्राप्त होगा। तब तक आप शान्तिधारण करें। आपके सिवाय बायजाबाई किसी दूसरे को गद्दी का अधिकारी न बनायेंगी; यह मैं उनसे कह दूंगा इस पर आप विश्वास रक्खें। परन्तु ऐसा न करके, यदि आप कुछ दङ्गा फ़िसाद, लड़ाई झगड़ा करेंगे और बायजाबाई

को राज्य से अलग करने का उपाय सोचेंगे: तो फिर उस का जो कुछ अच्छा या बुरा फल होगा, वह आपको भोगना पड़ेगा। इस गड़बड़ में यदि आपकी जान चली जाय या आप क़ैद कर लिए जावें तो बृटिश सरकार आपका पक्ष लेकर मध्यस्थ न बनेगी, और न गद्दी के अधिकार की बाबत हांमी भरेगी।" इस प्रकार लाट साहब ने महाराज से अपना विचार स्पष्ट कह दिया और अच्छा उपदेश दिया। महाराज ने भी लाट साहब के कथनानुसार बर्ताव करने का वादा किया।

इन उपरोक्त बातों पर से यह स्पष्ट है कि भारत सरकार की यह राय थी कि बायजाबाई साहब राज्यका सब काम काज करें और महाराज उनकी आज्ञा में चलें। परन्तु महाराज ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने फिर अपने कुटिल मंत्रियों की प्रेरणा से बायजाबाईके विरुद्ध खटपट आरम्भ की। उन्होंने ग्वालियर के रेजि़डेण्ट मिस्टर क्यावेंडिश की मार्फ़त लाट साहब से बायजाबाई की शिकायत करना आरम्भ की। मिस्टर क्यावेंडिश को महाराजका यह काम पसन्द था ऐसा नहीं दिखलाई पड़ता। २८ मार्च सन् १८३३ ई० में उन्होंने महाराजको जो ख़लीता भेजा था उसमें उन्होंने उनको बहुत कुछ नसीहतें की हैं और लाट साहबके उपदेश की फिर से महाराज को याद दिलाई है। इतनाही नहीं वरन् "बायजाबाई साहब यह

राज्य की मालिक हैं और अङ्गरेजों को उनके राजकाज में हाथ डालने का अधिकार नहीं है, इस लिए मैं आपसे यह सिफ़ारश करता हूं कि आप लाट साहब के उपदेश के अनुसार और अपने वाक्यों के अनुसार अपना बर्ताव रक्खें। आप बायजाबाई साहब की आज्ञानुसार चलें, और किसी प्रकार से लड़ाई झगड़ा न पैदा करें। ऐसा बर्त्ताव यदि आप करेंगे तो बृटिश अधिकारियों को सन्तोष होगा; और यदि आप दङ्गा फ़साद करेंगे तो—आपकी वर्तमानदशा कैसी ही हो—आपको अधिक बंधनों में फसना पड़ेगा ; और उनसे आपका छुटकारा होना कठिन हो जायगा। फिर बृटिश सरकार अथवा मैं आपके बात की ओर बिलकुल ध्यान न दूँगा। आपको जो कुछ कहना होगा और वह बात लाट साहब पर विदित न हुई होगी तो मैं उसे पहले बायजाबाई साहब से कहूंगा और उस बाबत उनकी राय लेकर, पीछे को आपका ख़लीता आगे रवाना करूँगा। आपका ख़लीता अथवा आपका निजका पत्र व्यवहार बिना बायजाबाईको बताये मैं आगे नहीं रवाना करूँगा। आपको यह बात ध्यान में रखना चाहिए कि आपसे भेंट करने के लिए लाट साहब ने बायजाबाईसे पहले आज्ञा मांग ली थी। और जो आपस में बातें हुईं वह सब उन्होंने पीछे से उनसे कही थीं। उनकी सम्मति लिए बिना आपका अथवा मेरा

किम्बा गवरनर जनरल और आपका पत्र व्यवहार होना बिलकुल असम्भव है। बाई साहब अधिक प्रेम पूर्वक आपसे बर्ताव करें ऐसा उनको कहने के लिए जो आपने लिखा, उस बाबत मेरा यह कहना है कि यदि आप बाई साहबको अपने बर्ताव से संतुष्ट रक्खेंगे तो वे आप के साथ बहुत प्यार का बर्ताव करेंगी। आप फ़ज़ूल की तकरार करके, बुरे विचारों को अपने मन में लाते हो। इससे आपके सङ्कट कम न होकर उल्टे बढ़ते जाते हैं। आपको बायजाबाई साहब को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिए और लाट साहब के वाक्यों को सदैव आंखों के सामने रखना चाहिए *।

इस प्रकार महाराज जनकोजीराव सेन्धिया को बायजाबाई की आज्ञानुसार चलने को ग्वालियर के रेज़िडेण्ट मिस्टर क्यावेंडिश साहब ने साफ़ साफ़ लिखा था। इस पर से गवर्नर जनरल साहब और ग्वालियर के रेज़िडेण्ट इन दोनों को महाराज जनकोजीराव का बर्ताव पसन्द नहीं था; यह ज़ाहिर होता है। ग्वालियर में बखेड़े का मूल कारण क्या था और इसमें किसका दोष अधिक था यह बात अब पाठकों की समझ में सहज ही आ

* Letter from the Hon'ble Mr. Cavendish to Jonkoji Rao Scindiah, in reply to one recieved from the Maharaja, dated 28th March 1833.

सकती है। महाराज जनकोजीराव ने अल्पवय और अपरिपक्व बुद्धि होने के कारण, ग्वालियर दरबारके कुटिल और कलहप्रिय लोगों की मंत्रणा से जो काम किया इसमें कुछ आश्चर्य नहीं। परन्तु "एक हाथ से ताली नहीं बजती" इस कहावत के अनुसार, महाराज के बुरे व्यवहार से जो क्रोध बायजाबाई को उत्पन्न हुआ उससे उनके द्वारा भी कुछ भूल हो गई हो, यह सम्भव है। परन्तु इसमें अधिक दोष बायजाबाई का ऐतिहासिक प्रमाणों पर से नहीं पाया जाता। यह स्पष्ट है।

सातवां अध्याय।

बनवास

ग्वालियर के रेजिडेण्ट मिस्टर क्यावेंडिश साहब ने महाराज जनकोजीराव और बायजा-बाई की तकरार मिटाने का उद्योग किया परन्तु सब निष्फल गया। रोज़ बरोज़ उनका वैमनस्य बढ़ता ही गया। अन्त में १० जोलाई सन् १८३३ ई० को ग्वालियर में ग़दर आरम्भ हो गया। महा-राज जनकोजीराव ने, ग्वालियर के दो फ़ौजी कम्पू 'वरुण' और 'बहादुर' पहले से ही अपनी ओर मिला रक्खे थे; उनके अफसरों को यह विश्वास दिलाया कि गद्दी पर बैठने के बाद तुम ऊँचे ऊँचे अधिकारों पर नियत किये जावोगे। महाराज ने कर्नल जेकब साहब को भी अपनी ओर करने और उनका कम्पू अपने अधिकार में लाने का उद्योग किया। परन्तु वे स्वयं इस कार्य में शामिल होने को राज़ी न हुए। परन्तु उनकी फ़ौज महाराज की ओर मिल गई। इस प्रकार से फ़ौज की पूरी पूरी

सहायता महाराज को पहुंची । महाराज ने बायजाबाई को महलों में क़ैद कर लेने की तरकीब सोची । और अपने नाम की डोंडी पिटवाने का निश्चय किया कि हम आज से ग्वालियर के राज्याधिकारी हुए । महाराज स्वयं ८ जोलाई सन् १८३३ ई० को हवा खाने के बहाने से कर्नल जेकब साहब के कम्पू में गए । वहां जाकर उन्होंने फ़ौज के लोगों को दङ्गा मचाने का इशारा किया । परन्तु कर्नल साहब ने इसकी सूचना बायजाबाई को करदी और महाराज की आज्ञानुसार किसी तरह की गड़बड़ न मचाई जावे इसकी सख़्त ताकीद फ़ौज को की गई । इससे महाराज का निश्चय फलीभूत नहीं हुआ । उन्होंने उस दिन की रात राजमहलों के बाहर बिताई और सबेरा होते ही रेज़िडेन्सी में गए । परन्तु रेज़िडेण्ट से उनकी मुलाक़ात न हुई । महाराज एक नीम के पेड़ तले बैठे रहे; थोड़ी देर बाद रेज़िडेण्ट साहब वहां आकर उन्हें अपने बङ्गले में ले गए । वहां बहुत देर तक बातें होती रहीं । परन्तु रेज़िडेण्ट से उन्हें किसी प्रकार की सहायता नहीं पहुंची । तब वे निराश होकर महलों में वापस आए । महारानी बायजाबाई को इनके गुप्तकाण्ड का समाचार पहले से ही विदित हो चुका था । अतएव महाराज ने उनके पास जाकर अपने क़सूर की माफ़ी चाही । महाराज ने उनसे यह भी विनय की कि आयन्दा कभी ऐसा

न करेंगे और शपथ खाई। परन्तु उनका यह सब व्यवहार मायावी था ऐसा शीघ्र ही प्रगट हुआ।

महाराज जनकोजीराव, बायजाबाई के पास से शपथ क्रिया करके अपने महलोंको वापस गए, उसी रात को, हुकुमसिंह नाम का एक सिपाही, गुप्त संकेत के अनुसार, छिपकर, महलों में गया। वह जनकोजी राव के महलोंमें सिढ़ी लगाकर पहुंचा और उन्हें वहांसे अचानक उठाकर नीचे लाया। इधर वरुण और बहादुर नाम की दोनों पल्टनें संकेत के अनुसार खड़ी हुई थीं। उन्होंने महाराज को अपने हस्तगत करके, उनके नाम की डोंडी पीटने और बायजाबाईको क़ैद करनेका संकल्प किया। वे सब महाराजको फूलबागमें लेगए। बायजाबाई साहब के भाई हिन्दूराव ने महाराज की चाल को जानकर इस की सूचना अपनी बहन को की। उस समय बायजाबाई बालाबाई के महलोंमें बैठी थीं। सूचना पातेही वे गुप्तरीति से हिन्दूरावके बाड़ेमें चलीगईं और वहांपर बड़े सरदारों को हाज़िर होनेका हुक्म दिया। तुरन्त कर्नल अलक्ज़ंडर के सिवाय और कोई सरदार नहीं आया। वे हिन्दूराव घाटगे, आपा साहब पाटनकर और अलक्ज़ंडर के सात सौ सिपाहियों को साथ लेकर मियाना में बैठ रज़िडेंसी में गईं। उस समय दङ्गा करने वाले सिपाहियों का सड़कों पर पहरा था उन्होंने बायजाबाई को

पकड़ने के लिए चार पल्टनें और पच्चीस तोपें नियत की थीं। इतनी अधिक सेनाकी आंखोंमें धूल डालकर निकल जाना सहज काम न था। परन्तु बायजाबाई बड़ी युक्ति के साथ विरोधियों को चकमा देकर निकल गईं।

बायजाबाई ने रेज़िडेण्ट के पास अपना हरकारा भेज कर अपने आने और मिलने का उद्देश कहला भेजा; और सेना की स्थिति का समाचार भी उन पर प्रगट किया। रेज़िडेण्ट मिस्टर क्यावेडिश साहब ने अपने असिस्टेण्ट कप्तान रास साहब को महाराज के पास भेजा और कहला भेजा कि आप सेना को दङ्गा फ़साद करने से रोकें और बायजाबाई को रेज़िडेन्सी आने दीजिये। ऐसा करने से आपको लाभ होगा। सुना जाता है कि रेज़िडेण्ट साहब ने महाराज से यह भी हांमी भर ली थी कि बायजाबाई का रेज़िडेंसी में आने का अर्थ यह है कि उन्होंने राज्यका सब अधिकार परित्याग कर दिया। परन्तु ऐसे कठिन समयमें, केवल आत्मरक्षाके लिए, बायजाबाई ने रेज़िडेण्ट के पास राज्याधिकार छोड़ देने को कभी नहीं लिखा। ऐसा उस समय के अनुभवी पुरुषों का मत है। *

* "It is, however, asserted, and I can scarcely doubt the truth, that the Resident positively pledge himself to the Rajaha, that he should consider the Rajah's allowing her escape to the residency as a vertual resignation of her claims; but I can assure you from personal information, that

बायजाबाई ने रेजिडेन्सी में आकर तम्बू में निवास किया। महाराज की सेना ने बायजाबाई को क़ैद करने का निश्चय किया था; इस कारण उसने ११ तारीख़ को फिर उपद्रव मचाया और रेजिडेन्सी के ऊपर हमला करने का मंसूबा किया। इस उपद्रव से डर कर, अथवा सैनिक लोगों के हठ और दृढ़ता को देखकर, अथवा किसी अन्य राजनैतिक कारण से, मिस्टर क्यावेण्डिश ने, महाराज की सेना के मुख्याधिकारी से भेंट की। और महाराज को गद्दी पर बिठलाने और राज्याधिकार देने का उन्होंने वादा किया; और महारानी बायजाबाई को ग्वालियर से कहीं दूर भेज देना भी उन्होंने स्वीकार किया। इसी के अनुसार उन्होंने महाराज जनकोजीराव को १३ जोलाई सन् १८३३ ई० को राज सिंहासन पर आरूढ़ किया। और उनके नाम का ढिंढोरा पिटवाया। बायजाबाई को भी ग्वालियर राज्य से बाहर भेजने का उन्होंने निश्चय किया। बायजाबाई ने रेजिडेन्सी में जा कर रेजिडेण्ट मिस्टर क्यावेण्डिश साहब से भेंट की परन्तु इसका परिणाम उलटा निकला। अब तक बायजाबाई और बृटिश सरकार का पूरा पूरा मेल मिलाप रहा।

The Baiza Bai never would have yielded her claims even situated as she was, for any promises of protection that the Resident could have offered."—

India Gazetee November 13, 1833.

हर बात में बृटिश रेज़िडेण्ट बायजाबाई से सलाह लेकर काम करते और उनका पक्ष लेकर उनकी सहायता पहुंचाते थे। परन्तु न मालूम अचानक विचार क्यों बदल गए? जिस रेज़िडेण्ट की राय तरुण और अविवेकी महाराज से कभी नहीं मिली वही पल मात्र में महाराज के अनुकूल होकर बायजाबाई को गङ्गा जी के किनारे बैठ कर राम राम जपने का उपदेश देने लगे? भारत सरकार ने अब तक बायजाबाई जो करतीं हैं वह ठीक है, यह समझकर तटस्थ वृत्तिधारण की थी और ग्वालियर राज्य के राजकाज में हाथ न डालने का निश्चय किया था परन्तु उसकी तटस्थ वृत्ति (जिसे अङ्गरेज़ी में Non-interferenec policy कहते हैं) एकदम न मालूम किन कारणों से बदल गई, यह बड़े आश्चर्य की बात है! परन्तु राजनीति का यह गूढ़ तत्व समझना बड़ा कठिन है भर्तृहरि महाराज ने ठीक कहा है:-

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च।
हिंस्रा दयालुरपि चार्थ परा वदान्या॥
नित्य व्यया प्रचुर नित्यधनागमा च।
वेश्यांगनेव नृपनीतिरनेक रूपा॥

अर्थातः—

साची है सब भांति सदा सब बातनि झूठी।
कबहुं रोस सो भरी कबहुं प्रिय बैन अनूठी॥

हिंसा को डर नाहिं दया कहुं प्रगट दिखावत।
धन लेवे की बात ख़र्च हूं धन को भावत॥
राखतजु भीर बहु नरनि की सदा सवांरत रहत गृह।
इह भांति रूप नाना रचत गणिका सम नृप नीति यह॥

अतएव उसके बदलने का कुछ आश्चर्य नहीं *।

---

* सेन्धिया दरबार के सर्जन डाक्टर होप साहब ने अङ्गरेजों की इस राजनीति की बाबत जो लिखा है वह हम पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे देते हैं:-

* * * * Secret deliberations were there (in the council of Calcutta) being held, with a view to discover what profit could be made out of the troubles of this weak but most faithful young prince * * * * * A demi-official letter was written to the Resident, by the Chief Secretary of the Foreign Department, desiring him to learn, at a private interview by way of a feeler if the Maharaja, encircled as he was by serious troubles—troubles mainly caused by our Government–would like to resign; assigning over the country to the British Government, and receiving a handsome pension, which would be paid out of his own revenues. There can be very little doubt that this demi-official document was of the genus *mystic*, and that no copy of it can now be found among the archives pertaining to India. Mr. Cavendish, than no Englishman ever attained a greater ascendancy over the minds of the natives with whom he had concern, declined to make such a suggestion, and his answer threw a damp upon the hopes of the annexationists * * * * When his refusal to put the question of the pension

ब्रिटिश रेजिडेण्ट मिस्टर क्यावेण्डिश साहब ने बायजाबाई को सलाह दी कि आप ग्वालियर छोड़ कर बाहर चली जावें तो फिर कुछ भी उपद्रव नहीं होगा । उन्होंने ख़ुशी से अथवा ज़बरदस्ती से बायजाबाई को ग्वालियर से बाहर भेज दिया । राज्याधिकार छीन कर बायजाबाई को बनोवास दिया गया । उन्होंने मजबूर होकर ग्वालियर छोड़ना स्वीकार किया । ग्वालियर से चल कर छः मील पर एक कसोली गांव है वे वहां जाकर ठहरीं। वहां से धोलपूर गईं । उन्होंने कुछ दिनों तक धोलपूर में निवास किया । वहां से ब्रिटिश सरकार के पास ख़लीता भेजा और न्याय करने की विनय की । परन्तु इस लिखा पढ़ी का कुछ भी परिणाम न निकला । इसके बदले में

---

reached Calcutta, and it was known then that all tumult had passed away, intense was the displeasure in all quarters. Presently another demi-official letter arrived; this time from the Deputy Secretary of the Foreign Department–a *mystic* one we may be quite sure-strongly expostulating with Mr. Cavendish upon his proceedings, and concluding with this significant remark—you have thus allowed a favourable chance to escape of connecting the Agra to the Bombay Presidency.' Of course the Resident's doom was fixed, though not just then declared. A few months afterwards, the Governor, general gratified his feelings of resentment by removing Mr. Cavendish to another Native Court."

-The House of Scindiah page 27-28.

उन्हें उलटी यह सज़ा मिली कि धोलपूर भी उन्हें छोड़ना पड़ा। वे वहां से आगरे भेजी गईं। उस समय उनके साथ ५००० पैदल और १००० सवार थे। आगरे में वे बिंदीचन्द सेठ के मकान पर रकाबगञ्ज में ठहरीं। ग्वालियर से आगरे तक उन्हें बहुत ही कष्ट उठाने पड़े।

बायजाबाई के ग्वालियर से चले जाने पर ब्रिटिश रेज़िडेण्ट क्यावेन्डिश साहब ने महाराज जनकोजीराव सेन्धिया को गद्दी पर बिठाकर, राज्याधिकार दिया। महाराज जनकोजीराव ग्वालियर के मुख्य सेनापति के आधीन होकर उनकी रायके अनुसार राज्य चलाने लगे। अतएव ग्वालियर में फ़ौजी लोगों का सम्राज्य होगया!

महाराज ने नारोपन्त आपटे को अपना दीवान बनाया। रामराव फालके, बलवन्तसिंह मुन्शी, मुल्लाजी सेठ, उदाजी खटके, भाऊ पोतनीस वग़ैरह लोगों को दरबार में अधिकार दिए। परन्तु राज्य का प्रबन्ध ठीक न होने से राज्य में दङ्गा फ़िसाद होने लगा। महाराज ने बायजाबाई के समय के मुख्य ख़ज़ांची मनीराम सेठ को क़ैद कर लिया और उनके साथ विश्वासघात किया। बायजाबाई के पश्चात् ग्वालियर से शान्तिदेवी बिदा हो गई। प्रजा में असन्तोष फैल गया। मिस्टर क्यावेन्डिश साहब ने बड़ी चतुरता के साथ दरबार के काम की देख भालकी, जिससे ख़ूनकी नदियाँ नहीं बहीं। इसे ग्वालियर राज्य का अहोभाग्य समझना चाहिए।

ग्वालियर छोड़ने के बाद बायजाबाई के भाग्य ने पलटा खाया ! उनके ऊपर बुरे दिन आए । नाना प्रकार के सङ्कट उनपर पड़ने लगे । उनकी एकमात्र कन्या चिमना बाई का १४ अक्तूबर सन् १८३३ ई० के दिन देहान्त हो गया । इससे बायजाबाई को और भी अधिक दुःख पहुंचा । यह लड़की स्वरूपवती और बड़ी सुशील थी । स्वतंत्रहीन और राज्यहीन होकर उन्हें अपनी प्रिय कन्याका वियोग सहना पड़ा ! इससे अधिक और दुःख की बात क्या हो सकती है ?

बायजाबाई ने आगरे से फिर ब्रिटिश रेज़िडेण्ट और भारत सरकार को अपना दुःख और राज्याधिकार पुनः प्राप्ति के लिए बारम्बार ख़लीते भेजे । परन्तु परिणाम कुछ भी न निकला । वे आगरे से भी दूर फ़तेहगढ़ भेज दी गईं । जहांपर वे कुछ दिनोंतक एक नील के कारख़ाने में ठहरी रहीं । उस समय का हाल 'दिल्ली ग़ज़ट' 'मुफ़स्सिल अख़बार' वग़ैरह में छपा था । उनपर से उनकी शोचनीय दशा का हाल स्पष्ट विदित होता है । फ़तेहगढ़—फ़र्रुख़ाबाद ज़िले में—गङ्गाजी के किनारे शृङ्गीरामपूर एक तीर्थस्थान है । वहां रहनेके लिए बायजाबाई ने गवर्नर जनरल को लिखा परन्तु नामंजूर हुआ । सन् १८३५ ई० तक वे फ़तेहगढ़ में ही रहीं । पीछे कोर्ट आफ़ डायरेक्टरस ने उनके पास काशी अथवा दक्षिण में जाकर रहने का सख़्त

हुक्म भेजा । और इस हुक्म के लिए एक महीनेकी मियाद दी । इसी आज्ञा के अनुसार उनको कप्तान रास साहब फ़र्रुख़ाबाद से इलाहाबाद पहुंचा गए ।

कुछ दिनों के बाद वे प्रयाग से काशी जी को चली गईं । सन् १८४२ ई० में भारत सरकार ने बम्बई सरकार की आज्ञा लेकर उन्हें गोदावरी के किनारे नासिक में रहने की आज्ञा दी और चार लाख रुपये पेन्शन् कर दिए । सन् १८४० से १८४५ ई० तक बराबर उन्होंने दक्षिण में निवास किया ।

७ फर्वरी सन् १८४३ ई० को जनकोजीराव सेन्धियाकी मृत्यु हुई । मरते समय उनकी इच्छा बायजाबाईके दर्शन करने की थी परन्तु ब्रिटिश सरकारकी आज्ञा न मिलनेसे उन्हें अपनी माताका दर्शन अन्त समय में नसीब न हुआ । मरने से पहले महाराज जनकोजीराव ने अपने कर्मों पर बहुत कुछ पश्चात्ताप किया । बायजाबाई से माफ़ी मांगने और राजकाज उनके आधीन कर देने का भी सुविचार उनका था; ऐसा लोग कहते हैं ।

महाराज जनकोजीराव के कोई सन्तान नहीं थी । अतएव ब्रिटिश सरकार की आज्ञा लेकर कृष्णराव मामा साहब क़दम ने उनकी पत्नी महारानी ताराबाईको गोद लेने की सलाह दी । सेन्धिया घराने के हनुमन्तराव का लड़का भागीरथराव १९ फर्वरी सन् १८४३ ई० अर्थात् माह

बदी ५ शाके १७६४के दिन गोद लेकर उसका नाम महाराज जयाजीराव रक्खा गया। राज्यका कामकाज देखना कदम साहब ने स्वयं स्वीकार किया। परन्तु थोड़े दिनों बाद मामा साहब कदम और दादा साहब खासगीवाले में तक़रार आरम्भ हुई। इस कारण राज्य में अशान्तता फैल गई। अन्तमें गवर्नर जनरल साहब ने स्वयं ग्वालियर में आकर इस बखेड़े को मिटाना चाहा। वे ग्वालियर के समीप हिंगोना में आकर उतरे। ग्वालियर दरबार की ओर से बापू साहब सीतोले उनसे मिलने और इस तकरार मेटने का उद्योग करने गए। परन्तु जब सरलरीति से इसका निर्णय न हुआ तब सेन्धिया की सेना और ब्रिटिश सरकार की सेनामें महाराजपूर और पनिहार के पास ख़ूब युद्ध हुआ। महाराजपूर और पनिहार की लड़ाई में सेन्धिया की सेना की पराजय हुई। गवर्नर जनरल साहब ने महाराज जयाजीराव सेन्धिया को अपने अधिकार में करके उन्हें १३ जनवरी सन् १८४४ ई० को फिर से गद्दी पर बिठाया। उनकी बाल्यावस्था में राजकाज देखने के लिए, रामरावफालके, देवराव जादव, मुन्शीराजे बलवन्तराव बहादुर, उदाजीराव घाटगे, मुल्लाजी सेठ और नारायणराव भाऊ पोतनवीस इन सब सरदारों की एक कौंसिल बना दी। इस कौंसिल ने सुलहनामा करके फ़ौजी ख़र्चके लिए १८ लाखका राज्य ब्रिटिश सरकार

के हवाले करदिया। ग्वालियर राज्य में केवल ६००० सवार ३००० पैदल ३२ तोपें २०० गोलंदाज रखना निश्चय हुआ। सुलहनामा लिख जाने बाद ग्वालियर में फिर से शान्ति स्थापित हुई। राज्यका काम सन् १८५३ ई० तक कौंसिल करती रही; बाद को जब महाराज बड़े हुए तब भारत सरकार ने राज्य का सारा अधिकार उनके आधीन करदिया।

महाराज जयाजीराव के गद्दी पर बैठने बाद बायजाबाई के बनवास का अन्त हुआ। वे फिर सरकारी आज्ञा पाकर ग्वालियर में आकर रहने लगीं। महाराज जयाजीराव अपनी मातामही से सलाह लेकर काम करते थे। जनकोजीराव के राजत्वकाल में जो उन्हें दुःख भोगना पड़े उनको भुलादेने के लिए जयाजीराव ने उनके साथ बड़े उत्तमरीतिसे प्रेमपूर्वक बर्ताव किया। बायजाबाई ने भी इनसे प्रसन्न होकर अपनी नातिन जयाराजा जो खानवलकर घराने में व्याही थी उनकी कन्या चिमना-राजा से जयाजीराव का विवाह कराकर अपने वात्सल्य भाव का परिचय दिया। ये महाराज जयाजीराव के राज्यकाल में कभी उज्जैन कभी लश्कर कभी ग्वालियर रहती थीं। सन् १८४४ई. के बाद ब्रिटिश सरकारने इनको पूर्णरूप से स्वतंत्रता प्रदान करदी। जिसका उत्तम फल सरकारको सन् १८५७ ई० में मिला। यह सब बायजाबाई की बुद्धिमानी का ही फल था।

आठवां अध्याय ।

फुट कर बातें

बायजाबाई के राजकीय जीवन चरित की बाबत जहां तक हाल मालूम हो सका वह पिछले अध्यायों में दिया गया है । अब इस अध्याय में हम उनके निज का वृत्तान्त प्रगट करना चाहते हैं । उनके स्वभाव, दिनचर्या, व्यवहार, उदारता विषयक बातों का थोड़ासा उल्लेख किए बिना यह जीवनी अधूरी रहेगी; अतएव जहांतक उनकी निज बातों का राजकीय सम्बन्ध से अथवा किसी अन्य प्रकार से पता लगा उसका हम उल्लेख नीचे करते हैं । पाश्चामात्य लोगों ने, अपने अपने प्रवास वर्णन में, इनका हाल दिया है । इसी आधार पर से उनके चरित का बहुत कुछ पता लगता है । ज्यादातर उसी आधार का सहारा लेकर और ग्वालियर दरबार के पुराने परिचित लोगों के मुख से सुनी हुई आख्यायिकाओं पर से ही उनका चरित हम नीचे देते हैं ।

स्वरूप।

बायजाबाई बहुतही ख़ूबसूरत थीं ऐसा मशहूर है। इनकी सौंदर्यतापर मुग्ध होकर दौलतराव सेन्धियाने इनकी प्राप्ति की लालसा से बाजीराव सानीको गद्दी पर बैठाया और इनके पिता सर्जेराव घाटगे को अपना दीवान बनाया। यह बात पीछे कही जा चुकी है। इनके रूप गुण सम्पन्न होने का वर्णन एक ग्रन्थकार ने इस प्रकार किया है। "यह बुद्धिमती, सद्गुणी, सुशील और वैसी ही लावण्य रूपवती थीं"। मिसस फेनी पार्क्स नाम की एक अङ्गरेज़ युवती ने बायजाबाई से १२ अप्रेल सन् १८३५ ई० के दिन फ़तेहगढ़ में भेंट की। उस भेंट का वर्णन लिखते समय उसने इनके स्वरूप की बाबत यह लिखा है:—"महारानी बायजाबाई गद्दीके ऊपर अपनी नातिन गजाराजा साहब के साथ बैठी थीं। उनके आसपास उनकी परिचारिका खड़ी थीं; और सेन्धिया सरकार की तलवार उनकी गद्दी पर उनके पांव के पास रक्खी थी। हमारा आदर सत्कार करनेके लिए वे उठ खड़ी हुईं, और हमें अपने पास बैठने की उन्होंने इच्छा प्रगटकी। बायजाबाई साहब बहुत वृद्ध होगई हैं इनके बाल बिलकुल सफ़ेद होगए हैं, और शरीर भी कुछ मोटा हो गया है। उन्हें अपनी युवाअवस्था में बहुत सुन्दर होना चाहिए। उनका हँसना बहुतही मधुर,

और उनका व्यवहार चित्ताकर्षक था। उनके हाथ पैर बहुत छोटे परन्तु बहुत ख़ूबसूरत थे। उनका मुख शान्त और निष्कपट था; उस पर से स्वतन्त्रता और प्रगल्भता दिखाई पड़ती थी जिसकी कि मैं प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकती हूं। यह गुण अफ़ीम खाकर सुस्त और निद्रा वश रहनेवाली मुसलमान स्त्रियों के चेहरेपर मुझे दिखाई नहीं पड़े"। *

एक दूसरी अङ्गरेज़ रमणी 'दि आनरेबल एमिली इडन' ने ७ दिसम्बर सन् १८३७ ई० के दिन इलाहाबाद में भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड अक्लेण्डके साथ बायजाबाई से भेंट की। उस समय उन्होंने कहा था कि:— "बायजाबाई वृद्ध परन्तु बुद्धिमती हैं; उनके मुखपर सुन्दरता के चिन्ह

---

* "We found Her Highness Baiza Bai seated on her gaddee of embroidered cloth with her grand-daughter the Gajaraja Sahab at her side; the ladies, her attendance, were standing arouud her; and the sword of Scindia was on the gaddee, at her feet. She rose to recieve and embrace us, and desired us to be seated near her. The Baiza Bai is rather an old woman, with grey hair and *en bon point*. She must have been pretty in her youth; her smile is remarkably sweet, and her manners particularly pleasing; her hands and feet are very small and beautifully formed. * * * Her countenance is very mild and open; there is a freedom and independence in her air that I greatly admire, so unlike that of the sleeping, languid, opium-eating Mussalmanees."

अबतक विद्यमान हैं * ।" इसके बाद सन् १८५८ ई० में मिसेस डयूबर्ली ने बायजाबाई से मुलाक़ात की उसकी बाबत उन्होंने लिखा है कि "बायजाबाई एक परदे के पास उच्चस्थान पर बैठी थीं। उनकी सादिगी, प्रौढ़ता और गम्भीरता के कारण तुरन्त ही मेरा ध्यान उनकी ओर गया। उनके नेत्र अबतक विलक्षण तेजस्वी दिखाई पड़ते हैं। उनकी ओर देखकर, प्रकाश के बीच शराब रखनेसे उसकी जो चमक दिखाई पड़ती है उसका मुझे स्मरण हो आया। उनकी उमर ७० वर्ष से अधिक है; परन्तु जैसा उत्साह युवाअवस्था में उनका था वैसा ही अब तक क़ायम है।" †

इन सब अङ्गरेज़ रमणियों ने बायजाबाई को वृद्ध अवस्था में देखा था। इस पर उन्होंने इनके स्वरूप का ऐसा अच्छा वर्णन किया है इस पर से यह अनुमान सहज

---

* "She is a clever-looking little old woman with remains of beauty."

Up the Country Vol: II Page 65.

† The Bhai-sa-bhae sat in the place of honour next the purdah, and arrested my attention at once, both by the simplicity of her toilette and the great dignity and self possession of her deportment. The lustre of her still glorious eyes reminded me of the light which shines through portwine when held against the light. She is over seventy years of age, but apparently as energetic as in the days of her fiery and intriguing youth." *Mrs. Duberly.*

ही किया जा सकता है कि वे युवाअवस्था में बहुत ही ख़ूब सूरत होंगीं।

पोशाक़ और रहन सहन।

बायजाबाई की पोशाक और रहन सहन बिलकुल सादा थी। महाराज दौलतराव सेन्धिया के मरनेके बाद, उन्होंने कभी आभूषण धारण नहीं किए। ये अपने पति की बड़ी भक्त थीं और उनका प्रेम भी इनपर बहुत ही अधिक था। ब्रोटन साहब नाम के एक फ़ौजी अफ़सर ने अपनी पुस्तक में इनकी बाबत यों लिखा है किः—"सर्जेराव का जिस समय बध हुआ और बायजाबाई को यह बात मालूम हुई उस समय वे दुःखसागरमें डूबगईं। उस समय स्वयं दौलतराव ने उन्हें धीरज बँधाया और उनके आंसू अपने हाथसे पोंछे"। इसपरसे इनके पति प्रेमकी कल्पना की जा सकती है। ऐसे प्रिय पति का वियोग होने से बायजाबाई को आजन्म दुःख रहा यह एक सहज बात है। उन्होंने भारतवर्ष की सती साध्वी स्त्रियों की तरह पति के पश्चात अपने सौभाग्यालंकार और राजविलास सब छोड़दिए। राज्याधिकारकी समाप्ति होने तक उन्होंने अपना ध्यान ज़्यादातर पारमार्थिक कामों की ओर लगाया। वे सादे वस्त्र पहनतीं और पृथ्वी पर शयन करती थीं। मिसेस फेनी पार्क्स ने इस बाबत अपनी

यात्रा पुस्तक में ऐसा लिखा है:– "बायजाबाई केवल सादे रेशमी वस्त्र पहने थीं । उनके हाथोंमें सोनेकी सादी पटलियां थीं । इसके सिवाय उनके शरीर पर और कोई आभूषण न था । विधवा होजाने के बाद, उन्होंने किसी गहने का स्पर्श तक नहीं किया । वे अनेक प्रकार नेम धर्म और उपवास करतीं और सदैव ज़मीन पर सोतीं थीं ।" इस पर से उनकी सादिगी और पतिभक्त का पूरा पूरा पता लगता है ।

स्वभाव ।

इनके पिता सर्जराव घाटगे का स्वभाव क्रूर और तामसी था । उसी के अनुसार उनकी कन्या का स्वभाव होना चाहिए; यही समझकर, बहुत से लोग बायजाबाई को क्रूर, ज़ालिम इत्यादि उपाधियें प्रदान करते हैं। परन्तु वास्तविक में उनका स्वभाव ऐसा न था । उनका मोटो 'मानोहि महतां धनम्' था । इस कारण वे मानापान का बहुत विचार रखतीं और इसलिए उनके स्वभाव में कुछ तेज़ी ज़रूर थी; परन्तु सर्जेराव के दुर्गुण उनके शरीर में दिखाई नहीं पड़ते थे । मिल्ल साहब ने उनके राजकाज के विषय में लिखा है कि "वे स्वभाव की तेज़ थीं परन्तु क्रूर और चिड़चिड़े स्वभाव की न थीं ।" इनके स्वभावका वर्णन मिल्ल साहब ने किया है वह ठीक मालूम पड़ता

है। वे अपमान सहन नहीं कर सकती थीं। यदि कोई उनके मान की हानि करता तो वे उसे अपने तेज़ स्वभाव के कारण कड़ी सज़ा देतीं। परन्तु बिना कारण वे किसी को दुःख नहीं पहुंचातीं। अन्याय से प्रजा को उन्होंने कभी कष्ट नहीं पहुंचाया। वे सदैव प्रजा को सुख पहुंचाने और ग़रीबों पर उपकार करने को तय्यार रहतीं।

उदारता।

बायजाबाई के पास विपुल धन था जो उनके दुःख का कारण हुआ। परन्तु उन्होंने अपने धन का अपव्यय कभी नहीं किया। उन्होंने काशी से रामेश्वर तक तीर्थ यात्रा की और अनेक स्थानों पर अच्छी तरह दान पुण्य भी ख़ूब किया। काशीजी में एक बहुत ही अच्छा घाट बनवाया। पंढरपूर में श्रीद्वारकाधीश का मन्दिर निर्माण कराया। काशीजी में बने हुए घाट को देख कर मिसेस फेनी पार्क्स ने यह लिखा है कि "बायजाबाई का घाट देखने से पहले मुझे ऐसा मालूम था कि चिमाजीआपा पेशवा का घाट सब से उत्तम है। परन्तु बायजाबाई ने जो घाट बनवाया है उसके देखने से पहले घाट की सुन्दरता लुप्त हो जाती है। यह घाट इतना बड़ा, इतना सुन्दर, इतना सादा और इतना अच्छा बना है कि उसे देखकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। काशी के सारे घाटों में यह

सुन्दर है, इसमें कुछ शङ्का नहीं है।" इसको बनवाने में बायजाबाईने ३७ लाख रुपया ख़र्च करने का संकल्प किया था। परन्तु बीच में विघ्न आ जाने से उनका संकल्प पूरा न हुआ। पेंढरपूर में द्वारकाधीश का मन्दिर भी ऐसा ही सुन्दर बना है। इसके बनवाने में क़रीब दो लाख रुपये के ख़र्च हुआ। यह मन्दिर सन् १८३९ ई० में बनकर तय्यार हुआ। उन्होंने काशी, पेंढरपूर इत्यादि स्थानोंमें सदाव्रत भी लगाए। जहां भूखें को भोजन मिलता था।

शौक़।

बायजाबाई को घोड़ेपर चढ़ने का बहुत शौक़ था। मिसेस फेनी पार्क्स ने बायजाबाई के सवारी के घोड़े देखे थे। वे लिखती हैं:—"उन्हें घोड़े पर चढ़ने की बड़ी रुचि थी। वे अश्व परीक्षा में भी बड़ी निपुण थीं। वे घोड़ेपर बैठकर रोज़ घूमती थीं। कोई अङ्गरेज़ रमणी उनसे मिलने जाती तो वे सब से पहले यही पूछतीं कि तुम्हें घोड़े पर चढ़ना आता है। वे इतनाही पूंछकर नहीं रह जातीं बल्कि उसको घोड़ेपर बिठाकर परीक्षा लेतीं। इसी अनुसार बहुवार्त्ता सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द होता। मिसेस ड्यूवर्ली नामक युवती से उन्होंने रूस की युद्ध प्रणाली की बाबत बहुतसी बातें पूछी थीं। वे सदैव वेलज़ली साहब के समय के युद्ध का वर्णन किया करती थीं। लड़ाई के

मैदान से, घोड़े पर बैठ कर, वे किस चतुरता के साथ निकल आई इसका वर्णन बड़ी उत्तमता से करती थीं"। * उन्होंने अपने पास रहनेवाली दासियों और सरदार स्त्रियों को घोड़े पर चढ़ना सिखलाया था। अपने यहाँ उन्होंने युवतियोंकी एक स्वतंत्र पल्टन भी तैयार की थी।

मिसेस फेनी पार्क्स के प्रवास वर्णन पुस्तक में एक बड़ी दिल्लगी की बात लिखी है। जब ये इङ्गलैण्ड वापस जाने लगीं तब बायजाबाई ने इनसे तीन चीज़ें भेजने के लिए कहा। १—एक उत्तम असली नसल का अरबी घोड़ा। २—एक अच्छा सा सफ़ेद रङ्ग, लाल आंखें और लम्बे बाल का कुत्ता। ३—एक बाजा बजाने की कल!

---

* बायजाबाई को घोड़े पर बैठने का अभ्यास था उन्होंने युद्ध क्षेत्र स्वयं देखा था इसका उल्लेख दो अङ्गरेज़ स्त्रियों ने किया है। मिसेस फेनी पार्क्स लिखती हैं:-

"The ladies relate, with great pride, that in one battle, Her Highness rode at the head of her troops, with a lance in her hand, and her infant in her arms!"

मिसेस ड्युबर्लो ने स्वयं बायजाबाई के मुख से यों सुना है:-

"I, too, have ridden at a battle: I rode when Wellesly Saheb drove us from the field, with nothing but the saddles on which we sat."

आदर सत्कार ।

बायजाबाई बहुत ही उदारचित्त थीं अतएव लोगों का आदर सत्कार भी ख़ूब करतीं । लार्ड विलियम बेंटिंक और अक्लेण्ड से उन्होंने भेट की और उनका ख़ूब अच्छी तरह आदर सत्कार किया । उनके आदर सत्कार से एक भी यूरोपियन असन्तुष्ट हुआ हो ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता। बायजाबाई के आदर सत्कारको देखकर यूरोपियन लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे ।

स्वाभिमान ।

बायजाबाई को अपने मानापमान का बड़ा ध्यान रहता था । यदि इसमें कुछ न्यूनता होती तो वह उन्हें असह्य था । इस कारण दरबारी लोगों को अक्सर बड़ा कष्ट उठाना पड़ता । वे इसके बदले में लोगों को बड़ी कड़ी शिक्षा देती थीं । उनका दरबार नियम पूर्वक होता। यूरोपियन लोगों को बूट उतार कर दरबार में आने की इजाज़त थी । परन्तु स्वतन्त्रता का पाया ढीला हो जाने से इस बात का विचार कम होगया । भारत के मुख्य सेनापति लार्ड कोम्बरमियर सन् १८२९ ई० में ग्वालियर पधारे । उस समय हिन्दू रीति के अनुसार बूट उतार कर दरबार में आना चाहिए, ऐसा आग्रह बायजाबाई ने

किया। परन्तु लार्ड कोम्बरमियर के दुभाषिये मेजर मेकन ने कहा :-"जो सन्मान हमें इङ्गलेण्ड के राजा के दरबार में प्राप्त है वैसाही बर्ताव हम यहां करेंगे उससे ज़्यादा हम कुछ न करेंगे।" परन्तु यह उत्तर बायजाबाई और ग्वालियर दरबार के लोगों को पसन्द न आया। उन्होंने कहला भेजा :—"भिन्न भिन्न देशों में सन्मान की रीति अलग अलग हैं। अतएव हमारे देश कीरीति व्यवहार का आपको पालन करना चाहिए।" परन्तु यह बात लार्ड कोम्बरमियर के लोगोंको पसन्द न आई। बायजाबाई ने सब यूरोपियन लोगोंको बूट पहने हुए आने की इजाजत दी। परन्तु अपने चाल के अनुसार दरबार में कुर्सियां न डालकर, फर्श के ऊपर क़ालीन और चद्दर की बिछावत की। इस कारण तङ्ग पतलून पहने हुए अङ्गरेज़ वीरों को उस पर बैठना मुशकिल होगया! * उस समय का वर्णन

---

* The neighbourhood of this city was reached on the 2nd of January, 1829, when a halt took place for the purpose of settling the etiquette to be observed on this occasion. There were great difficulties in the way of coming to an arrangement, for the Capital had never before been visited by a personage of such high rank as Lord Cambermere. All the artifices of what may be termed 'gentlemen ushers' diplomacy were exerted to induce the Commander-in-chief to take off his shoes when within a certain distance of the throne; but major Macon, the Persian interpreter, declared that neither

करना कठिन काम है। तात्पर्य यह है कि बायजाबाई के स्वाभिमान के कारण ग्वालियर दरबार में उस समय ऐसी बहुत बातें हुआ करती थीं।

मानापमान की शिक्षा।

महाराजपूर की लड़ाई ख़तम होजाने के बाद बायजाबाई नासिक से ग्वालियर आईं। बहुत दिनोंतक वे फूलबाग़में रहीं। उनके पास कंटिंजंट फ़ौजके कुछ सिपाही बतौर Guard of Honour के रहते हैं। इस फ़ौजके ऊपर एक अफ़सर भी अलग नियत था। उसका काम था कि जहां बायजाबाई जावें वह अपने सिपाहियों को लेकर उनके के ख़ज़ाने में जमा किया था, वह सब ख़र्च होगया। इस

Lord Combermere nor any other English gentleman would submit to any other forms than those required at the court of his own sovereign. After much argument the point was yielded, and Lord Combermere and his staff went, as one of the latter aptly termed it, "booted and spurred like soldiers." "The Mahratha, however, had his revenge, for the only seats at the grant durbar were sadle-cloths-articles of furniture characteristic of the warlike camp-life of the nation-on which the English officers, with-tightly-strapped trousers and long sharp spurs, found it impossible to contrive comfortable pasture."

Memoirs & correspondence of Viscount Combermere Vol: II Page 197.

साथ जावे। जब उनकी सवारी निकले तब उन्हें सलामी दी जावे। एक दिन उनकी सवारी की प्रतीक्षा करते हुए यह फ़ौजी लोग फूलबाग़ के सामने मैदान में खड़े रहे परन्तु उनको देर हो जाने के कारण फ़ौज का अफ़सर आराम लेने के लिए कुर्सी पर बैठ गया। बायजाबाई ने उसे कुर्सी पर बैठे चिक के भीतर से देखा। उन्होंने यह विचार कर कि यह अफ़सर हमारे सामने कुर्सी पर बैठ गया है उसे बड़ी सख़्त सज़ा दी। अर्थात् वही कुर्सी उसके सिरपर पटक देने की उन्होंने आज्ञा दी। यह बात एक एस्कार्ट अफ़सर ने लिखी है।

नीति निपुणता।

बायजाबाई साहब राजकाज में बहुत निपुण थीं। इस पर से उनकी स्वाभाविक बुद्धिमत्ता प्रगट होती है। उनकी इस कुशलताकी बाबत ग्वालियर दरबारके परिचित यूरोपियन विद्वान डाक्टर होप साहब ने अपनी किताब में यों लिखा है:—

"ग्वालियर का सारा राज्याधिकार इस स्त्री के हाथ में था। ब्रह्मी लोगों और भरतपुर की गद्दी अन्याय से लेने वाले राजा के साथ हमारे कई एक युद्ध हुए। इन युद्धों के कारण मार्क्विस आफ़ हेसटिंग्ज़ ने अपने राजत्वकाल में जो बहुतसा धन किफ़ायत के साथ कलकत्ते

कारण गवर्नर जनरल लार्ड अम्हर्स्ट साहब को कहीं से, किसी तौर से धन जल्द मिलना चाहिये ऐसी आवश्यकता जान पड़ी। अवध के नव्वाब से मांगते नहीं बनता था; क्योंकि उन्होंने अभी ५० । ६० लाख रुपया दिया ही था। और उसकी बाबत नैपाल राज्य से मिला हुआ थोड़ा सा प्रान्त उनको बदले में दिया गया था। कलकत्ते के एक लोहचुम्बक (लाट साहब) के मन में यह कल्पना उत्पन्न हुई, कि देखें सेन्धिया से अपने को क्या फ़ायदा पहुंचता है। मराठा लोग बड़े कंजूस होते हैं, उनके सरदार सेंधिया के ख़ज़ाने में दो तीन करोड़ रुपया है, ऐसा ख़्याल है। बायजाबाई कम्पनी सरकार को दस पांच लाख रुपये क्या सहज में उधार न दे सकेगीं। गवर्नर जनरल साहब ने यह विचार करके इस युक्ति को सिद्ध करने का उपाय किया। इस समय सेन्धिया दरबार में मेजर स्टुअर्ट साहब सरीखे बुद्धिमान, राजकाज निपुण रेज़िडेण्ट थे। उन्हें महारानी बायजाबाई से धन उगाहनेका यह नाज़ुक काम गुप्तरीति से सपुर्द हुआ।

प्राणिशास्त्र के किसी प्रसिद्ध ग्रंथ में, विमल नाम के प्राणी को सोते हुए पाया गया हो इसका उल्लेख नहीं है। परन्तु किसी दक्ष बहेलिया को वह गाढ़ निद्रा में सोता हुआ कदाचित मिले यह हो सकता है परन्तु बायजाबाईको कभी किसी रेज़िडेण्ट ने सोते हुए पाया हो

इसमें शङ्का है। वह सच्ची एशिया निवासिनी स्त्री थीं। यही नहीं वरन् उनमें और भी विशेष गुण थे। वह बड़ी चतुर, मायावी, मंसूबेबाज़ और निपुण थीं। परन्तु उनमें विशेष गुण यह था कि उनको मोहित करके उन्हे फँसा लेनेवाला कोई दुर्गुण उनमें न था। इस चतुर स्त्रीको यह बात गुप्त रीति से मालूम हुई कि सरकार हमसे उधार रुपया मांगना चाहती है और अब अपने ख़ज़ानेके ऊपर सङ्कट आने वाला है इस बाबत उसे भय मालूम हुआ। उन्होंने उसके लिए एक युक्ति सोची। उसने अपने दीवान दादा ख़ासगीवाले को बुलाया और रेज़िडेण्ट साहब के आने और रुपया मांगने से पहले उन्होंने उनको रेज़िडेण्ट साहबके पास भेजा। और यह कहला भेजा कि:—"हमारी फ़ौजको तनख़ाह न मिलनेसे वह बेदिल होगई है और दङ्गा फ़साद करनेको तय्यार है। इस कारण क्या ब्रिटिश सरकार से हमको दस लाख रुपये महरबानी करके क़र्ज़ दिलवादीजिएगा?" इस प्रश्न को सुनकर रेज़िडेण्ट साहब को बड़ा विस्मय हुआ अर्थात् ग्वालियर के ख़ज़ाने में रुपया नहीं है और वहां फ़ौज की तनख़ाह का यह रोना पड़ा है तो ब्रिटिश सरकार को रुपया कहां से मिलेगा? इन सब बातों को सुनकर रेज़िडेण्ट कर्नल स्टुअर्ट साहब निरुत्तर होगए! और उन्होंने भारत सरकार को यह लिखा-"महारानी बायजाबाई को इस समय रुपये की बड़ी

ज़रूरत है। उनके दीवान ने मेरे पास आकर कहा कि क्या हमें ब्रिटिश सरकार के पाससे दस लाख रुपये उधार मिल सकेंगे?" *

* It was during the regency of this lady that our wars with the Burmese and the usurper of Bharatpur took place—wars which cleared the treasury of Calcutta of the immense surplus cash which the frugal administration of the Marquis Hastings had amassed. To get money somewhere and somehow was a necessity which the Governor-General, Lord Amherst, felt, admitted of no delay. The King of Oudh could not be applied to again. He had lent a few millions five or six, and had been paid off with a strip of territory taken from Nepal. 'Suppose' said a Calcuttta Magnat, 'we try what Scindia will do. The Mahrattas are a singularly penurious race, and the coffers of their chief are believed to be well filled with rupees–two or may be three crores buried in the palace; and who can say that the Baiza Bai would be indiferent to the *eclat* of lending the great Company Bahadoor a paltry million?' The shrewd idea was acted on. Col: Stewart, a very able diplomatist, was the Resident at the Court of Gwalior, and to him was confidentially entrusted the delicate task of pumping–we beg pardon for the vulgarism–Her Royal Highness. Now, we do not doubt that some extremely watchful game-keeper has caught a weasel very fast asleep, although the fact is not recorded in any known work on Natural History; but we very much question if any Resident her court ever found the Baiza Bai napping. She was a true Asiatic woman, 'and something more;'–crafty, false, intriguing, vigilent;' the something more,' being that

इस पत्रके जानेपर क्या हुआ होगा इसकी कल्पना सहज ही में की जा सकती है। रुपये की कमी से जहां फ़ौज दङ्गा करने को तय्यार है वहां से रुपया पानेकी आशा करना वृथा है; यह समझकर गवर्नर जनरल साहब ने अपना विचार छोड़ दिया। तात्पर्य यह है कि बायजाबाई ने अपनी निपुणता से ग्वालियर के ख़ज़ाने पर आए हुए सङ्कट को दूर किया!

---

she had not, it was said, a single amiable weakness. By some means or other, this artful personage got scent of the intention to borrow, and naturaly enough became awakened to a sense of the danger. She hastily despatched a favourite, one Dada Khasgeewala—of whom we shall hear more by and by—to the Colonel, to ask him if he thought, her troops being mutinous on account of not getting their pay, the British Government could be pursuaded to lend her a million? Here was a singular coincidence certainly, and one that took the wind completely out of the gallant Resident. We may suppose, without drawing largely on the imagination, that Colonal Stewart wrote to his Lordship, Lord Amherst expressing his deep concern and surprise—we *know* that Dada did surprise him—to find that Her Highness herself was in great want of money. 'Indeed, her minister, has just been here to ask me if the British Government could lend her a million!"

--*House of Scindia page 19-20.*

चतुरता ।

बायजाबाई के चतुर होने की बाबत भी बहुत सी बातें मशहूर हैं। उनमें से हम एक का उल्लेख नीचे करते हैं। जिस समय ग्वालियर का राज्याधिकार उनके हाथमें था। उससमय उन्होंने एक दिन तुलसीका विवाह करना निश्चय किया। सेन्धिया घराने में जिस तरह व्याह बड़े ठाठबाठ के साथ होता है उसी प्रकार से उन्होंने यह व्याह किया। तुलसीके व्याह में अधिक ख़र्च देखकर उनके दीवान बापू रघुनाथ ने उनसे कहाकि यह आपका काम हमारे पसन्द नहीं आया। इसपर बायजाबाई ने कुछ भी जवाब न दिया। चुप हो रहीं। अन्त में जब विवाह हो चुका तब उन्होंने एक दरबार किया। दरबार में वे स्वयं पधारीं। अपनी गद्दी के पास राधाकृष्ण की मूर्ति रखकर सब सरदारों, सिलेदारों वग़ैरः से ठाकुर जी की नज़र न्योछावर करवाई। सबों ने बड़ी प्रसन्नतासे ठाकुर जी को नज़रें दीं। अन्त में जब दरबार बरख़ास्त हुआ तब बायजाबाई ने दीवान साहबको बुलाकर, नज़र न्योछावर का कितना रुपया इकट्ठा हुआ है गिनने को कहा। हिसाब लगानेपर मालूम हुआकि जितना रुपया विवाह में ख़र्च हुआ उससे ज्यादा रुपया नज़राने में आया।

दीवान ने बायजाबाई की चतुराई की तारीफ़ की और अपने कथन की माफ़ी मांगी ।

पुरानी रीति रिवाज का अभिमान ।

बायजाबाई साहब को अपने हिन्दूधर्म और सेन्धिया घराने की पुरानी रीति रिवाज़ का बड़ा अभिमान था । वे उसका पालन यथाशक्ति करतीं थीं । एक समय की बात है कि महाराज जयाजीराव सेन्धिया बायजाबाई को मिलने उज्जैन गए । वे उस समय अङ्गरेज़ी पोशाक, कोट पतलून, बूट पहने थे । साथ में आदमी भी मामूली ले, गए थे । जिस समय वे बायजाबाई को मिलने महलोंके भीतर गए उस समय उन्होंने उनकी पोशाक देखकर उनसे मिलने मे इनकार कर दिया और कहला भेजा :-“मैं चाबुकसवार से नहीं मिलती । महाराज सेन्धिया जब मुझसे मिलने आवेंगे तब यह उनके साथ आवें । सेन्धिय सरकार बिना राजसी ठाठ बाठ के कभी आने वाले नहीं हैं ।” यह सुनकर जयाजीराव दूसरे दिन अपनी दरबारी पोशाक पहनकर, चोबदार, भालदार और डङ्का निशान साथ लेकर बड़े ठाठ बाठ के साथ मिलने गए । तब बाई साहब ने उनसे भेंट की और आदर पूर्वक उन का स्वागत किया । उस दिन से महाराज जयाजीराव ने

अपने स्वदेशी रीति रिवाज में किसी तरह का अन्तर पड़ने नहीं दिया ऐसा सुनते हैं।

बायजाबाई के भाई हिन्दूराव।

बायजाबाई साहब के भाई जयसिंहराव उर्फ़ हिन्दूराव बाबा घाटगे का थोड़ा सा हाल हम पाँचवें अध्याय में लिख चुके हैं; परन्तु बायजाबाई के जीवन चरित से उनका बहुत कुछ सम्बन्ध है। अतएव उनका थोड़ासा हाल हम और देते हैं।

जब बायजाबाई को बनवास दिया गया तब वे उनके साथ ही गए। परन्तु सन् १८३५ ई० में बायजाबाई के प्रयाग जाने पर सरकार अङ्गरेज़ी ने उनकी पेनशन् कर दी और उन्हें दिल्ली में रहने की आज्ञा हुई। दिल्ली में हिन्दूराव का महल अब तक मौजूद है। हिन्दूराव बायजाबाई की तरह स्वरूपवान नहीं थे। उनकी एक तस्वीर दिल्ली के पदार्थ संग्रहालय में रक्खी है। उस पर से उनके स्वरूप की कल्पना की जा सकती है। 'कलकत्ता रेव्यू' में एक लेख निकला था उसमें लिखा था कि "माल-कम साहब ने कृष्णाकुमारी के स्वरूप की कल्पना उनके भाई को देखकर की थी। उसी प्रकार देखने से दिल्ली के पदार्थ संग्रहालय में जो हिन्दूराव की तस्वीर है उस पर से बायजाबाई बहुत सुन्दर थीं ऐसा नहीं कह सकते।

इस तस्वीर पर से हिन्दूराव के नेत्र चमकदार, शरीर कृष्ण वर्ण और स्थूल था ऐसा दिखाई पड़ता है *।" परन्तु बायजाबाई के सम्बन्ध में यह अनुमान करना बड़ी भूल है। हिन्दूराव अधिक स्वरूपवान नहीं थे परन्तु बायजाबाई स्वरूपवान थीं। इसमें किसी प्रकारकी शङ्का नहीं है। 'एशियाटिक जर्नल' में एक लेख सन् १८२७ ई० में दौलतराव की मृत्यु पर निकला था। उसमें लिखा था:—"बायजाबाई के भाई हिन्दूराव का दौलतराव के ऊपर अधिक प्रभाव था। यह एक लड़ाकू मराठा का उत्तम नमूना थे। और यदि इन्हें मौका मिलता तो ये दूसरे शिवा जी निकलते †।" बायजाबाई का वैभव नष्ट होने पर उनका तेज ख़ुद बख़ुद कम हो गया। अङ्गरेज़ी

---

* "If Molcolm inferred Kishen Komari to have been beautiful from the comely features of her brother, one may conclude Baiza Bai to have had little pretensions to a good physiognomy, judging from the portrait of her brother, which hangs on the walls of the Delhi museum. In that portrait, Hindoo Rao appears to have been a stout gentleman of the regular swarthy colour, but with a pair of very animated eyes." —*CALCUTTA REVIEW.*

† "Her brother, Hindu Rao, had latterly very great influence with Scindia; he was a fine specimen of a turbullent Mahratta, and with opportunity, might have been a second Shivaji." —*ASIATIC JOURNAL.*

सरकार से पेनशन् पाकर यह यूरोपियन लोगों के अधिक भक्त बन गए थे। उनकी बाबत बील साहब ने लिखा है :-"यह भारत वर्ष में अङ्गरेज़ों की सोसाइटी के शौक़ीन थे और उनके ये बहुत ही प्रिय हो गए थे *।" इस पर से मालूम होता है कि यह अङ्गरेज़ों से बहुतही मिलजुल कर रहते थे और इसी कारण वे उनके अधिक प्रिय हो गए थे। अङ्गरेज़ों की प्रबलता और उनकी युद्ध सामिग्री देखकर, हिन्दूराव का यह विचार हो गया था कि उनका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। इसकी बाबत एक यूरोपियन ने एक बड़े मज़े की बात लिखी है; वह लिखता है :—"सन् १८३८ ई० में जब फ़ीरोज़पूर के मुक़ाम पर अङ्गरेज़ों और सिख लोगों का किसी राजकीय विषय पर विचार करने के लिए दरबार हुआ, उस समय गवर्नर जनरल लार्ड अक्लेण्ड अङ्गरेज़ों की तरफ़ से और महाराज रणजीत सिंह सिखों की ओर से दरबार में आए थे। उस दरबार में हिन्दूराव भी एक सभासद थे। ये गवर्नर जनरल और महाराज रणजीत सिंह की मुलाक़ात होते समय, एकदम आगे जाकर बैठ गए। उस समय एक सिख सरदार ने उनसे प्रश्न किया :—"आप सरकार अङ्गरेज़ी के पेनशन् ख़्वार हैं न?" उस समय

---

* "He was fond of the Society of Englishmen in India, among whom he was very popular."

हिन्दूराव ने उसे बड़ा मा.कूल जवाब दियाः—"हां, मैं अङ्गरेज़ों का पेनशनख्वार हूं और आप भी हमारे सरीखे शीघ्र ही होंगे !" यह उत्तर सुनकर वह स्वाभिमानी सिख सरदार मन ही मन में लज्जित होकर चुप हो रहा और उसने फिर कुछ न कहा। सन् १८५६ ई० में हिन्दूराव की मृत्यु हुई। सन् १८५७ ई० में जो सिपाही विद्रोह हुआ था उस समय हिन्दूराव का महल एक लड़ाई की अच्छी जगह थी। वहां बहुत बड़ा घनघोर युद्ध हुआ। इस पर से दिल्ली में, सिपाही विद्रोह के इतिहास में, हिन्दूराव के महल का नाम प्रसिद्ध है। इस कारण हिन्दूराव भी विद्रोही थे ऐसा यूरोपियन लोगों का मत है। कई एक ग्रन्थकारों ने उन्हें पुनः जीवित करके लड़ाई के मैदान में खड़ा किया है !! परन्तु यह सब उनकी भूल है। हिन्दूराव का कागल में बनाया हुआ महल और क़िला अब तक मौजूद है। और उनके वंशज श्रीमान् पिराजीराव बापू साहब घाटगे सर्जेराव वज़ारत-म-आब अब तक वहां अपनी जागीर का उपभोग करते हैं।

नवां अध्याय।

परीक्षा

बायजाबाई दक्षिण से आकर ज़्यादातर ग्वालियर में ही रहीं। वे उस समय वृद्ध होगई थीं; तथापि उनकी शक्ति और उत्साह कम नहीं हुआ था। वे नित्य घोड़ेपर बैठकर हवा खाने को निकलती थीं। मित आहार, नियमित व्यायाम, व्यवस्थित व्यवहार और सतकार्यसे काल-क्षेप करनेके कारण उनका शरीर निरोग्य बना था। उनकी उमर सत्तर वर्ष के क़रीब हो चुकी थी; तथापि उनकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी बनी थी। उन्हें अङ्गरेज़ों से दो लाख और सेन्धिया सरकार से चार लाख कुल छः लाख रुपया पेन्शन् मिलती थी। इन रुपयों की वे स्वयं व्यवस्था रखतीं। अपना सारा ख़र्च करके वे कुछ न कुछ धन उसमें से बचा लेतीं। उनका मन दिनों दिन ऐहिक व्यवहार और राजकाज से हटकर कथा पुराण, ईश्वर भक्ति की ओर

अधिक था। परन्तु जिस समय ग्वालिवर का राज्याधिकार उनके हाथ में था उस समय उन्होंने बड़ी कुशलता और बुद्धिमानी के साथ काम करके दिखलाया था। जिससे इनका दबाव सेन्धिया दरबार और अङ्गरेजों पर बराबर बना रहा। स्वयं महाराज जयाजीराव सेन्धिया समय पड़नेपर उनसे सलाह लेते और उनकी बुद्धिमत्ता की तारीफ़ करते थे। इस प्रकार बायजाबाई शान्ति और प्रतिष्ठा के साथ ग्वालियर में अपना समय बितातीं थीं।

सन् १८५७ ई० में उनकी बुद्धि की विलक्षणता और परीक्षाका समय आया। इस साल ग्वालियरमें सिपाहियों ने बड़ा भयङ्कर उपद्रव मचाया। महाराज जयाजीरावको अपनी राजधानी छोड़ना पड़ी। ऐसे बुरे समय में बायजाबाई ने महाराज को अच्छी सलाह दी। जिसका परिणाम कितना अच्छा निकला। बायजाबाई ने ब्रिटिश सरकार के अपकार को भुलाकर उनपर उपकार किया। यदि वे चाहतीं तो ब्रिटिश सरकार को झांसी की रानी लक्ष्मीबाईकी तरह बहुत तङ्ग कर सकतीं थीं और इससे सरकार को बहुत कुछ हानि उठाना पड़ती। परन्तु बायजाबाई सरीखी उदार स्त्री से अपकार पहुंचना कठिन काम था। उन्होंने सरकार के विरुद्ध कभी कोई काम नहीं किया। हमेशा सरकार के पक्ष में रहकर ही काम करती रहीं। महाराज दौलतराव सेन्धिया की इच्छानुसार गवर्नर जनरल लार्ड अम्हार्स्ट

साहब ने बायजाबाई को स्वतन्त्रता पूर्वक राज्य करने की आज्ञा दी और उनके अनुयायी लार्ड विलियम बेंटिंक ने भी उनके राज्याधिकार में किसी तरह का हस्ताक्षेप नहीं किया। परन्तु सन् १८३३ ई० में न मालूम किस कारण से एकाएक महारानी बायजाबाई को सरकार ने अधिकारच्युत करदिया! परन्तु इस स्वाभिमानी राज-महिला ने किसी प्रकार का अनुचित वर्ताव सरकार के साथ नहीं किया। अपने ऊपर आए हुए सङ्कटों को बड़ी धीरता के साथ सहन करती रहीं। यदि उस समय वह सरकार से युद्ध करने को तय्यार हो जातीं तो उनके लिए कुछ कठिन न था। परन्तु अङ्गरेज़ों के सैन्यबल और साधन चातुर्य का उन्हें स्वानुभव होने के कारण वे किसी प्रकार का बुरा विचार अपने मन में न लाईं।

बायजाबाई को ब्रिटिश अधिकारियों की अकृपा से जो क्लेश और दुःख पहुंचा उसका वर्णन अङ्गरेज़ स्त्रियों ने जो समय समय पर उनसे मिलती रहीं; अपनी अपनी पुस्तकों में किया है। मिसेस फेनी पार्क्स ने बायजाबाई से ९ जून सन् १८३६ ई० को इलाहाबाद के मुक़ाम पर भेंट की। उन्होंने इस भेंट का वर्णन अपनी डायरी में इस प्रकार लिखा है :—"बायजाबाई के साथ क्रूरता और अन्याय का व्यवहार किया गया है। जो एक समय ग्वा-लियर राज्य की अधिकारिणी थीं, उनको रहने के लिए

झोपड़ी भी नहीं है। वर्षाऋतु आरम्भ होगई हैं, परन्तु उन्हें ज़बरदस्ती उनकी इच्छा के विरुद्ध तम्बू में राजकीय क़ैदी के तौर पर रक्खा गया है।" *

बायजाबाई को इतना ही कष्ट नहीं पहुंचा वरन् काशी में सरकारी अधिकारियों ने उनका ३७ लाख रुपया ज़बरदस्ती ज़ब्त करलिया। और उस रुपये को लाकर सरकारी ख़ज़ाने में सुरक्षित रक्खा †। इस प्रकार सरकारी

---

* "Surely she is treated cruelly and unjustly–she who once reigned in Gwalior has now no roof to shelter her; the rains have set in; she is forced to live in tents, and is kept here against her will,–a state prisoner, in fact."

--*Wanderings of a Pilgrim, Vol: II Page 51.*

† बायजाबाई का ख़ज़ाना जो सरकार ने काशी में ज़ब्त कर लिया था उसका हाल मिसेस फ़ेनी पार्क्स ने इस प्रकार वर्णन किया है:-

"The Maharatta, who did the honours on the part of Her Highness, took me into one of the rooms, and showed me the two chests of cast-iron, which formerly contained about eighteen thousand gold mohurs. The Government took that money from the Bai by force, and put it into their treasury. Her Highness refused to give up the keys and also refused her sanction to the removal of the money from her house; the locks of iron chests were driven in, and the tops broken open; the rupees were in bags in the room; the total of the money removed amounted to thirty-seven lakhs."

--*Page 63*

कर्मचारियों ने उनके साथ बुरा बर्ताव किया। इस पर बायजाबाई ने समय समय पर गवर्नर जनरल साहब को अपने दुःख की सूचना दी। परन्तु उसका कुछ भी परिणाम न हुआ। एक समय बायजाबाई ने लाट साहब को यों लिखा :—"लाट साहब ! आप हमारे रक्षक हैं और हमें इस प्रकार से विपत्ति भोगना पड़ती है ; जिस के लिए मुझे बड़ा आश्चर्य है। और यह आप सरीखे उच्चाधिकारी के लिए बड़े लज्जा की बात है।" बायजाबाई के इस प्रकार स्पष्ट लिखने पर भी लाट साहब का हृदय नहीं पिघला। उन्होंने बाई को उत्तर दिया :—"मनुष्य के जीवनमें इस प्रकार की तबदीलियां होना एक सहज बात है। उससे किसी का छुटकारा नहीं। इसे ईश्वर इच्छा जान, शान्तिता के साथ, जो भाग्य में है उसे भोगना चाहिए।" *

* The Bai, in her correspondence with the Governor-General, always unhesitatingly asserted that he had confirmed her in the Regency, and authorised her to continue in the management of the state. "It is very extra-ordinary" she remarks, 'that while your Lordship is my protector, such injuries have been inflicted on me, a circumstance which can not but be considered a cause of shame to yourself.' The only answer she recieved was the remark that no sitation in life was exempt from vicissitudes, and an exhortation to bear her with resignation.''

--*Mill's History of India.*

यह सब बातें ग़दर से बहुत पहले हो चुकीं थीं। परन्तु बायजाबाई कुछ सामान्य स्त्री न थीं। उन्होंने सरकार के सब अपकारों को भुलाकर सरकार को बहुत सहायता पहुंचाई। सन् १८५७ ई० के ग़दर में बायजाबाई ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध होकर बाग़ियों का साथ देंगी, इस बाबत अङ्गरेज़ अधिकारियों को बड़ा भय था। इस कारण उन्होंने उनके ऊपर कड़ी नज़र रक्खी। इस बाबत मरे साहब ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है। *

बायजाबाई की बाबत यूरोपियन लोगों को शङ्का थी, परन्तु उनके बर्त्ताव से यह शङ्का निर्मूल सिद्ध हुई। यही नहीं वरन्, अङ्गरेज़ लोगों और स्वयं महाराज जयाजी राव को इनसे बहुत सहायता मिली।

बायजाबाई के बुद्धिमानी की कहानी उत्तर और दक्षिण सर्वत्र फैली हुई थी, इस कारण बाग़ियों ने उनको आगे करके काम करने की सलाह सोची। राव साहब पेशवा, तातिया टोपे वग़ैरह ने बायजाबाई को अपने अनुकूल करने का बहुत कुछ प्रयत्न किया। उन्होंने रामचन्द्र शास्त्री को अपना वकील बनाकर उनके पास भेजा। परन्तु बायजाबाई ने उनका साथ देना अस्वीकार किया। युवावस्था में स्वतन्त्र रूप से राज्य चलाने की उनकी बड़ी इच्छा थी और उसके लिए बहुत प्रयत्न भी किया। परन्तु इस

* देखो The Revolt in India Page 509.

समय अविचारी विद्रोहियों का साथ देकर साम्राज्य वैभव भोगने की उनको इच्छा न थी। उनको कार्याकार्य जानने की अच्छी शक्ति थी; इस कारण उन्होंने विद्रोहियों का साथ न दिया। विद्रोहियों ने जो कुछ पत्र व्यवहार उनके साथ किया था वह भी सब उन्होंने अङ्गरेज़ अधिकारियों के हवाले करदिया। विद्रोहियों ने ग्वालियर की प्रजा और अधिकारियों को अपने में मिलालेने के लिए बायजाबाई के नाम का बहुत कुछ उपयोग किया। बायजाबाई के ओर से हमारे पास पत्र भी आगया है ऐसी झूठी गप्पें भी उन्होंने बहुत उड़ाईं। * परन्तु इसमें सच्चाई का अंश कुछ भी न था। बायजाबाई ने इस समय महाराज

---

* About Amaen were posted, when the rebels crossed, 400 of Scindia's foot, 150 horses, and 4 guns. Scindia's Civil officer told the Rao Sahab. It is the order of the Maharaja and the Dewan that you retire.' 'And who,' replied the Rao saheb, 'are you? A ten rupee underling of Soobha, drunk with bhang! And the who are the Maharajah and Dinkar Rao? Christians! We are the Rao and Paishwa. Scindia is our slipper bearer. We gave him his Kingdom. His army has joined us. We have letters from the Baiza Bai. Scindia himself encourages us. Tantia Topeh has visited Gwalior and ascertained all. He having completed every thing I am for the Lashker. Would you fight with us? All is mine. Scindia's detachment did not attempt resistance."

--MEMORIALS of SERVICE in INDIA Page 333.

जयाजीराव सेन्धिया और उनके दीवान दिनकरराव को बहुत अच्छी सलाह दी । यूरोपियन लोगों और उनकी स्त्रियों की रक्षा का भार बायजाबाई ने अपने ऊपर लिया । सन् १८५७ ई० मई के महीने में, जब ग्वालियर की सेना ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया और अपना रुद्र स्वरूप प्रगट करके रेज़िडेन्सी के ऊपर धावा किया तब महाराज जयाजीराव ने रेज़िडेन्सी से यूरोपियन लोगों और उनकी स्त्रियों को लाकर अपने राज महलों में रक्खा । उस समय बायजाबाई ने उन सबको धीरज और दिलासा देकर उनका भय दूर किया । वे अपने निज भोजनालय से अच्छे अच्छे भोजन बनवाकर उन सबको खिलातीं । इस बात को मेजर मेकफर्सन साहब ने ख़ुद स्वीकार किया है । मेजर साहब ने जो अपनी रिपोर्ट आगरा को १० फ़र्वरी सन् १८५८ ई० को भेजी थी उसमें इस बाबत उन्होंने साफ़ साफ़ लिखा है। इस समय महारानी बायजाबाई ने जो मदद की उसकी जितनी प्रशंसा की जावे थोड़ी है ।

इसके बाद ग्वालियर में विद्रोहियों का बल बढ़ता गया । महाराज की फ़ौज उनके प्रतिकूल होकर विद्रोहियों में जा मिली । महाराज जयाजीराव और उनके दीवान दिनकरराव ने यह समझकर कि अब यहां यूरोपियन लोगों की जान बचना कठिन है उन सब को आगरे भेज दिया । मई के महीने में, महाराज और विद्रोहियों में

ख़ूब घनघोर युद्ध हुआ। विद्रोहियों की प्रबलता के कारण महाराज की पराजय हुई और ग्वालियर पर विद्रोहियों का अधिकार होगया। इस समय महाराज जयाजीराव सेन्धिया और दीवान दिनकरराव अङ्गरेज़ सरकार का आश्रय लेकर आगरे चले गए। ऐसे भयङ्कर समय में बायजाबाई ग्वालियर में ही थीं। विद्रोहियों ने ग्वालियर का सारा राज्य देने का उन्हें लालच दिखलाया। परन्तु बायजाबाई की दृढ़ता के आगे उनका कुछ भी बस न चला। बायजाबाई ने राव साहब पेशवाके सब पत्र मध्य-भारत के पोलिटिकल एजंट सर रावर्ट ह्यामिल्टन साहब के पास भेज दिए और स्वयं अपनी ख़ास फ़ौज के साथ अङ्गरेज़ी सेना में जाकर शामिल होगई। सेन्धिया घराने की सब राजस्त्रियां, ग्वालियर पर विद्रोहियों का अधि-कार होजाने पश्चात,नरवर चली गईं। उनके साथ महारानी बायजाबाई भी नरवर गईं। थी इसका पता नहीं चलता। तथापि जिस समय सर ह्यूरोज़ साहब ने ग्वालियर पर चढ़ाई की, उस समय ये उनके साथ थीं ऐसा पता लगता है। जिस समय राज घराने की सब स्त्रियां नरवर गईं उस समय बायजाबाई साहब की नातिन गजाराजा ने बड़ी शूरता और वीरता प्रगट की। बायजाबाई ने उन्हें घोड़ेपर बैठने और तलवार चलाने की अच्छी शिक्षा दी थी। जिस समय विद्रोहियों के साथ महाराज का युद्ध होरहा

था उस समय गजाराजा स्वयं घोड़ेपर सवार होकर और हाथ में तलवार लेकर, राज महलों से निकल युद्ध क्षेत्र में जा पहुंची। जहां पर विद्रोही लोग तोप और बन्दूक चलाकर, हजारों आदमियों को यमपुर पहुंचाते थे, वहां पर गजाराजा निर्भय होकर महाराज का पता लगा रही थीं! जब उन्हें मालूम हुआ कि महाराज सुखपूर्वक आगरे चले गए तब वे फिर वहां से राज महलों में वापस आईं! उनके धीरज और साहस को देखकर सब लोगों को बड़ा आश्चर्य मालूम हुआ। यह सब बायजाबाई की शिक्षा का ही फल था। बायजाबाई ने अपकार के बदले उपकार किया इसको सब लोग स्वीकार करते हैं सच हैः—

सुजनो न याति विकृतिं परहित निरतो विनाशकालेऽपि।
छेदेऽपि चन्दनतरुः सुरभयति मुखं कुठारस्य॥ १ ॥

दसवां अध्याय।

अन्त

विद्रोहियों का अन्त होकर भारत में सर्वत्र शान्ति स्थापित हुई। महारानी बायजाबाई महाराज जयाजीराव सेन्धिया के समीप, ग्वालियर में रह कर, अपना समय पूजा, पाठ, कथा पुराण में बिताने लगीं। उस समय उनकी अवस्था करीब ७५ वर्ष के थी। उनकी दिनों दिन कमज़ोरी बढ़ती गई और तेज घटता गया। परन्तु नित्य-कर्म, पूजा, पाठ कथा पुराण सब ठीक ठीक व्यवस्था-नुसार होता था। कमज़ोरी के कारण घोड़े पर बैठने का व्यसन बहुत कम हो गया। महाराज जयाजीराव सेन्धिया अपनी माता के तुल्य इन पर भक्ति और प्रेम प्रगट करते थे। उन्होंने उनकी सेवा सुश्रूषा और सन्मान में कभी किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ने दिया। महाराज जयाजीराव उनसे समय समय पर मिलते और उनसे प्रेम पूर्वक वार्तालाप करके, उनके मन का समाधान करते। बायजाबाई ने ग़दर के बाद तीन चार वर्ष तक इसी

तरह अपना समय बिताया। इसके बाद बायजाबाई की दशा पके पान की तरह बिलकुल क्षीण हो गई। सन् १८६३ ई० के मई महीने में उनकी शक्ति बहुत ही क्षीण होगई। ऐसा मालूम होने लगा कि अब उनका अन्त समय बिलकुल समीप है। इस कारण महाराज जयाजीराव को अधिक चिन्ता उत्पन्न हुई। उन्होंने उनकी आयुवृद्धि के लिए दैवी और मानवी उपाय करना आरम्भ किया। उनके आरोग्य होने के लिए उन्होंने बहुतसा धन ख़र्च करने का संकल्प किया। उस समय का हाल ८ जून सन् १८६३ ई० के "ज्ञान प्रकाश" पत्र में इस तरह छपा था :—

"श्रीमती बायजाबाई साहब सेन्धिया की तबीयत कितने ही दिनों से ख़राब है परन्तु अब तबीयत ज़्यादा बिगड़ गई है। वैद्य और हकीम, अनुष्ठान करने वाले ब्राह्मण, ग्रहों की पूजा करने वाले जोशी इत्यादि लोगों को हज़ारों रुपये की आमदनी होती है। श्रीमान् सेन्धिया सरकार और उनके मंत्री-मंडल बायजाबाई की सेवा सुश्रूषा में लगे रहने के कारण आठ दस रोज दरबार में नहीं आए। बायजाबाई की हालत बहुत ख़राब देखकर आलीजाह बहादुर जयाजीराव ने सब लोगों के सामने उनसे विनय की कि "आप के मन में जो आवे वैसा दान धर्म कीजिए। इस काम में जो धन लगे वह ख़ज़ाने से

मँगा लिया जावे ।" महाराज ने उसी समय एक लाख रुपया उनके पास लाकर हाज़िर करदिया । और यह भी कहा कि "उज्जैन परगना आपका है, इसे जिसे आपको देने की इच्छा हो वैसा किया जावे । हमें इसमें कुछ भी उज़र नहीं है" । यह वाक्य सुनकर बायजाबाई ने महाराज के मुख पर हाथ फेरकर कहा कि "जैसा तुम्हें अच्छा लगे वैसा करो"। श्रीमती चिमना राजा महाराज सेन्धिया की पत्नी के नाम सब अपनी निज की सम्पत्ति और उज्जैन का परगना देने की इच्छा बायजाबाई ने प्रगट की । इस बाबत अङ्गरेज़ी सरकार की मंजूरी लेने के लिए मध्यभारत के एजंट मिस्टर मीड साहब के पास वकील भेजा गया । आजी और नाती का यह वास्तविक प्रेम देखकर बड़ा आनन्द होता है ।"

बायजाबाई के बीमार होने का समाचार सारे भारत में फैल गया । अतएव उनका समाचार जानने के लिए, उनसे परिचित छोटे बड़े सब लोग ग्वालियर आने जाने लगे । इन्दौर के महाराज तुकोजीराव होलकर ने अपने भाई काशीराव दादा को बायजाबाई साहब का समाचार जानने के लिए ग्वालियर भेजा । इसी तरह ग्वालियर के रेजिडेंट और अन्य यूरोपियन लोग उनको देखने आने लगे । इस प्रकार बायजाबाई की बाबत लोगों ने अपनी अपनी सहानुभूति प्रगट की और उनके

निरोग्य होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की जाने लगी। मन्दिरों में पुजारी ईश्वर से प्रार्थना करते, ब्राह्मण लोग ग्रह शान्ति के लिए दान पुण्य कराते। अतएव लोगों की इच्छा, प्रार्थना अथवा औषधि के प्रभाव से बायजाबाई को कुछ कुछ आराम होने लगा। यह जानकर महाराज जयाजीराव और नागरिक लोगों को बड़ा आनन्द हुआ। इसी अवसर पर महाराज सेन्धिया को पुत्ररत्न प्राप्त हुआ। इस कारण यह आनन्द और भी दूना होगया। महाराज ने ब्रह्मावर्त जाकर दशहरा के दिन गङ्गा स्नान किया और ब्राह्मणों को भोजन करवाकर उन्हें सुवर्ण का दान दिया। इस प्रकार बायजाबाई के पुनः शीघ्र अच्छे हो जाने की सब लोगों को आशा हुई। परन्तु यह आशा थोड़े दिन रहकर निराशा से बदल गई। कविकुल दिवाकर कालिदास की उक्ति "मरणं प्रकृति शरीरिणाम्" के अनुसार सबको एकबार यह दिन देखना पड़ता है। २७ जून, सन् १८६३ ई० के दिन, ग्वालियर इतिहासका चमकता हुआ सूर्य अस्त होगया! यह दिन हिन्दू लोगों का अति पवित्र पुण्य दिन महा एकादशी (असाढ़ सुदी ११ शाके १७८५) का था। उस दिन बड़ी शान्ति के साथ बायजा-बाई ने अपने क्षणभंगुर शरीर को त्याग, परलोक गमन किया। वे अपने अस्थिर शरीर को त्याग स्थिर धर्मकीर्ति को सदैव के लिए अपने साथ लेगईं। उनके मरने पर प्रजा

ने बहुत दुःख मनाया और दुःख प्रदर्शनार्थ ग्वालियर में तीन रोज़ तक बाज़ार बन्द रहा।

महारानी बायजाबाई के मरने से महाराज जयाजी राव को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने बड़े ठाठबाठ के साथ उनका दाह संस्कार किया गया। महारानी बायजाबाई साहब की इच्छानुसार ख़ूब दान पुण्य किया गया। एकादशी के रोज़ एक लाख ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। इस प्रकार पुण्यात्मा स्त्रीका अन्त पुण्य के कारण अच्छे प्रकार हुआ। महाराज जयाजीराव सेन्धिया ने उनकी यादगारमें एक बहुत उम्दा छतरी बनवाई है। यह छतरी महाराज दौलतराव की छतरी के समीप ही है। इस छतरी में बायजाबाई की सङ्गमरमर की मूर्ति स्थापित की गई है। उसकी पूजा अर्चा के लिए वार्षिक कुछ धन नियत कर दिया गया है जो अबतक बराबर जारी है। इसके सिवाय पंढरपूर में द्वारकाधीश के मन्दिर में भी बायजाबाई की एक मूर्ति है। उसके रोज़ाना ख़र्च के लिए भी सेन्धिया सरकार ने स्वतंत्र प्रबन्ध करदिया है। वह भी अबतक बराबर जारी है।

महारानी बायजाबाई की मूर्ति सारे भारतवर्ष में फैली हुई है। पुराने वृद्ध लोगों के मुँह से उनका बहुत कुछ यश सुनने में आता है। परन्तु इतिहास ग्रंथों के अभाव से उनके सच्चे चरित्र का यश दन्त कथाओं के सहारे से कम होता जाता है। तथापि किन्हीं पाश्चिमात्य ग्रंथ-

कारों और रसिक विद्वानों ने उनकी बाबत जो अपनी राय स्थिर की है उस पर से उनकी सच्ची सच्ची योग्यता प्रगट होती है। ग्वालियर दरबार के रेज़िडेण्ट मेजर स्टुअर्ट साहब ने बायजाबाई को 'बुद्धिमती स्त्री' (a woman of sense) की पदवी प्रदान की थी। ग्वालियर दरबार के दूसरे रेज़िडेण्ट मेजर सदरलेंड साहब ने 'चतुर और स्वाभिमानी स्त्री' कहकर उनकी स्तुति की है। सेन्धिया दरबार के यूरोपियन डाक्टर मिस्टर होप साहब ने "उस समय की अप्रतिम स्त्री" लिखकर बायजाबाई को सम्बोधन किया है। इस प्रकार बायजाबाई की अन्य यूरोपियन लोगों ने भी बहुत कुछ तारीफ़ की है। किसी कवि ने ठीक कहा है:—

"सूरत से कीरत बड़ी, बिना पंख उड़जाय।
सूरत तो जाती रहै, कीरति कबहुं न जाय" ॥

इसके अनुसार महारानी बायजाबाई ने अपने कर्मों से अपनी कीर्ति को सदैव के लिए सारे भारत में प्रकाशित करदिया है ऐसा कहने में कुछ हानि नहीं है।

महारानी बायजाबाई साहब ने जिस ग्वालियर का शासन किया और जिसमें बहुत कुछ सुधार किए, उसका क्षेत्रफल २९,०४६ वर्गमील और आबादी ३०,३०,५४३ है। इस राज्य के अधिकारी आज कल श्रीमान् महाराज माधोराव सेन्धिया आलीजाह बहादुर हैं। यह महारानी

बायजाबाई के पन्ती हैं। इनके ऊपर ब्रिटिश सरकार की बड़ी कृपा है। सरकारने इन्हें जी. सी. यस. आय. की पदवी प्रदान की है। इनके पास ५५०४ सवार ११,०४० पैदल और ४८ तोपें हैं। श्रीमान् ने दक्षिण अफ्रिका और चीन की लड़ाई में धन और सेना दोनों तरह से ब्रिटिश सरकार को सहायता पहुंचाई थी। ईश्वर श्रीमान् को प्रजा के सुख कामना के लिए सदा तत्पर रहने में, पूर्णरूप से सहायता दें। बस हमारी यही प्रार्थना है।

॥ समाप्तम् ॥

श्रीराघवेन्द्र प्रेस